जनवरी - मार्च 2016 भाग XXVI संख्याः 4 ISSN 0971-1856

# भारतीय नारियल पत्रिका

## नीरा तकनीशियन
## नई ग्रीन कॉलर नौकरी

## कृषि उन्नति मेला

**भारतीय**

# नारियल

**पत्रिका**

भाग XXVI संख्या : 4

जनवरी - मार्च 2016 कोची-11



**परामर्श मंडल :**

**अध्यक्ष**

टी. के. जोस भाप्रसे

**सदस्य**

डॉ.एस.के.मल्होत्रा

ओम प्रकाश

**संपादक मंडल**

**सदस्य**

राजीव पी. जोर्ज

डॉ.ए.के.नंदी

डॉ.जी.आर.सिंह

डॉ.अल्का गुप्ता

**मुख्य संपादक**

राजीव पी. जोर्ज

**संपादक**

एस. बीना

**उप संपादक**

संगीता टी.एस.

**संपादन सहयोगी**

विन्दु रानी एन.

डॉ.सूर्या प्रत्यूष



**प्रकाशक :**

**नारियल विकास बोर्ड**

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार)

केरा भवन, कोची - 682 011, भारत

दू. भा. : 0484-2376265, 2377266, 2377267, 2376553.

फैक्स : 91-484-2377902 ग्राम्स : KERABOARD

ई-मेइल : kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र - व्यवहार अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर हों।


## नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई एवं असम के गुवाहटी में हैं। बोर्ड के छः राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओड़िशा के भुबनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकात्ता, बिहार के पटना, तेलंगाना के सिकंदराबाद, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेर्यमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आँध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पित्तापल्ली (ओड़िशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र) धली (तमिलनाडु) तथा साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) में हैं। केरल के आलुवा के पास वाषक्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

### बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

❑ नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। ❑ नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। ❑ नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना। ❑ केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।


**शुल्क**

| | |
|---|---|
| वार्षिक | 40 रु. |
| एक प्रति | 10 रु. |
| आजीवन (30 वर्ष) | 1000 रु. |

नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा सर्वश्री के.बी.पी.एस, काक्कनाड, कोची-30 में मुद्रित

# इस अंक में


अध्यक्ष की कलम से ..... 2

नारियल के क्षेत्र में कौशल विकास ..... 4
*आर.ज्ञानदेवन*

स्थानीय स्वशासित संस्थानों के ज़रिए नारियल क्षेत्र का सशक्तिकरण: संभावनाएं और परिदृश्य ..... 8
*तंपान सी. और जयशेखर एस*

नीरा-दिल्ली का आगामी स्वास्थ्यदायक पेय ..... 16
*जी.आर.सिंह और अरुण पॉल*

नारियल - तंदुरुस्ती के लिए बेहतरीन उपाय वेल्नेस सोल्यूशन्स का दावा ..... 19
*रमणी गोपालकृष्णन*

मीठे नारियल चंक्स नारियल गरी से नया स्वादिष्ठ पकवान ..... 23
*आनि ईप्पन, अनीटा जोय*

नारियल की भूमि से बोतल बंद डाब पानी सिप ओ नट ..... 25

नीरा उतारने में कुशल नारियल किसानों की विजयगाथा ..... 27

नीरा तकनीशियन के रूप में रोज़गार के अवसर- मासिक आय लगभग 50,000 रुपए..... 30

नारियल बागों में मासिक कार्य ..... 32

समाचार ..... 39

बाज़ार समीक्षा ..... 55

बाज़ार रिपोर्ट ..... 60

# कौशल विकास के अवसर नारियल उत्पादक कंपनियों की अगुआई में

प्रिय नारियल किसानों,

कृषि क्षेत्र की प्रगति अब उत्पादों के बेहतर संचयन, परिवहन और भंडारण, प्राथमिक प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन और विपणन से ही संभव है। इन क्षेत्रों में ज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास काफी हद तक हो चुका है। किंतु जब कौशल विकास की बात आती है तो कृषि के कई क्षेत्रों में बहुत बड़ा फासला नज़र आता है। अर्थव्यवस्था के किसी भी क्षेत्र में प्रगति तभी संभव हुई है जब समुचित ज्ञान, आधुनिक प्रौद्योगिकी और कुशल कर्मचारी एकसाथ कार्य करते हैं। कृषि क्षेत्र में भी यह लागू होता है। जब परंपरागत खेती विधियों में वैज्ञानिक जानकारी, समुचित प्रौद्योगिकियाँ और अनिवार्य कौशल एक साथ काम में लाने पर ही कृषि क्षेत्र में विकास की गति त्वरित की जा सकती है। नारियल के मूल्यवर्धन, प्रसंस्करण, स्थानीय स्वशासित संस्थाओं के साथ कृषि क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों का समवाय और नारियल क्षेत्र में युवाओं की भूमिका और उनकी उपयुक्तता के बारे में हम जानकारियाँ दे चुके हैं। अब हमें नारियल की खेती, प्राथमिक प्रसंस्करण, विपणन और मूल्य वर्धन के क्षेत्र में कौशल बढ़ाने की अहमियत पर ध्यान देना चाहिए। नारियल के क्षेत्र में किसान और अन्य लाभभोगी कुशल श्रमिकों की तलाश में हैं। आजकल प्रमुख नारियल उत्पादक देशों में ऐसी स्थिति पैदा हो गयी है कि शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और रोज़गार के क्षेत्र में और बेहतर अवसर मिलने के कारण कृषि क्षेत्र में कुशल श्रमिकों की संख्या धीरे धीरे कम होती जा रही है।

कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति और दुग्ध क्षेत्र में श्वेत क्रांति की सफलता इस संदर्भ में उल्लेखनीय है, नारियल के क्षेत्र में भी समय आ गया है कि हमें कौशल बढ़ाने और कुशल कर्मीदल विकसित करने के लिए समग्र रूप से कार्य करना चाहिए। शुरुआत में नारियल की उत्पादकता बढ़ाने के लिए बीजफलों के चयन हेतु मातृ ताड़ों की पहचान, अच्छी गुणवत्ता के बीजफलों का चयन, गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के उत्पादन हेतु नर्सरी का रखरखाव, वैज्ञानिक खेती तकनीक अपनाकर नारियल ताड़ों का प्रबंधन, एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन, पौधा संरक्षण उपाय आदि के लिए कुशल श्रमिकों को तैयार करना होगा। पहले श्रमिकों और किसानों के बीच पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान और कौशल का अंतरण होता रहता था। किंतु नई पीढ़ी भावों की घट-बढ़, अनिश्चित आमदनी या बेहतर रोज़गार के दूसरे अवसर मिलने के कारण नारियल खेती में कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रही है। उत्पादकता सुधारने के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन, सही आनुवंशिक स्रोतों और कौशल प्राप्त काबिल श्रमिकों की ज़रूरत है। प्रयोगशाला में जो अनुसंधान और नया विकास होता है, उसका नतीजा खेतों तक पहुँचने में काफी लंबा समय लगता है। अतः दोनों के बीच का फासला मिटाने के लिए प्रयोगशाला और खेतों के बीच समुचित कड़ी स्थापित करने की सख्त ज़रूरत है।

भारत को आधुनिक अर्थव्यवस्था बनाने की महत्वाकांक्षी योजना साकार करने के लिए भारत सरकार कौशल विकास पर अत्यंत ज़ोर दे रही है। एक तरफ यहाँ कुशल श्रमिकों की भारी कमी है तो दूसरी तरफ बेरोज़गारी और अल्प रोज़गारी की गंभीर समस्या है। भारत सरकार के विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रमों के ज़रिए इस फासले को मिटाने के लिए हमें इन दोनों क्षेत्रों की समस्याओं का समाधान निकालने हेतु सफलता लक्षित स्थिति पैदा करना अनिवार्य है। इस अवसर पर केरल के कण्णूर जिले में स्थित भारत की प्रथम नारियल उत्पादक कंपनी, तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी का उल्लेख करना संगत होगा। कंपनी ने 31 छोटे एवं सीमांत श्रेणी के नारियल किसानों को अपने नारियल पेड़ों से नीरा उतारने का प्रशिक्षण दिलाया। अन्यथा यह काम मात्र प्रशिक्षित नीरा तकनीशियन ही करते आ रहे थे। भले ही केरल में नीरा उत्पादन के लिए कानूनी अनुमति दो साल पहले प्राप्त हुई थी, तो भी नीरा तकनीशियनों की कमी के कारण यह कार्य आगे नहीं बढ़ रहा था। स्थानीय रूप से बेरोज़गार नौजवानों को इकट्ठा करके नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण देना पूरी तरह सफल नहीं हुआ था। अतः कुछ नारियल उत्पादक कंपनियों ने ग्रामीण नौजवानों को नीरा तकनीशियन की नौकरी की ओर आकृष्ट कराने के लिए पूर्वोत्तर राज्यों और बिहार, झारखंड एवं छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों की तरफ ध्यान देना शुरू किया। किंतु तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी के कुछ युवा किसानों ने यह चुनौती स्वीकार करते हुए स्वेच्छा से प्रशिक्षण के लिए आगे आए। उन्होंने नीरा तकनीशियन के लिए निर्धारित 2 महीने का प्रशिक्षण हासिल किया। सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा करने के बाद वे अपने नारियल पेड़ों से नीरा उतारने लगे। ये 31 किसान 150 नारियल पेड़ों से प्रति हफ्ते 3045 लीटर नीरा निकालकर 7,91,700 रुपए की मासिक आय प्राप्त करने में कामयाब हुए। यह नारियल विकास बोर्ड के नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण के कारण संभव हुआ था जो बेरोज़गार और अल्प रोज़गार युवकों को प्रशिक्षित कराने के लिए शुरू किया गया था। जब इन किसानों ने पाया कि नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण के लिए बेरोज़गार युवकों को मिलना मुश्किल होने लगा है, तब ये किसान खुद प्रशिक्षण के लिए आगे आए। मुझे उम्मीद है कि तेजस्विनी कंपनी के 31 किसानों ने जो पहल की है वे अन्य नारियल उत्पादक कंपनियों के लिए भी जीवंत उदाहरण साबित होंगे।

हम तमिलनाडु, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में जल्द से जल्द नीरा उतारने के लिए राज्य सरकारों की अनुमति प्राप्त करने की प्रतीक्षा में हैं। पर्याप्त संख्या में अपेक्षित कौशल वाले नीरा तकनीशियनों को विकसित करने के लिए बहुत पहले ही योजना बनाने की ज़रूरत है। सफल नीरा तकनीशियन के रूप में बिना तजुर्बे वाले युवकों को प्रशिक्षित करने के लिए कम से कम आठ हफ्ते के प्रशिक्षण की ज़रूरत है। नारियल विकास बोर्ड ने जो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम विकसित किया है इसका प्रयोग गत तीन सालों से करता आ रहा है।

तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी के अध्यक्ष ने इच्छा ज़ाहिर की है कि अपने नारियल पेड़ों से नीरा निकालने में समर्थ नारियल किसानों की संख्या निकट भविष्य में ही 31 से 300 और फिर 500 करने में वे कामयाब होंगे। उम्मीद है कि यह देश के चार प्रमुख नारियल उत्पादक राज्यों के शेष 55 नारियल उत्पादक कंपनियों को प्रेरणा स्रोत होगा।

नीरा उतारना ही एकमात्र ऐसा कार्य नहीं है जिसके लिए कौशल विकास कार्यक्रम की ज़रूरत है और न ही नारियल क्षेत्र में उपलब्ध तकनीकी नौकरी मात्र नीरा तकनीशियन की है। नारियल की खेती, पौधा संरक्षण गतिविधियाँ, नारियल की तुड़ाई और संकरण सहित नर्सरी प्रबंधन के लिए तकनीकी विशेषज्ञता प्राप्त और प्रशिक्षित कामगारों की ज़रूरत है। नारियल का प्राथमिक प्रसंस्करण करके मूल्यवर्धित नारियल उत्पाद बनाने के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण चलाने की ज़रूरत है। असम सरकार ने राज्य में नारियल प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र स्थापित करने की जो पहल हाल में शुरू की है इस क्षेत्र में उठाया गया अभिनंदनीय और सकारात्मक कदम है। राज्य सरकार नारियल विकास बोर्ड के साथ राज्य एवं केन्द्रीय प्रायोजित विभिन्न कार्यक्रमों का लाभ उठाकर उपलब्ध संसाधनों का समवाय करने की कोशिश कर रही है और असम में नारियल का उत्पादन, उत्पादकता और मूल्यवर्धन संबंधी गतिविधियाँ त्वरित करने का प्रयास कर रही है। नारियल उत्पादक राज्यों में स्थानीय स्वशासित संस्थाओं के कार्यक्रमों के साथ समवाय स्थापित करने की भी आवश्यकता है। देश के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्वशासित संस्थाओं के दायित्वों में कृषि को प्राथमिता दी गई है। हमें नारियल खेती के क्षेत्र में कौशल विकास हेतु समुचित परियोजनाएं चलाने के लिए स्थानीय स्वशासित संस्थाओं को आवश्यक जानकारियाँ और प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देने के लिए उचित कदम उठाना होगा। समानतया देशभर के नौजवानों को अपना ज्ञान बढ़ाकर और कौशल सुधारकर नारियल क्षेत्र का अभिन्न अंग बनने के लिए भी आकर्षित करना होगा। ऐसे कई राज्य हैं जिनके बजट में युवाओं और महिलाओं की प्रगति के लिए खास कार्यक्रम बनाए गए हैं। उदाहरण के लिए केरल के सभी स्थानीय स्वशासित संस्थाएं महिलाओं के विकास हेतु अपने संसाधनों के 10 प्रतिशत का आबंटन अनिवार्यतः करती आ रही हैं।

भारत सरकार ने ग्रामीण क्षेत्र में कौशल विकास हेतु दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना (डीडीयू-जीकेवाई)कार्यान्वित की है जो बहुत अच्छा मोडल है। कुशल भारत का सपना साकार करने के लिए काफी अहमियत और परम अग्रता दी गई है। जहाँ एक ओर बेरोज़गारी की समस्या है तो दूसरी ओर रोज़गार लायक न मिलने की समस्या है। अर्थव्यवस्था के विविध क्षेत्रों में यह महसूस किया गया है कि बेरोज़गारी से भी गंभीर समस्या रोज़गार लायक का अभाव है। इस समस्या का समाधान निकालने के लिए एक उपाय कृषि क्षेत्र में कौशल विकास है। अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकास प्रशिक्षण चलाने का दायित्व राष्ट्रीय कौशल विकास निगम पर निहित है। कृषि क्षेत्र में कौशल विकास की अहमियत पहचानकर, इस क्षेत्र के लिए खासतौर पर विनिर्दिष्ट भारतीय कृषि कुशल परिषद(एएससीआई) कृषि क्षेत्र में कौशल विकास पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है। नारियल विकास बोर्ड ने शुरुआत में ही एएससीआई को तीन कौशल विकास कार्यक्रमों का प्रस्ताव दिया है: नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण, फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री प्रशिक्षण और नारियल खेती एवं नर्सरी प्रबंधन पर प्रशिक्षण। इन कार्यक्रमों के लिए अनुमोदन प्राप्त हुआ है और राष्ट्रीय व्यावसायिक मानदंड(एनओएस) के अनुमोदन प्राप्त कार्यक्रमों में इन्हें भी शामिल किया गया है। देशभर के काबिल एजेंसियों के ज़रिए इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के कार्यान्वयन हेतु वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए ये अब पात्र बन गए हैं। केरल की एक नोडल एजेंसी ने डीडीयू-जीकेवाई के कार्यान्वयन की पहल की है। राजगिरी कालेज ऑफ सोशियल साइंसस, कोची ने कुटुंबश्री, राज्य गरीबी उन्मूलन मिशन और नाबिबो के साथ 27 नीरा तकनीशियनों को प्रशिक्षित करने के लिए डीडीयू-जीकेवाई के अधीन प्रशिक्षण शुरू किया है। अन्य नारियल उत्पादक कंपनियाँ इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के परिणाम की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही हैं। यदि यह सफल और समुचित पाया जाता है तो कार्यक्रम दोहराया जाएगा। राजगिरी कालेज ऑफ सोशियल साइंसस ने डीडीयू-जीकेवाई के अधीन कम से कम 500 नीरा तकनीशियनों को प्रशिक्षित करने का अनुरोध किया है। हमारे देश में राष्ट्रीय कौशल विकास निगम और भारतीय कृषि कौशल परिषद के अधीन ऐसे कई अवसर उपलब्ध हैं जो प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना(पीएमकेवीवाई) के वित्तीय समर्थन से चलाए जाते हैं।

हम जानते हैं कि कौशल विकास से कृषि क्षेत्र के कामगारों को मात्र बेहतरीन आय ही नहीं सुनिश्चित होती है बल्कि उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता है। सामाजिक स्थिति में सुधार ग्रामीण युवाओं को खेती की तरफ आकृष्ट करने में प्रेरणादायक घटक है। इसलिए कुशल कामगारों को अच्छा आय और बेहतर सामाजिक स्थिति सुनिश्चित करते हुए ग्रामीण क्षेत्र में खासतौर पर ग्रामीण युवाओं की सोच में समुचित परिवर्तन लाने के लिए इस अवसर का लाभ उठाने के बारे में हमें सोचना चाहिए।

छोटे और सीमांत श्रेणी के किसान प्रायः श्रमिकों के साथ बाग में कार्य करते देखा जाता है। इसलिए इन किसानों को हम कौशल विकास के दायरे से बाहर नहीं रख सकते हैं। हमें प्रमुख नारियल उत्पादक राज्यों के उन शैक्षणिक संस्थाओं के साथ नेटवर्किंग करने की भी ज़रूरत है जो नारियल के क्षेत्र में विविध कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने में सक्षम है। कृषि क्षेत्र में उचित कौशल विकास के ज़रिए अपने ही जन्म स्थान में रोज़गार के अवसर सृजित करने से ग्रामीण लोगों का शहरों में जा बसना रोका जा सकता है और ग्रामीण समृद्धि और खुशहाली भी संभव हो सकती है। यह नारियल उत्पादक कंपनियों के लिए देश के निर्माण में योगदान देने का बेहतरीन मौका है। मेरी आशा है कि वे अपने ज्ञान, काबिलियत और नारियल क्षेत्र में कौशल विकास कार्यक्रम के ज़रिए सफलता की नई कहानियाँ रचेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

टी के जोस

**टी.के.जोस**
**अध्यक्ष**

# नारियल के क्षेत्र में कौशल विकास

**आर.ज्ञानदेवन,**

*उप निदेशक, नाविबो, कोची-11*

हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों को सामना करनेवाली प्रमुख समस्या है खास कामों के लिए अपेक्षित कुशल कामगारों की कमी। श्रम ब्यूरो की रिपोर्ट-2014 के अनुसार भारत के मौजूदा कार्यबल का मात्र 2 प्रतिशत ही यथाविधि कौशल प्राप्त कामगार हैं जबकि जापान में यह 80 प्रतिशत और दक्षिण कोरिया में 92 प्रतिशत है। कालेजों और विश्वविद्यालयों से निकलने वाले छात्र-छात्राओं की प्रतिभा और रोज़गार कौशल के मद्देनज़र इनकी उपयुक्तता के बीच बहुत बड़ा फासला है। यहाँ पर समुचित और पर्याप्त कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने की सख्त ज़रूरत है ताकि हमारे देश के नौजवानों के बृहत् कार्यबल को कौशल प्राप्त श्रम शक्ति स्रोत के रूप में परिवर्तित किया जा सके। भारत सरकार इस क्षेत्र पर ज्यादा ज़ोर दे रही है और देशभर में विविध कौशल विकास कार्यक्रम आयोजित कर रही है। भारत सरकार के कुशल भारत मिशन कार्यक्रम का उद्देश्य हमारे देश में जिन क्षेत्रों में नौकरी के अवसर उपलब्ध हैं उन्हीं क्षेत्रों में कौशल विकासोन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाकर कुशल कार्य बल विकसित करके इस समस्या का हल निकालना है। इस मिशन का लक्ष्य विविध राज्यों में कौशल विकासोन्मुख कार्यक्रम चलाकर वर्ष 2022 तक 40 करोड़ कुशल कार्यबल सृजित करना है। भारत सरकार द्वारा इस दिशा में उठाए गए मुख्य कदम निम्न प्रकार हैं:

### *राष्ट्रीय कौशल विकास निगम*

राष्ट्रीय कौशल विकास निगम भारत में सार्वजनिक निजी भागीदारी की अपनी तरह की एक अनूठी संस्था है। एनएसडीसी मापनीय, लाभोन्मुख व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए धन की व्यवस्था करके कौशल विकास को बढ़ावा देता है। इसका उद्देश्य गुणवत्ता आश्वासन, सूचना प्रणालियाँ जैसी समर्थन प्रणालियों को सक्षम बनाना और ट्रेनर अकादमियों को सीधे या साझेदारी से प्रशिक्षण देना है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करने वाले उद्यमों, कंपनियों और संगठनों को वित्त पोषित करते हुए कौशल विकास में उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर रहा है।

### *प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई)*

प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के अधीन कार्यरत राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के ज़रिए कार्यान्वित परिणाम आधारित कौशल प्रशिक्षण योजना है जो भारत सरकार का सर्वोत्कृष्ट कार्यक्रम है। इस योजना का लक्ष्य स्वीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने पर नकद पुरस्कार प्रदान करते हुए कौशल विकास के लिए युवाओं को प्रोत्साहित करना है। यह योजना पब्लिक प्राइवेट और पब्लिक पब्लिक भागीदारी से कार्यान्वित की जाती है। यह एक कौशल प्रमाणन तथा पुरस्कार योजना है जो परिणाम आधारित कौशल प्रशिक्षण से रोज़गार प्राप्त करके अपनी जीविका चलाने में अधिकाधिक भारतीय युवकों को सक्षम और संगठित बनाता है। इस योजना के अंतर्गत, संबद्ध प्रशिक्षण दाताओं द्वारा चलाए जा रहे कौशल पाठ्यक्रम में सफलतापूर्वक प्रशिक्षित, मूल्यांकित और प्रमाणित प्रशिक्षणार्थियों को डायरेक्ट बैंक ट्रांस्फर के ज़रिए वित्तीय पुरस्कार प्रदान किया जाता है। प्रस्तुत योजना राष्ट्रीय कौशल विकास निगम द्वारा कार्यान्वित की जाएगी।

### *भारतीय कृषि कौशल परिषद् (एएससीआई)*

केंद्रीय कंपनी कार्य मंत्रालय के कंपनी अधिनियम के अधीन धारा 25 कंपनी के रूप में जनवरी 2013 में भारतीय कृषि कौशल परिषद् की स्थापना हुई थी। एएससीआई का प्रयास कृषि उद्योग क्षेत्र के क्षमता संवर्धन के लिए कार्य करना और श्रमिकों एवं खेतों के बीच का फासला मिटाना है। संगठित या असंगठित खेती एवं संबद्ध क्षेत्र के साथ प्रत्यक्षत: या परोक्षत: जुड़े किसानों, कृषि श्रमिकों का कौशल विकास/उन्नयन एएससीआई की संकल्पना है।

भारतीय कृषि कुशल परिषद् स्वीकृत अग्रि-जोब रॉल पाठ्यक्रम के प्रमाणन कार्य से जुड़ा है। एनओएस के अनुरूप बनाया गया पाठ्यक्रम आधारित प्रशिक्षण पूरा करने

के बाद एएससीआई प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान करता है।

एएससीआई द्वारा प्रदत्त प्रमाणपत्र अद्वितीय, विश्वासयुक्त और इलेक्ट्रॉनिक रूप से सत्यापन योग्य है। उद्योग क्षेत्र में यह काफी मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र है क्योंकि यह प्रशिक्षण एएससीआई द्वारा औद्योगिक समर्थन से विकसित राष्ट्रीय व्यावसायिक मानदंड़ों (एन ओ एस) पर आधारित है। कार्य स्थल पर अपना कार्य करते समय व्यक्ति का निष्पादन स्तर क्या होना चाहिए यह एनओएस निर्दिष्ट करता है। इसके साथ साथ उसी स्तर पर अपना कार्यनिष्पादन लगातार बनाए रखने के लिए जो जानकारी और समझ प्रशिक्षणार्थी को होनी चाहिए इसका भी निर्धारण एनओएस करता है। एनओएस अनिवार्यतः बेहतरीन कार्यप्रणाली का मानदंड है। एनओएस अपनाने की शुरुआत भी प्रयोग क्षमता के राष्ट्रीय मानदंड, कौशल निरूपण और प्रशिक्षणार्थियों, नियोक्ताओं और प्रशिक्षणदाताओं के बीच आम "शब्दावली" स्वीकार करने की उद्योग क्षेत्र की वर्तमान आकांक्षा प्रतिफलित करती है।

## नारियल क्षेत्र में कौशल विकास और क्षमता संवर्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम

### *फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री (एफओसीटी)*

नारियल की तुड़ाई एवं सामयिक पौधा संरक्षण कार्यों के लिए परंपरागत नारियल ताड़ारोहियों की अनुपलब्धता

भारत के प्रमुख नारियल उत्पादक राज्यों में नारियल किसानों की मुख्य समस्या है। इस समस्या का हल निकालने के लक्ष्य से बोर्ड ने वर्ष 2011 में एक बृहत् कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया था। इसका लक्ष्य नारियल समुदाय को लाभान्वित करने के लिए बेरोज़गार युवकों को नारियल ताड़ारोहण और पौधा संरक्षण गतिविधियों में विशिष्ट कौशल विकसित करने और हौसला बनाने हेतु प्रशिक्षित करना था। यह बोर्ड की एक नूतन पहल थी जिससे नारियल ताड़ारोहण को अपना पेशा बनाने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित किया गया। गत कुछ वर्षों में कई व्यक्तियों, अनुसंधान संस्थाओं, विश्वविद्यालयों और गैर सरकारी संगठनों ने नारियल ताड़ारोहण यंत्रों की एक लंबी श्रेणी विकसित की है जो सुरक्षित एवं चढ़ने में आसान होने का दावा करती हैं। प्रशिक्षण का लक्ष्य मशीन के सहारे नारियल पेड़ पर चढ़ने का प्रशिक्षण देना मात्र नहीं था बल्कि कीटों और रोगों को पहचानने एवं उनका निवारणोपाय, पौधा संरक्षण उपाय आदि समझने में उनका कौशल विकसित करने के लिए भी था। सफल प्रशिक्षण पूरा करने के बाद ये प्रशिक्षणार्थी फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री के नाम से जाने जाते हैं।

प्रशिक्षण के तकनीकी सत्र में विविध नारियल किस्मों की पहचान से लेकर, खेती प्रक्रियाएं, पौधा संरक्षण उपाय, तुड़ाई प्रक्रियाएं और नारियल के फसलोत्तर प्रबंधन तक के सभी पहलुओं पर कक्षाएं चलाई जाती हैं। यह 6 दिवसीय रिहायशी कार्यक्रम है। एफओसीटी प्रशिक्षण कार्यक्रम के चार चरण सफलतापूर्वक पूरा हो चुके हैं जिससे बोर्ड पौधा संरक्षण और फसल तुड़ाई में विशेषज्ञता प्राप्त कुशल सेना विकसित करने में कामयाब हुआ है। बोर्ड ने देश भर में 50,000 एफओसीटियों को प्रशिक्षित किया है।

### *नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण*

नीरा निकालने के लिए तकनीकी रूप से कुशल व्यक्ति की ज़रूरत है जो पेड़ पर चढ़ने, सही ताकत और आवृत्ति

से पुष्पक्रमों को पीटने, उसकी नोक काटने और कीटाणुनाशकों का प्रयोग करने, पुष्पक्रम को बाँधने जैसे विभिन्न गतिविधियाँ स्वच्छ और साफ तरीके से चलाने में समर्थ हो। नीरा निकालने से पैक करने तक के विभिन्न चरणों में स्वच्छता बनाए रखना और जीवाणुहीन तरीका अपनाना अत्यंत अनिवार्य है। ये सारे घटक नीरा उतारने के लिए नीरा तकनीशियनों की एक कुशल सेना विकसित करने की मांग करती हैं।

केरल के 14 जिलों में नाविबो के अधीन पंजीकृत 440 नारियल उत्पादक फेडरेशनों को नीरा उत्पादन की अनुमति दी गई है। नीरा उतारने में प्रशिक्षित नीरा तकनीशियनों की कमी इस क्षेत्र की एक प्रमुख समस्या है। इस क्षेत्र में ग्रीन कॉलर नौकरी के रूप में नीरा तकनीशियनों का प्रशिक्षण प्राप्त कुशल 2,20,000 कर्मियों की सख्त ज़रूरत है। नारियल विकास बोर्ड ने कुशल नीरा तकनीशियनों का पेशेवर दल विकसित करने की पहल शुरू की है।

इसके दो चरण होते हैं, पहले चरण में परंपरागत ताड़ी टैपरों को नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था में आयोजित दो हफ्ते के प्रशिक्षण के ज़रिए नीरा मास्टर तकनीशियन बनाने पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। ये मास्टर तकनीशियन अपने अपने जिलों में नारियल उत्पादक फेडरेशन की निगरानी में दूसरों को प्रशिक्षण दे सकते हैं।

नीरा उतारने के नियमित प्रशिक्षण के साथ साथ योगा के सत्र, प्रतियोगिताएं, शैक्षणिक खेल आदि भी इसमें शामिल किए गए जो उनकी मानसिक और शारीरिक क्षमता बढ़ाने में सहायक थे। इस प्रशिक्षण से व्यक्ति को जीने का असली कौशल हासिल होता है जो अपना जीवन स्तर सुधारने में सहायक होता है। सातवें और आठवें हफ्ते के प्रशिक्षण के दौरान नीरा तकनीशियन ऑन जॉब (काम करने का)प्रशिक्षण के लिए भी जाता है और उनके द्वारा टैप की गई नीरा की मात्रा और गुणवत्ता के अनुसार उन्हें मेहनताना भी मिलता है। यह एक नूतन ग्रीन कॉलर नौकरी है जो भारत के कृषि जीडीपी में अपना योगदान देने में समर्थ है। इसके अतिरिक्त यह ग्रामीण बेरोज़गार युवकों को अच्छा खासा आय भी प्रदान करता है। एक बैच के नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण के लिए कुल 2,06,600 रुपए का खर्च होता है। 8 हफ्ते का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद नवे हफ्ते से उन्हें अच्छी कमाई का अवसर प्राप्त होता है। केरल में फिलहाल बेरोज़गार और कम पढ़े-लिखे युवकों को नौकरी का इससे बढ़िया अवसर दूसरा कोई नहीं है। एक नीरा तकनीशियन प्रति महीना औसतन 25,000 रुपए या इससे भी अधिक कमा सकता है। असम, ओडिशा और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों के कई नीरा तकनीशियन केरल में इस क्षेत्र में नौकरी करके प्रति महीने 50,000 रुपए से भी अधिक कमा रहे हैं। प्रशिक्षण प्राप्त नीरा तकनीशियन से प्रति दिन 15 नारियल पेड़ टैप करने की उम्मीद है। इस प्रकार राज्य में रोज़गार के बृहत् अवसर खोलने की क्षमता अकेले इस ग्रीन कॉलर नौकरी में निहित है जो ग्रामीण क्षेत्र के बेरोज़गार युवकों के मन में उम्मीद की नई किरणें जगा रही है।

### *संकरण तकनीक और नारियल नर्सरी प्रबंधन में कौशल विकास कार्यक्रम*

नारियल के क्षेत्र में प्रशिक्षित श्रम शक्ति का अभाव महसूस होने वाला दूसरा क्षेत्र नारियल बीजपौध उत्पादन और संकरण तकनीक है। मातृताड़ों का चयन, बीजफलों का प्रापण, नारियल नर्सरी तैयार करना, पोलीबैग नर्सरी पालना, नर्सरी के लिए गुणवत्तापूर्ण बीजपौधों का चयन और प्रमाणन आदि के लिए कुशल श्रम शक्ति अत्यंत अनिवार्य है। संकर बीजपौधों के लिए किसानों के बीच बहुत बड़ी मांग है जिसके लिए प्रशिक्षित लोगों की सख्त ज़रूरत है। परागण के लिए मातृ ताड़ों का चयन, पराग का संचयन, प्रसंस्करण, विपुंसीकरण और बैगिंग हेतु पराग का प्रयोग आदि के लिए खास कौशल अपेक्षित है। इस क्षेत्र में कुशल श्रमिकों की मांग के मद्देनज़र नारियल विकास

बोर्ड केरल के नेर्यमंगलम, कर्नाटक के मंड्या और ओड़िशा के पित्तापल्ली में स्थित प्रबीउ फार्मों में एक महीने का संकरण कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। जीवविज्ञान मुख्य विषय के रूप में लेकर +2 योग्यता प्राप्त या जीव विज्ञान या कृषि मुख्य विषय के रूप में लेकर वीएचएसएससी योग्यता प्राप्त 18 से 40 साल के बीच आयु वाले कोई भी व्यक्ति कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

### *नारियल खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम*

नारियल किस्म की आनुवंशिक क्षमता के अनुरूप उपज प्राप्त करने के लिए मिट्टी का प्रकार, वर्षा पैटर्न और जलवायु परिस्थितियों के अनुसार खास कृषि जलवायु क्षेत्रों के लिए अनुशंसित कृषि रीतियाँ अपनाकर नारियल की खेती करना और हताश होकर बिक्री करने के बजाय लाभकर बाज़ार दरों पर अपने उत्पादों की बिक्री करना किसानों का काम है।

नारियल किसानों को स्वतंत्र रूप से कार्य करना चाहिए और उनमें अपने कार्यक्षेत्र के अनुरूप उपयुक्त निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए और गणित के मूल सिद्धांतों की जानकारी एवं कौशल होना चाहिए। व्यक्ति को नतीजा आधारित नज़रिया रखना चाहिए और अपने काम एवं अध्ययन के प्रति ज़िम्मेदार होना चाहिए। जलवायु परिवर्तन, बाज़ार की गिरावट जैसे खतरों को संभालने का कौशल प्रदर्शित करने में समर्थ होना चाहिए और निर्णय लेने एवं समस्याओं के लिए झटपट हल निकालने हेतु विविध साधनों का उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए।

नारियल किसान नारियल खेती के विविध पहलुओं के अच्छे जानकार होने चाहिए। नारियल किसानों के लिए तैयार किए गए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, जिसका अनुमोदन एएससीआई ने किया है, में नारियल खेती के मुख्य पहलुएं जैसे उचित रोपण सामग्रियों की पहचान, रोपण सामग्रियों का प्रापण और उपचार, भूमि की तैयारी, उर्वरकों और सूक्ष्मपोषकतत्वों के अनुप्रयोग हेतु प्रक्रियाएं, नर्सरी प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन, कीटों और रोगों की पहचान संबंधी तकनीकी जानकारी, निवारक और उपचारात्मक विधि, सिंचाई प्रबंधन, मिश्रित/अंतरा/बहु फसलन प्रणाली और अन्य खेतीगत गतिविधियाँ, नारियल की तुड़ाई और भंडारण एवं फसलोत्तर प्रबंधन गतिविधियाँ शामिल किए गए हैं।

भविष्य में नारियल की सफलतापूर्वक खेती के लिए उपर्युक्त क्षेत्रों में कौशल विकास कार्यक्रम चलाना अनिवार्य है। निजी क्षेत्र में नारियल किसानों की मांगों को खासतौर पर संकर किस्मों की मांगों को पूरा करने के लिए गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन और वितरण करने के लिए कुशल श्रमिकों की ज़रूरत है। यही नहीं, लाभदायी नारियल खेती के लिए कुशल नीरा तकनीशियनों और फसल तुड़ाई एवं पौधा संरक्षण गतिविधियों के लिए कुशल नारियल ताड़ारोहकों की सख्त ज़रूरत है। अतः नारियल क्षेत्र में कौशल विकास कार्यक्रम चलाना अत्यंत महत्वपूर्ण है और नाविबो एवं प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना के अधीन कार्यरत अन्य एजेंसियों द्वारा प्रदान किए जा रहे लाभों का समवाय करके अधिकाधिक कार्यक्रम आयोजित करना आवश्यक है।

नारियल के क्षेत्र में कुशल कार्यदल विकसित करने के लिए नारियल विकास बोर्ड के कौशल विकास पाठ्यक्रमों के प्रमात्रीकरण पैक और राष्ट्रीय व्यावसायिक मानदंड को भारतीय कृषि कौशल परिषद का अनुमोदन प्राप्त हुआ है।

# स्थानीय स्वशासित संस्थानों के ज़रिए नारियल क्षेत्र का सशक्तिकरण: संभावनाएं और परिदृश्य

**तंपान सी. और जयशेखर एस.**

*आईसीएआर-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्था, कासरगोड़-671 124, केरल*

ग्रामीण रोज़गार और आय सृजन की दृष्टि से देश की अर्थव्यवस्था में नारियल की काफी अहमियत है। हमारे देश में परंपरागत नारियल खेती हमारे जीवन, संस्कृति और पहचान का अभिन्न अंग है। कई राज्यों में व्यापक तौर पर नारियल की खेती हो रही है और वहाँ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नारियल पेड़ का प्रभाव काफी गहरा है और देश की एक करोड़ से भी अधिक आबादी के लिए यह जीविकोपार्जन का ज़रिया भी है। भारत में, इस फसल पर केन्द्रित प्रसंस्करण और संबंधित गतिविधियों से तीस लाख से भी अधिक लोगों के लिए रोज़गार के अवसर प्राप्त हो जाते हैं। नारियल की गरी, छिलके, खोपड़ी, लकड़ी, पानी और पत्तों से उच्च मूल्यवाले विविधीकृत नारियल उत्पादों का उत्पादन और विपणन ग्रामीण जनता के लिए आय और रोज़गार का संभाव्य स्रोत है। साथ-साथ, देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में नारियल का वार्षिक योगदान 9200 करोड़ रुपए हैं। नारियल और कयर उत्पादों के निर्यात के ज़रिए नारियल क्षेत्र से 2138.5 करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। भारत के लगभग 90 प्रतिशत से

अधिक नारियल किसान छोटे खेतों के मालिक हैं और इन्हें संसाधनों के निर्धन माने जाते हैं।

हाल में, नारियल किसान मूल्य और बाज़ार संबंधी अड़चनों के अलावा कुशल श्रमिकों की कमी, उच्च वेतन दर, नारियल की कम उत्पादकता, नारियल बागों में कुदरती संसाधनों की कमी और मृदा संबंधी समस्याएं, अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएं, कीटों एवं रोगों तथा प्राकृतिक आपदाओं के कारण फसल में कमी जैसी कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं। नारियल की उत्पादकता एवं खेतीगत आमदनी बढ़ाने के लिए कई प्रौद्योगिकियाँ विकसित की गई हैं। उच्च पैदावार देने वाली किस्मों और संकरों का विकास, जल प्रबंधन और सिंचाई तकनीकें, एकीकृत पोषण प्रबंधन, नारियल आधारित फसलन/खेती प्रणाली, एकीकृत कीट/रोग प्रबंधन प्रणालियाँ और उत्पाद विविधीकरण के लिए मूल्यवर्धन की प्रौद्योगिकियाँ आदि इनमें शामिल हैं। तथापि, विभिन्न कारणवश ये प्रौद्योगिकियाँ अपेक्षतया बहुत कम अपनायी जाती हैं। अतः यह अत्यंत अनिवार्य है कि देश में नारियल किसानों के हितों का संरक्षण करने के लिए अनुकूल गरीब समर्थक नीति बनायी जाए और नारियल क्षेत्र की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए समुचित विकास और विस्तार गतिविधियाँ चलाई जाएं।

नारियल क्षेत्र की प्रगति के लिए विकासात्मक और विस्तार गतिविधियाँ कार्यान्वित करने के लिए कई एजेंसियाँ कार्यरत हैं। नारियल क्षेत्र की प्रगति के लिए योजनाओं का कार्यान्वयन मुख्यत: कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन कार्यरत नारियल विकास बोर्ड, राज्य कृषि एवं बागवानी विभाग, आत्मा (ATMA) और स्थानीय स्वशासित संस्थान कर रहे हैं। नारियल विकास के लिए उठाई गई पहलों का वाँछित परिणाम हासिल करने में विविध नारियल विकास एजेंसियों के बीच तालमेल का अभाव अक्सर रुकावटें पैदा करती हैं। नारियल किसान जिन अड़चनों का सामना कर रहे हैं वे स्थानविशेष आधारित हैं और इसलिए समस्याओं को सुलझाने में विकास/विस्तार गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए केन्द्रीकृत रूप से बनायी गई विश्लेषणात्मक प्रणाली उचित नहीं लगती है। इसे प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न नारियल उत्पादक इलाकों में प्रचलित जैव-भौतिक और सामाजिक-आर्थिक संसाधन परिस्थितियों के लिए अनुकूल गतिविधियाँ विकेन्द्रित सहभागिता प्रणाली से बनाकर कार्यान्वित करना चाहिए। इस प्रसंग में नारियल आधारित गतिविधियाँ कार्यान्वित करने में स्थानीय स्वशासित संस्थानों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है। इतना ही नहीं, स्थानीय स्वशासित संस्थान विविध नारियल विकास एजेंसियों की गतिविधियों और कार्यक्रमों के समवाय के लिए प्रभावी मंच भी प्रदान कर सकते हैं।

## मौजूदा प्रवर्तन प्रणाली और संस्थागत अभाव

भारत में नारियल की प्रवर्तन प्रणाली एकदम बेजोड़ है जिसमें कई सरकारी एजेंसियाँ और संस्थाएं बिना सहयोगात्मक प्रयास के इस फसल के लिए अनुसंधान एवं विकास कार्य में जुटी हैं। नारियल की क्षेत्रीय प्रवर्तन प्रणाली में वर्णित सात संघटक हैं: (1) अनुसंधान क्षेत्र में केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान है जो केरल और तमिलनाडु के कृषि विश्वविद्यालयों के साथ नारियल उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी विकसित करने की मुख्य शक्ति है (2) नीति स्तर पर नारियल विकास बोर्ड कार्यरत है जो देश में नारियल उत्पाद और उपयोगीकरण के एकीकृत विकास के लिए भारत सरकार के अधीन स्थापित सांविधिक निकाय है। नाविबो मुख्यत: गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन बढ़ाना, नारियल के अधीन अधिकाधिक क्षेत्र लाकर उत्पादन क्षमता बढ़ाना, मौजूदा नारियल बागों की उत्पादकता सुधारना और प्रमुख कीटों और रोगों का एकीकृत प्रबंधन करना आदि पर ज़ोर दे रहा है (3) नारियल के विपणन पहलुओं की दृष्टि से वर्ष 1958 में स्थापित नेशनल अग्रिकल्चरल कोओपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (नाफेड) को भावों में गिरावट की परिस्थिति में न्यूनतम समर्थन भाव पर बाज़ार से खोपरे का प्रापण करने का दायित्व सौपा गया है। तथापि, भारत में खोपरे के प्रापण के लिए जो प्रणाली चालू है वह प्रभावी नहीं है और इससे बाज़ार भाव में कभी भी बढ़ोत्तरी नहीं हुई है। नाफेड के अनुसार, भले ही एजेंसी बड़े परिमाण में खोपरे का प्रापण करने और खोपरे को नारियल तेल में परिवर्तित करने में सक्षम रहा है, फिर भी न्यूनतम मार्जिन पर भी अपने उत्पादों के लिए बाज़ार पाने में असमर्थ है (4) छोटे और सीमांत खेतों वाले असंगठित नारियल किसान नारियल प्रवर्तन प्रणाली का चतुर्थ संघटक हैं (5) नारियल उत्पादक समितियों, फेडरेशनों और कंपनियों के रूप में उभर रहे कृषक उत्पादक संगठन (6) नारियल क्षेत्र में कार्यरत बिचौलिए अपना सिंडिकेट, लोबी बनाकर संदेहास्पद क्षेत्रों में कार्य करते हुए खोपरा/नारियल तेल का काला बाज़ार कर रहे हैं जिससे बाज़ार में भाव की लगातार घटबढ़ बनी रहती है (7) राज्य कृषि/बागवानी विभाग जिन्हें प्रादेशिक स्तर पर प्रौद्योगिकियों के अंतरण का दायित्व सौंपा गया है। इन संघटकों के अतिरिक्त, सबसे महत्वपूर्ण किंतु विडंबना से नगण्य समझा गया संघटक है स्थानीय स्वशासित संस्थान जो निचले स्तर पर व्यवस्थित रूप से कार्य करते आ रहे हैं।

नारियल के अनुसंधान क्षेत्र में भारत की पकड़ काफी मज़बूत है किंतु मात्र उत्पादकता में सुधार लाना इस क्षेत्र में उत्पन्न संकटों के समाधान के लिए काफी नहीं है। भाव में अस्थिरता, मूल्य समर्थन प्रणालियों और सुगम विपणन की अपर्याप्तता आदि अन्य संघटक हैं जो नारियल की मूल्य श्रृंखला की गतिविधियों

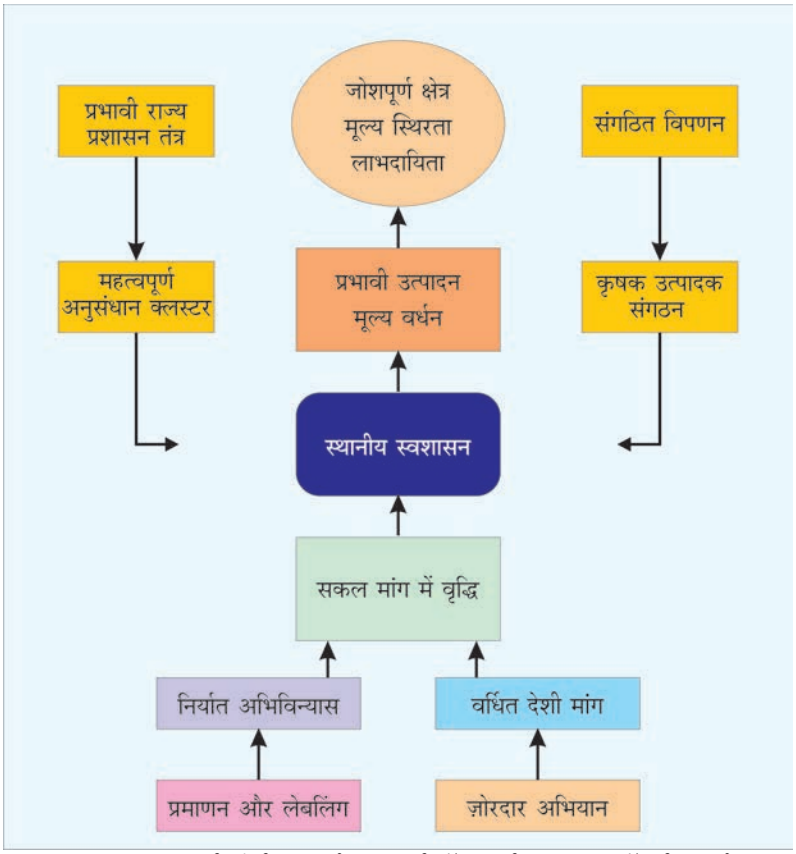


चित्र 1: *नारियल की क्षेत्रीय प्रवर्तन प्रणाली में स्थानीय स्वशासनों की निर्णायक भूमिका-योजनाबद्ध चित्रण*

में बाधा डालते हैं। प्रभावी ग्रूप सामंजस्य और पेशेवर अंदाज़ की कमी (विभिन्न लाभभोगियों के बीच) अब भी समस्याजनक मामले हैं। मूल्य समर्थन योजना के साथ साथ उपयुक्त संपूर्ण कड़ियों सहित मूल्य श्रृंखला प्रणाली का प्रभावी अनुवीक्षण और प्रबंधन देश के नारियल उद्योग को चमकदार बनाने में एहम भूमिका निभाएंगे। इस प्रसंग में नारियल के लिए वांछित क्षेत्रवार प्रवर्तन प्रणाली की पुनसंरचना चित्र 1 में दी गयी है। इस प्रसंग में प्रवर्तन प्रणाली के अन्य सभी संघटकों की रणनीतिक समवाय एजेंसी के रूप में स्थानीय स्वशासित संस्थाओं की अहमियत पर ध्यान देना ज़रूरी है और स्थानीय स्वशासित संस्थाओं की भूमिका मज़बूत और संगत बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाना सर्वाधिक महत्वपूर्ण समझना चाहिए।

## स्थानीय स्वशासित संस्थान और कृषीय विकास हेतु सहभागिता योजना

छोटे और सीमांत किसान अपने मामूली संसाधनों के साथ उत्पादन, फसलोत्तर प्रसंस्करण और मूल्य श्रृंखला प्रबंधन में हुए नवपरिवर्तनों का प्रभावी लाभ उठाने में असमर्थ रहे हैं। बाज़ार के अपर्याप्त विकास से भरोसेमंद आउटलेटों तक की पहुंच और अधिशेष उत्पादों के लिए किफायती दाम मिलने में रुकावटें पैदा हो रही हैं जो समस्याएं औरजटिल बनाती जा रही हैं। विकासात्मक पहलों का खाँका बनाने, योजना तैयार करने और इसे निष्पादित करने में किसानों की सहभागिता कम होने के कारण इसका कार्यान्वयन अक्सर प्रभावी नहीं रहता है और वाँछित उपलब्धि भी हासिल नहीं होती है। कृषीय विकास पहलों का निष्पादन सुधारने के लिए निर्णयन प्रक्रियाओं में किसानों की सहभागिता बढ़ाना अनिवार्य है। नारियल विकास कार्यक्रमों के मामले में भी यही चलता है।

विभिन्न संस्थागत प्रणालियों में, समग्र रूप में सहभागिता से कार्य करने और व्यापक दृष्टिकोण से समस्याओं का सामना करने के प्रबल तरीके के रूप में प्रजातंत्रात्मक विकेन्द्रीकरण पद्धति को स्वीकारा गया है। इसमें स्थानीय शासन की निर्धारित प्रक्रियाओं के ज़रिए लोगों को अधिकार और संसाधन प्रदान किया जाता है। संविधान (73 वाँ और 74 वाँ संशोधन) अधिनियम 1992, के अध्यादेशानुसार पंचायती राज संस्थानों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया है और लगभग सभी राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों में पंचायती राज संस्थानों के संबंध में आवश्यक कानून बनाया गया है। परिणामस्वरूप देश में ग्रामीण स्तर पर पंचायत; माध्यमिक स्तर पर पंचायत; और जिला स्तर पर पंचायत गठित किया गया है। केरल जैसे राज्य स्थानीय स्वशासनों द्वारा बनाई गई विकासात्मक

परियोजनाओं के लिए राज्य की योजना निधि से 20-30 प्रतिशत तक निधि अलग रखकर इस क्षेत्र में और आगे निकल चुके हैं। केरल में प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण का दो दशक लंबा अनुभव निम्न स्तर पर विकासात्मक प्राथमिकताओं का निर्णय लेने में लोगों की भागीदारी में हुई पर्याप्त प्रगति की गवाही दे रहा है।

## कृषि क्षेत्र के विकास हेतु स्थानीय स्वशासित संस्थानों का दायित्व

स्थानीय स्वशासित संस्थानों के ज़रिए कृषि और अनुबंधित क्षेत्रों में विकेन्द्रित योजना तैयार करने और कार्यान्वित करने पर बने मार्गनिर्देशों में यह स्पष्टतया घोषित किया है कि विकेन्द्रित योजना में छोटे और सीमांत किसानों एवं पारंपरिक और लघु उद्योगों के उत्पादन और उत्पादकता में सुधार लाकर स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ावा देना चाहिए। यह रोज़गार सृजन, गरीबी कम करना, कुदरती संसाधन प्रबंधन और एकीकृत क्षेत्र विकास को लक्षित करके किया जाना चाहिए।

विकेन्द्रित योजना कार्यक्रम के अधीन कृषि विकास हेतु कई गतिविधियाँ पहचानी गई हैं और जिम्मेदारियाँ स्थानीय स्वशासित संस्थानों के बीच बाँटी गई हैं। ग्राम पंचायतों को आबंटित उत्तरदायित्वों में मृदा-फसल उपयुक्तता, कीट एवं रोग नियंत्रण गतिविधियाँ, बीज उत्पादन/रोपण सामग्री उत्पादन का संवर्धन, छोटी वाणिज्यिक कृषि निवेश उत्पादन इकाइयों की स्थापना, नई प्रौद्योगिकियों का प्रचार-प्रसार, किसान क्लब, समितियाँ आदि को सहायता, निदर्शन प्लोटों की स्थापना, सामूहिक खेती प्रणाली का संवर्धन, जैव उर्वरकों और केंचुआ उत्पादन को बढ़ावा देना, मृदा नमूनों का एकत्रीकरण और परिणामों का प्रसार, मोबाइल मृदा जाँच कैंपों का आयोजन और किसानों द्वारा जाँच परिणामों के अभिग्रहण का अनुवीक्षण, जलाशयों को प्राथमिकता देना, मृदा संरक्षण गतिविधियों के गठन और कार्यान्वयन में पेशेवर और कार्यालयीन कार्यदल की सहायता करना, किसानों की मंडी आयोजित करना, किसानों और स्वयं सहायता ग्रूपों के लिए उधार की व्यवस्था करना, फसल बीमा हेतु परियोजनाएं बनाना आदि के मद्देनज़र फसल विकास योजनाएं बनाकर कृषीय उत्पादन बढ़ाना शामिल हैं।

समानतया ब्लोक पंचायतों के दायित्वों में फसलों के लिए डाटा बेस का संकलन करना और ब्लोक स्तरीय योजना तैयार करना, मांग का मूल्यांकन करने में सहायता करके जिला पंचायतों को कृषि निवेशों की आपूर्ति करना, बीजों और बीजपैधों का गुणवत्ता नियंत्रण, कृषि विस्तार के लिए समर्थन, परियोजना की तैयारी और मूल्यवर्धित इकाइयों की स्थापना, डाटा बेस का संकलन और ब्लोक स्तरीय जलाशय के लिए योजना तैयार करना, पेशेवर/सरकारी/मृदा संरक्षण कार्यदल के साथ समन्वयन और इनके कार्य के लिए सहायता देना आदि शामिल हैं।

इसी प्रकार जिला पंचायत के दायित्वों में ब्लोक पंचायतों से प्राप्त डाटाबेस का संकलन और कृषि विकास हेतु जिला स्तरीय दृष्टिकोण से योजना तैयार करना, अवसंरचना का विकास, वाणिज्यिक फसलों को बढ़ावा देना, जैव प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग, बड़े क्षेत्रों में प्रभावी कीट और रोग नियंत्रण, बीज/रोपण सामग्रियों/ योजना की तैयारी, कृषि निवेशों के लिए भंडारण सुविधा की व्यवस्था करना, अधिकाधिक यंत्रचालित अनुप्रयोग की व्यवस्था करना, वाणिज्यिक निवेश उत्पादन इकाइयों की स्थापना, अनुसंधान-विस्तार सम्मेलन का आयोजन, जिला स्तरीय उधार योजना बनाना, जिला स्तरीय डाटाबेस का संकलन और जिला स्तरीय जलाशय योजना की तैयारी, मृदा और जल संरक्षण परियोजना के लिए जिला स्तरीय योजना की तैयारी आदि शामिल हैं।

## स्थानीय स्वशासित संस्थानों के ज़रिए विकेन्द्रित नारियल विकास गतिविधियों की संभावनाएं

कृषि क्षेत्र के विकास के लिए स्थानीय स्वशासित संस्थानों के दायित्वों के बारे में ऊपर हुई चर्चा में यह स्पष्टतः सूचित किया गया है कि स्थानीय स्वशासित संस्थानों के ज़रिए नारियल क्षेत्र में विकासात्मक गतिविधियाँ स्थापित करने और कार्यान्वित करने की प्रचुर संभावनाएं हैं। केरल में पर्वतीय इलाकों को छोड़कर लगभग सभी ग्राम पंचायतों में नारियल सर्वप्रमुख फसल है। विभिन्न कृषि पारिस्थितिक क्षेत्रों के नारियल किसानों

की समस्याएं भी अलग अलग हैं और सफलता पाने के लिए नारियल क्षेत्र की प्रगति हेतु विकेन्द्रीकृत तरीके से विकास/विस्तार कार्यक्रम स्थायी रूप से बनाकर कार्यान्वित करना अनिवार्य है। इस क्षेत्र के अधिकांश किसान छोटे और सीमांत श्रेणी के संसाधन निर्धन हैं, अत: यह काफी संगत है कि समुचित विकास/विस्तार कार्यक्रम बनाने और कार्यान्वित करने में इनकी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण संस्थागत उपाय है।

काफी संभावनाएं होने के बावजूद भी स्थानीय स्वशासित संस्थाओं के द्वारा नारियल आधारित गतिविधियाँ वांछित स्तर पर नहीं हो रही हैं। उदाहरणार्थ, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा चलाए गए अनुसंधान के अनुसार केरल के कासरगोड़ जिले के सभी ग्राम पंचायतों में तनास्रवण रोग का प्रकोप पाया गया है। तथापि, किसी भी पंचायत ने विकेन्द्रित योजना कार्यक्रम के अधीन रोग के नियंत्रण हेतु एक भी योजना कार्यान्वित नहीं की जबकि जिले के सभी ग्राम पंचायतों को मिलाकर 60,000 हेक्टर क्षेत्र में प्रमुख फसल के रूप में नारियल की खेती होती है। इससे यह स्पष्टतया ज़ाहिर होता है कि जिले में नारियल क्षेत्र के प्रति घोर उपेक्षा हो रही है।

## नारियल आधारित गतिविधियाँ

नारियल आधारित निम्नलिखित गतिविधियाँ स्थानीय स्वशासनों द्वारा किया जा सकता है। स्थानीय स्वशासित संस्थान अपने विकेन्द्रित योजना कार्यक्रम के साथ साथ नारियल विकास के समान लक्ष्य वाले राज्य या केन्द्रीय प्रायोजित योजनाओं के साथ समवाय सुगम बना सकते हैं।

## संकर सहित गुणवत्तापूर्ण नारियल बीजपौधों का उत्पादन और वितरण

स्थानीय स्वशासित संस्थान रोपण सामग्रियों की अपेक्षाओं की आपूर्ति हेतु स्थानीय रूप से उपलब्ध स्रोतों/मातृ ताड़ों का प्रयोग करके कृषक सहभागिता से विकेन्द्रित बीजपौध उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु योजनाओं का कार्यान्वयन कर सकते हैं। अधिकाधिक न्यूक्लियस बीज बागों की स्थापना करके बेहतरीन किस्मों के बीजपौधों का उत्पादन बढ़ाने हेतु विकेन्द्रित प्रणाली को बढ़ावा देना चाहिए। छोटे और सीमांत किसानों के बागों में इस प्रकार के बीज बागों की स्थापना के लिए बढ़ावा देना चाहिए। स्थानीय स्वशासित संस्थान विकेन्द्रित रूप से गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन और वितरण करने की योजना के कार्यान्वयन के दौरान नारियल विकास बोर्ड द्वारा नारियल किसानों के निचले स्तर पर गठित समूह नारियल उत्पादक समितियों/फेडरेशनों का और फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री कार्यक्रम के अधीन प्रशिक्षित युवाओं का लाभ उठा सकते हैं।

## नारियल बागों में मृदा और जल संरक्षण और जल संचयन को बढ़ावा देना

नारियल आधारित खेती प्रणाली में उत्पादकता और सुस्थिरता बढ़ाने में मृदा और जल संरक्षण प्रौद्योगिकियों जैसे नारियल थालों में पत्ते, कयर गूदा आदि से पलेवा करना, नारियल पेड़ों के बीच के जगहों में छिलका गाड़ना, नारियल के थालों में अर्ध चन्द्राकार में बाँध बनाकर अनन्नास लगाकर मज़बूत बनाना, नारियल छिलके से गड्ढ़ा भरना, जल निकासी वाले गड्ढ़ों के मेंड पर

अनन्नास लगाना और हरी खाद के रूप में छादन फसलों की खेती जैसे मृदा क्षरण रोकने वाले उपाय और किफायती जल संचयन संरचना जैसे छत पर फेरो सिमेंट प्रौद्योगिकी से जल संचयन टंकी बनाना, बह जाने वाले पानी के एकत्रण हेतु टंकी बनाना, टपकन टंकी बनाना, कुओं और चेक बाँधों में फिर से पानी भरना जैसे उपायों की तकनीकी और आर्थिक व्यवहार्यता का किसानों के बागों में अच्छी तरह प्रदर्शन किया जा रहा है।

स्थानीय स्वशासित संस्थान(ग्राम पंचायत, ब्लोक पंचायत और जिला पंचायत) अपनी योजनाओं के कार्यान्वयन के अलावा नारियल बागों में मृदा और जल संरक्षण एवं जल संचयन तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए जलाशय विकास की पहल सहित विविध एजेंसियों की गतिविधियों और कार्यक्रमों का समवाय सुनिश्चित करने में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं।

## नारियल बागों में मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन और मृदा जाँच आधारित पोषण प्रबंधन को बढ़ावा देना

नारियल पेड़ों की कम उत्पादकता का एक कारण अपर्याप्त पोषण प्रबंधन प्रणालियाँ हैं। अध्ययन से सूचित हुआ है कि केरल जैसे राज्यों में अनुशंसित पोषण प्रबंधन प्रणालियाँ नारियल किसानों द्वारा बिरले ही अपनाई जा रही हैं। मिट्टी की अधिक अम्लता, प्रमुख पोषक तत्वों खासतौर पर पोटेशियम की कमी, कैल्शियम और मगनीशियम जैसे गौण पोषक तत्वों की कमी और बोरोन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों की व्यापक कमी नारियल उत्पादक राज्यों में मिट्टी से जुड़ी समस्याएं हैं जिसके फलस्वरूप ताड़ का स्वास्थ्य कमज़ोर हो जाता है और उत्पादकता भी कम होती है। स्थानीय स्वशासित संस्थान नारियल बागों में मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन प्रणालियाँ अपनाने और मृदा की जाँच आधारित पोषण प्रबंधन के लिए किसानों को प्रेरित कर सकते हैं। स्थानीय स्वशासित संस्थान नारियल विकास बोर्ड जैसी एजेंसियों द्वारा कार्यान्वित समान योजनाओं के समवाय के लिए उचित मंच भी प्रदान कर सकते हैं।

## सूक्ष्म सिंचाई पर ज़ोर देते हुए नारियल बागों में सिंचाई और जल प्रबंधन

नारियल की कम उत्पादकता के लिए एक कारण सिंचाई का अभाव है। यदि सिंचाई सुनिश्चित रूप से करें तो नारियल पेड़ों की पैदावार में भी अच्छी खासी वृद्धि सुनिश्चित है। पानी के अभाव वाले क्षेत्रों में नारियल बागों की सिंचाई के लिए ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाई जा सकती है जिसमें पानी का नष्ट कम होता है। स्थानीय स्वशासित संस्थान नारियल की उत्पादकता बढ़ाने के लिए सिंचाई सुविधाएं प्रदान करने हेतु योजनाएं कार्यान्वित कर सकते हैं और सूक्ष्म

सिंचाई को बढ़ावा देना सहित सिंचाई विस्तार को लक्षित करके अन्य एजेंसियों के प्रयासों के साथ समवाय भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

### नारियल आधारित अंतरा/मिश्रित फसलन प्रणाली और मिश्रित खेती को लोकप्रिय बनाना

नारियल आधारित अंतरा/मिश्रित फसलन प्रणाली या मिश्रित खेती छोटे बागों में नारियल की खेती से आमदनी बढ़ाने का महत्वपूर्ण उपाय है, जो नारियल के भाव में लगातार हो रहे उतार-चढ़ाव के इस दौर में काफी संगत है। स्थानीय स्वशासित संस्थान नारियल के टिकाऊ विकास हेतु नारियल आधारित अंतरा/मिश्रित फसलन प्रणाली और मिश्रित खेती को बढ़ावा देने का कार्यक्रम विकेन्द्रित योजना के ज़रिए बना सकते हैं। इस प्रणाली में स्थानविशेष की कृषि-पारिस्थितिक विशेषताओं, बाज़ार संभावनाओं और किसानों की पसंद को ध्यान में रखते हुए संघटक फसलों/उद्यमों के बारे में निर्णय लेना चाहिए।

### नारियल के एकीकृत कीट और रोग प्रबंधन के लिए उचित गतिविधियाँ अपनाना

कीटों और रोगों के कारण फसल को होने वाले नुकसान नारियल किसानों की एक प्रमुख समस्या है। नारियल के एकीकृत कीट/रोग प्रबंधन के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए किसानों की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए सामुदायिक/ग्रूप प्रणाली अपनाना आवश्यक है। कीटों/रोगों के प्रकोपित क्षेत्र के विस्तार के आधार पर समुचित स्तर के स्थानीय स्वशासित संस्थानों का गठन किया जा सकता है और नारियल के एकीकृत कीट प्रबंधन के लिए योजना कार्यान्वित की जा सकती है। यदि एक से अधिक ग्राम पंचायत में कीट/रोग प्रकोप की समस्या पायी जाती है तो योजना का कार्यान्वयन ब्लोक पंचायत कर सकते हैं और यदि एक से अधिक ब्लोकों में कीट प्रकोप हुआ है तो जिला पंचायत इसकी पहल कर सकता है। स्थानीय स्वशासित संस्थानों के ज़रिए कीट/रोग प्रबंधन के, खासतौर पर कलिका विगलन, लाल ताड़ घुन आदि के नियंत्रण हेतु विकेन्द्रित सहभागिता प्रणाली प्रभावी रूप से कार्यान्वित करने की कई सफल गाथाएं मौजूद हैं। स्थानीय स्वशासित संस्थान ऐसी योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु नारियल विकास बोर्ड और केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान जैसे विकास/अनुसंधान संस्थाओं का समर्थन ले सकते हैं।

### नारियल आधारित अंतरा/मिश्रित फसलन प्रणाली और मिश्रित खेती, एकीकृत कीट प्रबंधन/एकीकृत रोग प्रबंधन आदि सहित वैज्ञानिक नारियल खेती प्रणालियों पर आधारित निदर्शन प्लोटों की स्थापना

यद्यपि अनुसंधान संस्थानों ने अपनी उपलब्धियों के ज़रिए नारियल की वैज्ञानिक खेती प्रणाली की प्रौद्योगिक-आर्थिक व्यवहार्यता का वर्णन किया है, तो भी नारियल की उत्पादकता और नारियल बागों से आय बढ़ाने में खेतीगत स्तर पर इन प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से संतोषजनक उपलब्धि हासिल नहीं हुई है।

अत: यह महत्वपूर्ण है कि स्थानीय स्वशासित संस्थानों के विकेन्द्रित योजनाओं के ज़रिए वैज्ञानिक नारियल खेती प्रणाली पर आधारित निदर्शन प्लोट स्थापित किया जाए ताकि वैज्ञानिक नारियल खेती प्रणालियों की तकनीकी व्यवहार्यता और आर्थिक क्षमता के बारे में किसानों को जानकारी मिले। स्थानीय स्वशासित संस्थान निदर्शन प्लोटों की स्थापना के लिए योजनाएं बनाते वक्त नारियल विकास बोर्ड, राज्य कृषि/बागवानी विभाग, आत्मा आदि जैसे अन्य एजेंसियों के प्रयासों के साथ समवाय सुनिश्चित कर सकते हैं।

### नारियल पत्तों से वर्मी कंपोस्ट बनाने के लिए बढ़ावा

परिस्थिति अनुकूल सुस्थिर खेती प्रणाली अपनाने में नारियल किसानों की मुख्य अड़चन है गुणवत्तापूर्ण जैविक खाद उपलब्ध न होना। एक हेक्टर क्षेत्र के नारियल बाग से हर वर्ष आठ टन पत्तों का जैवअवशिष्ट प्राप्त होता है। नारियल पेड़ से गिरने वाले नारियल पत्तों से यूड्रिलस एसपीपी केंचुए का प्रयोग करके अच्छी गुणवत्ता के वर्मी कंपोस्ट बनाया जा सकता है और जैव खाद के रूप में नारियल और संघटक फसलों को वापस दे सकते हैं। नारियल पत्तों से वर्मी कंपोस्ट बनाने और इसका उपयोग करने की योजना ग्राम पंचायतों के विकेन्द्रित योजना कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यान्वित किया जा सकता है। नारियल पत्तों से वर्मी कंपोस्ट के उत्पादन और

विपणन के लिए स्थानीय स्वशासक ग्रामीण महिला स्वयंसहायता समूहों द्वारा चलाए जा रहे सूक्ष्म उद्यमों या कृषक उत्पादक संगठनों को समर्थन दे सकते हैं।

### सुस्थिर नारियल उत्पादन के लिए रोगों के परिस्थिति अनुकूल प्रबंधन, मृदा का स्वास्थ्य और उर्वरता सुधारने हेतु पादप वृद्धि कारक सूक्ष्मजीवों और जैव नियंत्रक एजेंटों का भारी उत्पादन, वितरण, निदर्शन और सार्वजनीकरण के लिए सुविधाएं विकसित करना

नारियल किसानों की सहायता हेतु ट्राइकोडेर्मा, बासिलस और स्यूडोमोनस जैसे जैव नियंत्रण एजेंटों के भारी उत्पादन के लिए सुविधाएं प्रदान करने हेतु स्थानीय स्वशासित संस्थान हस्तक्षेप कर सकते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र और कृषि विभाग के सहयोग से किसानों के बागों में जैव नियंत्रण/पीजीपीआर प्रौद्योगिकियों का निदर्शन कर सकते हैं। इसके अलावा, विकेन्द्रित योजना की पहल के अंतर्गत इन जैव नियंत्रण एजेंटों के फार्म स्तरीय प्रवर्धन के लिए किसान समूहों को प्रशिक्षित करने हेतु कार्यक्रम चला सकते हैं।

### नारियल आधारित मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन और विपणन

नारियल खेती से आय बढ़ाने के लिए अनुशंसित प्रमुख रणनीति उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए नारियल का मूल्यवर्धन है। स्थानीय स्वशासित संस्थान विकेन्द्रित योजना के ज़रिए महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा चलाए जा रहे सूक्ष्मउद्यमों और किसान संगठनों को नारियल आधारित मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन और विपणन के लिए सहायता दे सकते हैं।

### किसान संगठनों को बढ़ावा देना

स्थानीय स्वशासित संस्थान नाविबो के समर्थन से गठित नारियल उत्पादक समितियों/फेडरेशनों/कंपनियों जैसे नारियल किसानों के निचले स्तर के संगठनों को समर्थन देने हेतु योजनाएं कार्यान्वित कर सकते हैं ताकि उत्पादकता सुधार, लागत में कटौती, प्रभावी सामूहिक विपणन और प्रसंस्करण एवं उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए किसानों की सामाजिक-आर्थिक उन्नति के लिए सामूहिक गतिविधियाँ कार्यान्वित करने में उन्हें सक्षम बनाया जा सके। इसके अतिरिक्त, स्थानीय स्वशासित संस्थान श्रम की कमी और उच्च वेतन दर जैसी समस्याओं को सुलझाने के लिए श्रम बैंक संकल्पना को बढ़ावा देकर कुशल ताड़ारोहियों और नारियल किसानों को आपस में जोड़ने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं।

### नारियल खेती पर अनुसंधान - विस्तार इंटरफेस कार्यक्रम सहित विस्तार गतिविधियाँ आयोजित करना

वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकियों और उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए मूल्यवर्धन संबंधी नारियल किसानों की जानकारी बढ़ाने के लिए स्थानीय स्वशासित संस्थानों के विकेन्द्रित योजना कार्यक्रम के ज़रिए सहभागिता विस्तार गतिविधियाँ चलाई जा सकती हैं। स्थानीय स्वशासित संस्थान नाविबो, राज्य कृषि विभाग, आत्मा, कृषि विज्ञान केन्द्र की प्रौद्योगिकी अंतरण गतिविधियों और सीपीसीआरआई और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों जैसी अनुसंधान संस्थाओं की महत्वपूर्ण विस्तार गतिविधियों के समवाय के लिए मंच प्रदान कर सकते हैं।

### निष्कर्ष

उदारीकृत व्यापार के इस युग में प्रतिस्पर्द्धी बनने के लिए हमारे नारियल उत्पादकों को अपनी कार्यक्षमता बढ़ानी चाहिए ताकि सुस्थिर और लाभदायी नारियल खेती के लिए मौजूदा प्रौद्योगिकियों का प्रभावी एकीकरण किया जा सके। बेहतरीन प्रौद्योगिकियों के उपयोगीकरण के लिए नारियल किसानों को कार्यक्षम बनाने हेतु अनुकूल वातावरण और समुचित विकास कार्यक्रम आवश्यक है।

विकास/विस्तार गतिविधियाँ कार्यान्वित करने वाली विविध एजेंसियों के प्रयासों के बीच समवाय और इनको कार्यान्वित करने में नारियल किसानों की सक्रिय भागीदारी नारियल क्षेत्र के विकास के लिए अनिवार्य है।

किसानों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करते हुए विकेन्द्रित योजना के ज़रिए निचले स्तर पर नारियल विकास/विस्तार गतिविधियाँ बनाने और कार्यान्वित करने में स्थानीय स्वशासित संस्थान पूरी तरह सक्षम हैं। इसके अतिरिक्त, स्थानीय स्वशासित संस्थान नारियल क्षेत्र के विकास के लिए कार्यरत विविध एजेंसियों के प्रयासों के समवाय के लिए आम मंच भी प्रदान कर सकते हैं।

# नीरा-दिल्ली का आगामी स्वास्थ्यदायक पेय

**जी.आर.सिंह,** *निदेशक और* ***अरुण पॉल,*** *तकनीकी अधिकारी, नाविबो, दिल्ली*

भारत में शीतल पेयों और अन्य फल पेयों के प्रति झुकाव तेज़ी से बढ़ता जा रहा है। शीतल पेय का भारतीय बाज़ार आगामी 30 सालों में 28-30 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर दर्ज करेगा। गत कुछ सालों से फल पेयों और पैकटबंद पेयों की मांग काफी अधिक बढ़ गयी है, जबकि शीतल पेय का पूरा कारोबार 65000 करोड़ रुपए का हो गया है। बढ़ती स्वायत्त आय, बदलती जीवनशैली और विलासिता के प्रति युवा पीढ़ियों के बढ़ते झुकाव के अनूठे मेल ने भारत को विश्व का तेज़ी से बढ़ते शीतल पेय और फल पेय बाज़ार बना दिया है।

नई दिल्ली का जादू बेशक यह रहा है कि इस शहर में वैविध्यपूर्ण संस्कृति और परंपरा के लोग बसे हुए हैं। अन्य भारतीय मेट्रो नगरों से भी अधिक दिल्ली में बसे शहरी लोगों में भारत की पूरी आबादी की विविधता की झलक मिलती है। दिल्ली के 1.8 करोड़ की आबादी शीतल पेयों और अन्य पेय उद्योगों के लिए अति विशाल बाज़ार प्रदान करती है। किंतु इस जनता की संस्कृति और जायके का अंतर उत्पादों में भी विविधता की मांग करता है।

गर्मी के दिनों में जब पारा स्तर काफी उच्च होता है, विदेशी मोकटेलों से लेकर परंपरागत ज्यूसों (इंडियन लेमनेड, बेसिल ज्यूस, जल जीरा, लस्सी, डाब पानी, रूह अफ़ज़ा आदि) के बर्फीले ठंडे पेय दिल्लीवासियों की प्यास बुझाते हैं। दिल्ली वाले अपनी उम्र का लिहाज़

किए बगैर ही एरेटेड/ कार्बनेटेड पेयों के चहेते हैं भले ही इसकी नियमित खपत स्वास्थ्य पर कई हानिकर असर ही क्यों न डालती हो। दिल्ली की भरी भरी योगा कक्षाएं, हेल्थ क्लब और एरोबिक्स सेंटर यह साबित करता है कि स्वास्थ्यपूर्ण जीवनशैली का अनुसरण करने वाले लोग बड़ी संख्या में यहाँ भी मौजूद हैं। इस प्रसंग में दिल्ली मेट्रो की वैविध्यपूर्ण आबादी का प्यास बुझाने के लिए स्वास्थ्यदायक पेय नीरा का धमाकेदार बाज़ार प्रवेश काफी ज़रूरी है।

*माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह नीरा का स्वाद आज़माते हुए*

नीरा, जिसे नारियल पेड़ का रस भी कहा जाता है, नारियल के अपक्व अनखुले पुष्पक्रम से उतारी जाती है। पेय के रूप में नीरा की खपत कच्चे रूप में की जा सकती है। सामान्य तापमान पर पैकटबंद और परिरक्षित नीरा कैनों/बोतलों में दो महीने तक सुरक्षित रखी जा सकती है। नीरा खनिजों और विटामिनों का समृद्ध स्रोत है। इसमें आयरन, फोसफोरस और एस्कोर्बिक एसिड पर्याप्त मात्रा में निहित हैं। नीरा को उबालकर तैयार किए जाने वाले नीरा शर्करा में प्रोटीन, 16 अमिनो अम्ल, विटामिन बी, आयरन, पोटैशियम, मैगनीशियम, कैल्शियम और ज़िंक निहित हैं। यह उत्कंठा, विषाद और बाइपोलार डिसोर्डर जैसी बीमारियों की इलाज के लिए फायदेमंद है। नीरा और इसके उत्पादों की सबसे महत्वपूर्ण खूबी यह है कि ये कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) वाले उत्पाद हैं। ग्लाइसेमिक इंडेक्स खून में

अवशोषित शर्करा की मात्रा का सूचक है। जहाँ टेबल शुगर का जीआई 70 है नीरा से बनते शर्करा का जीआई मात्र 35 है। जिन खाद्य पदार्थों का जीआई 55 से कम है उनको कम जीआई आहार के रूप में वर्गीकृत किया गया है। मधुमेह और उच्च कोलेस्ट्रॉल से पीड़ित लोग भी इसका उपयोग कर सकते हैं।

वर्तमान में देश में और श्री लंका, म्यानमर, थाइलैंड, अफ्रीका, इंडोनेशिया, फिलिप्पीन्स जैसे विदेशी राष्ट्रों में और अन्य पैसफिक क्षेत्रों में जहाँ स्वास्थ्यदायक पेय के रूप में नीरा की खपत होती है, नीरा की बाज़ार संभावनाएं अत्यधिक उज्ज्वल हैं। यदि पूरे देश में नीरा का संवर्धन और परिचय कराएं तो स्वास्थ्यदायक पेय के रूप में और गाढ़ा सिरप, शर्करा, शहद आदि जैसे मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों की कच्ची सामग्री के रूप में नीरा की बहुत बड़ी बाज़ार संभावनाएं सृजित हो सकती हैं। यूएसए और यूरोपीय देशों

के विकसित बाज़ारों में इन उत्पादों के निर्यात की संभावनाएं भी काफी अधिक हैं।

नीरा के गुणों को पहचान कर इसे लोकप्रिय बनाने के लिए नारियल विकास बोर्ड ने कई कार्यक्रम बनाए हैं और नीरा की खूबियों का प्रचार करने के लिए देश भर में विविध प्रदर्शनियों और मेलों में भाग ले रहा है। नई दिल्ली में नवंबर 2015 के दौरान संपन्न इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर के दौरान लोगों को तिरुकोची नारियल उत्पादक कंपनी से नीरा उपलब्ध कराई गईं। पहले के पाँच दिनों के दौरान बी 2 बी कार्यक्रम की व्यवस्था की गई थी और विनिर्माताओं से व्यापार संबंधी कई पूछताछें प्राप्त हुईं।

आईआईटीएफ के दौरान समाचार पत्रों और एफएम रेडियो स्टेशनों के ज़रिए लगातार संवर्धनात्मक गतिविधियाँ चलाने के कारण इस दौरान नीरा की मांग काफी अधिक थी। नाविबो स्टाल का दौरा किए तकरीबन 25 प्रतिशत लोगों ने नीरा के बारे में जानकारी ली और इनमें से अधिकांश लोगों को नीरा का स्वाद भी पसंद आ गया। 30-50 के बीच आयु वाले लोग नीरा के स्वास्थ्य लाभ जानने के इच्छुक थे। इस ट्रेड फेयर के बाद नीरा के दिल्ली डीलरों को नीरा के लिए स्थायी ग्राहक प्राप्त हुए। नीरा की खूबियों से अवगत ग्राहक नीरा पीने के लिए मीलों यात्रा करके बिक्री केंद्र तक पहुंचते हैं। तथापि ट्रेड फेयर के बाद नीरा की मांग घटती नज़र आ रही है। इस घटाव का कारण शायद जाड़े का मौसम हो सकता है। बाज़ार का सामान्य रुख यह रहता है कि ठंड के मौसम में लोग गरम पेय का मज़ा लेना पसंद करते हैं। फिलहाल मांग में जो कमी हुई है, उसका इज़ाफा गर्मी के मौसम में कर सकता है जब दिल्ली का तापमान तेज़ी से बढ़ने लगता है। यही नहीं नीरा और इसके मूल्यवर्धित उत्पादों के बारे में लोगों को अवगत कराने के लिए जनता के बीच नियमित रूप से बृहत् जागरूकता अभियान चलाने की भी ज़रूरत है।

हाल में किए गए एक अध्ययन का सुझाव है कि यदि कृत्रिम रूप से मिठास वर्धित पेयों पर 20 प्रतिशत अतिरिक्त कर थोप दें तो भारत में आगामी दशक में 4 लाख लोगों को मधुमेह रोग का शिकार होने से बचाया जा सकता है। भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य फाउंडेशन, नई दिल्ली के अनुसंधानकर्ताओं और यूएस एवं यूके के अकादमिक संस्थाओं द्वारा चलाए गए अध्ययन से पता चला है कि शीतल पेयों पर इसप्रकार का कर लगाने से हम वर्ष 2014 और 2023 के बीच मोटापा या अतिभार से पीड़ित 1.1 करोड़ लोगों को इससे छुटकारा दिला सकते हैं। इन हालातों में दिल्ली जैसे मेट्रो शहर में कुदरती स्वास्थ्यदायक पेय के रूप में नीरा की काफी अच्छी गुंजाइश है। यह निश्चित है कि एक बार लोगों द्वारा नीरा का स्वाद आज़माने के बाद नीरा की माँग इतनी बढ़ेगी कि मौजूदा हालात में मांगों की आपूर्ति करना मुम्किन नहीं हो पाएगा और अन्य सभी कार्बनेटेड अस्वास्थ्यकर पेय बाज़ार में पीछे हट जाएंगे।

# नारियल - तंदुरुस्ती के लिए बेहतरीन उपाय
# वेल्नेस सोल्यूशन्स का दावा

**रमणी गोपालकृष्णन**

*कन्सल्टन्ट, नाविबो, कोची-11*

डॉ.श्रीकुमार, पोषण विशेषज्ञ और वरिष्ठ इएनटी सर्जन कोची में कुंडन्नूर के मरट में स्थित मेडिकेयर सेंटर वेल्नेस सोल्यूशन्स के अग्रदूत हैं। वेल्नेस सोल्यूशन्स उन मरीज़ों के लिए खासतौर पर कैंसर मरीज़ों के लिए एक आश्रय स्थान है जो रेडियेशन और कीमो थेरापी का दर्द सहते अपने दिन गिन रहे हैं। प्रशामक उपचार केन्द्र होने के नाते इस संस्था के अध्यक्ष डॉ.श्रीकुमार मरीज़ों के लिए प्रत्यक्ष ईश्वर है जो अपने खुशनुमा, नरम दिल और हँसमुख मिज़ाज से उन्हें पीड़ाओं और दर्दों से राहत दिलाता है।

उनसे हमारी मुलाकात तब हुई थी जब वे नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे से मिलने यहाँ आए थे। डॉ.श्रीकुमार ने यह इज़हार किया कि नारियल उनके मरीज़ों के आहार का प्रमुख घटक है और नारियल गरी, नारियल पानी और नारियल तेल कैंसर की इलाज में सर्वोत्तम विषहरण एजेंट है। यह नारियल के उपचारात्मक और न्यूट्रास्यूटिकल गुणधर्मों के बारे में हाल ही के अनुसंधान निष्कर्षों को और अधिक मज़बूत बनाता है।

यह लेख डॉ.श्रीकुमार द्वारा बाँटी गई जानकारियों के आधार पर है जब नाविबो के अधिकारी उनसे मिलने वेल्नेस सोल्यूशन्स गए थे।

**प्रश्नः इस केन्द्र की स्थापना के पीछे आपकी संकल्पना क्या है और आम अस्पतालों से इतर इसकी खासियत क्या है?**

उत्तरः *"रोकथाम इलाज से बेहतर है"* इस लोकोक्ति का अनुसरण करते हुए निवारक स्वास्थ्य को आदर्श बनाकर इस केन्द्र की शुरुआत की गई थी। इस केन्द्र की स्थापना नितांत रोगी बनकर डॉक्टर के पास जाने के बजाय विभिन्न रोगों से शरीर को बचाने के लिए अपना स्वास्थ्य बनाए रखने की ज़रूरत लोगों को समझाने के लिए की थी। हम तंदुरुस्त

रहने के संदेश का प्रचार प्रसार करते हैं। तंदुरुस्ती का मतलब दवाइयाँ खाकर रोग से मुक्ति पाना नहीं है, बल्कि इसमें स्वास्थ्यपूर्ण आहार और स्वस्थ जीवनशैली भी शामिल है। किंतु इस प्रणाली पर किसी ने भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। सारे लोग मरीज़ बनने के बाद दवाइयों और इलाज के पीछे भागते हैं। इसलिए शुरुआत से ही हमारे पास मात्र बुरी तरह से रोगग्रस्त मरीज़ ही आते हैं। इसप्रकार वेल्नेस सोल्यूशन्स मरीज़ों के लिए एक सान्त्वना केन्द्र मात्र रह गया।

तंदुरुस्त रहना अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसके लिए लोगों में जागरूकता पैदा करना अत्यंत आवश्यक है। किंतु लोगों ने इस प्रणाली को ज्यादा अहमियत नहीं दी है। वे मरीज़ के रूप में परामर्श लेना चाहते हैं। जीवनशैली रोग लगने वाले कोई भी व्यक्ति चाहे वह मर्द हो या औरत तब तक डॉक्टर के पास नहीं जाता है जब तक कि उन्हें यह एहसास न हो जाता कि वे बीमारी के शिकार हुए हैं। जब यह बीमारी बाहरी रूप से प्रकट होने लगती है प्राय: उनका नज़रिया यह रहता है कि 'देखा जाएगा'। यह *देखा जाएगा* नज़रिया उन्हें जान को खतरा होने की गंभीर स्थिति तक पहुँचाता है और समस्याएं एवं परेशानियाँ बार बार उनके शरीर को नुक्सान पहुँचाती हैं। इस प्रकार बुरी तरह से रोगपीड़ित मरीज़ों को पूरी तरह ठीक करने या उन्हें राहत दिलाने की भी हमें अपनी सीमाएं होती हैं।

सबसे ज़रूरी है कि जागरूकता पैदा करना जिससे हम अपने शरीर का देखभाल करके एहतियात बरती जा सकती है। मधुमेह रोगियों से खाने पर परहेज़ करने या शक्कर छोड़ने की बात कहने का कोई मतलब नहीं है। एक सामान्य क्रियाशील व्यक्ति के शरीर में ऊर्जा का जितना उपयोग होता है उससे भी अधिक मधुमेह रोगियों के शरीर में होता है। इस हालात में हमें पर्याप्त ऊर्जा अतिरिक्त रूप से प्रदान करना पड़ता है। अन्यथा शरीर पूरी तरह प्रतिक्रिया रहित हो जाएगा। सभी लोग इसके लिए बपौती का सहारा लेते हैं। यह बिमारी सबसे पहले किसको लगी होगी जिसको हम दोषी माना जा सकें? यह बिलकुल अंडा और मुर्गी वाली बात जैसी ही है। सभी नव जन्य रोगों के लिए हम बपौती को दोषी नहीं ठहराया जा सकते हैं।

यह विशेषज्ञता का ज़माना है। विशेषज्ञ मात्र अपने विशेषज्ञ क्षेत्रों की ही इलाज करते हैं। हमारी शिक्षा, जानकारी, अभिज्ञता आदि मूल कोशिका से शुरू होनी चाहिए। डायगनोसेस केंद्र में प्रयोगशाला परीक्षणों की कई प्रकार की त्रुटियाँ पहचानी जाती हैं। किंतु वैज्ञानिक रूप से यह ठीक नहीं है। वास्तव में जैवरसायनिक प्रक्रियाएं कोशिका के अंदर चलती है न कि खून में। हम यह देख नहीं सकते कि हमारे शरीर के भीतर क्या चल रहा है। जो हमारे शरीर के भीतर चलता है वह प्रयोगशाला के अंदर भी नहीं होता है। सेलुलार साइंस के परिणामस्वरूप, जैवरसायनिक परीक्षणों के निष्कर्षों और मनुष्य शरीर की वास्तविक क्रियाओं में काफी अंतर पाया गया है। हमें न्यूट्रिजनोमिक्स के बारे में और जानकारी हासिल करनी चाहिए जो जीन एक्स्प्रेशन और चयापचय क्रियाओं पर आहार के प्रभावों का अध्ययन करता है।

**प्रश्न: वेल्नेस सोल्यूशन्स के खाद्य मदों में नारियल एक प्रमुख संघटक है। कृपया इस पर प्रकाश डालें?**

उत्तर: हमारे शरीर में कई विषैले तत्व निहित होते हैं। हम जो ज़हरीले आहार खाते हैं उसके अवशिष्ट प्रभाव के फलस्वरूप स्थायी परेशानियाँ उत्पन्न होती हैं। विषैले तत्व हमारी कोशिकाएं, जिगर की कोशिकाएं, गुर्दा आदि में भी होते हैं। इन विषैले तत्वों को निकालने के लिए मरीज़ों के शरीर में विषहरण प्रक्रिया की जाती है। नारियल उत्पादों में कोशिकाओं के विषहरण के गज़ब का प्रभाव है। आमतौर पर प्रयुक्त अन्य वसाओं और तेलों की अपेक्षा नारियल तेल बहुत जल्दी पचता है। नारियल तेल हमारे शरीर में निहित कई विषैले तत्वों को निकालता है। नारियल पानी में गुर्दे से विषैले तत्व फिल्टर करके बाहर निकालने की विषहरण क्षमता निहित है। नारियल पानी मूत्रवर्धक है जो गुर्दे से मालिन्य निकालने में सहायक है। मनुष्य शरीर को नारियल पानी और नारियल तेल प्रदान करने से शरीर का संपूर्ण विषहरण संभव हो जाता है। इसके अतिरिक्त नारियल तेल में निहित विटामिन और खनिज भी शरीर को उपलब्ध होते हैं। इसप्रकार शरीर को अधिक रोगप्रतिरोधिता और ताकत मिलती है और हमारा शरीर तंदुरुस्त रहता है।

मेरा मशविरा है कि हमें अपने दैनिक आहार में नारियल और नारियल उत्पादों को शामिल करना चाहिए। सुरक्षित आहार के ज़रिए स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती बनाए रखने के लिए नारियल और नारियल उत्पादों को प्रमुख स्थान देना चाहिए।

**प्रश्नः अलज़ाइमर की इलाज में वर्जिन नारियल तेल के लाभकारी प्रभावों के बारे में कई रिपोर्टें आ रही हैं। इसके बारे में आपकी विशेषज्ञ राय क्या है?**

उत्तरः जी हाँ। अलज़ाइमर रोग एक बढ़ती वैश्विक बीमारी है जिसकी संपूर्ण रोगमुक्ति संभव नहीं है। अल्ज़ाइमर के मरीज़ों को नारियल तेल देने से यह कोशिका भित्तियों को मज़बूत बनाता है। जब कोशिका भित्तियाँ मज़बूत हो जाती हैं तो, ऊर्जा उत्पादन सक्रिय और त्वरित हो जाता है। कोशिकाओं का नुक्सान होने से अलज़ाइमर मरीज़ों की याददाश्त चली जाती है। वर्जिन नारियल तेल की खपत से ऊर्जा उत्पादन उत्तेजित होती है तो कोशिकाओं का पुनरुज्जीवन संभव हो जाता है। अलज़ाइमर के मरीज़ों को वर्जिन नारियल तेल देने से यही प्रक्रिया चलती रहती है। वर्जिन नारियल तेल में निहित कीटोन तत्व और पोलिफेनोल्स को प्रमुख स्वास्थ्यवर्धक घटकों के रूप में पहचाना गया है।

कोशिका भित्तियों को मज़बूत बनाने के लिए अच्छी वसा की ज़रूरत होती है। जब वसा को गरम किया जाता है तो इसके अच्छे गुण नष्ट हो जाते हैं। जब वर्जिन नारियल तेल को गरम किया जाता है तो इसका रासायनिक संघटन बिगड़ जाता है और इसकी गुणवत्ता में बदलाव आ जाता है। वर्जिन नारियल तेल को गरम किए बगैर ज्यों का त्यों खपत करने से जो परिणाम मिलता है वह एकदम खास है। कुदरती आहार से कोशिकाओं की आयु बढ़ती है, स्वास्थ्य बेहतर होता है, कोशिकीय प्रक्रियाएं ठीक होती हैं और वायरस एवं बैक्टीरियाओं का नाश होता है। वर्जिन नारियल तेल की अनन्य विशेषताएं फंक्शनल आहार के

रूप में इसे स्वीकारना शतप्रतिशत उचित सिद्ध करता है।

हम रोगों का पता लगाने के लिए नियमित रूप से नैदानिक जाँच करते हैं। इस साल मैं रोगमुक्त हूँ तो अगले साल की जाँच की प्रतीक्षा में रहता है। किंतु बीमारियों से बचने के लिए हम अपने शरीर का सही देखभाल कभी नहीं करते हैं और शरीर के सही प्रबंधन के लक्ष्य से नैदानिक जाँच भी नहीं करते हैं। मैं अपने कैंसर मरीज़ों से उनके स्वास्थ्य के बारे में ही पूछताछ करता हूँ न कि उनकी बीमारी की स्थिति के बारे में। स्वास्थ्य सही सलामत बनाए रखना काफी महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य सुधारने के लिए आवश्यक उपाय अपनाना भी अनिवार्य है। चालीस साल का मधुमेह रोगी अपने परिवार, समूह और देश का जवाबदेह है। उनका स्वास्थ्य सुधारने के लिए भारी खर्च उठाना पड़ता है।

तंदुरुस्ती मौजूदा समाज की आवश्यकता है। हम बीमारी की इलाज के लिए काफी कुछ करते हैं और पैसे भी बहुत खर्च करते हैं। परंतु हम अपने शरीर को स्वस्थ रखने की परवाह नहीं करते हैं। नितांत रोगियों का जीवन बचाने के लिए हम करोड़ों रुपए खर्च करते हैं किंतु जनता का स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए कुछ भी नहीं करते हैं।

**प्रश्नः क्या सरकारी कार्यालयों में तैराकी और योगा की शुरुआत हमारी चिंतन प्रक्रिया में आए परिवर्तन का संकेत है?**

उत्तरः जी हाँ। बहुविध रोगों से अपने शरीर को बचाने के लिए सावधानी बरतने और पूर्वोपाय लेने की ज़रूरत है। अकादमिक संस्थाओं और सरकारी कार्यालयों की युवा पीढ़ियों से इस अध्ययन प्रक्रिया की शुरुआत कर सकती है।

**प्रश्नः कैंसर की इलाज में नारियल का उपयोग किस तरह किया जाता है?**

उत्तरः कैंसर की इलाज में नारियल का उपयोग कई प्रकार से किया जा सकता

है। हमारा जीवन सुरक्षित रखने के लिए सजीव आहार की आवश्यकता है। प्रसंस्करण के बाद भी नारियल उत्पाद जीवंत रहता है। वर्जिन नारियल तेल मज़ेदार और स्वादिष्ट होता है। पाश्चात्य देशों में नारियल का प्रयोग करके विषहरण के लिए कई केन्द्र शुरू हुए हैं। डाब पानी कमाल का और विस्मयकारी उत्पाद है। यह शरीर को ऊर्जा प्रदान करके थकान मिटाता है। नारियल तेल वायरस रोधी, बैक्टीरिया रोधी और फफूँदरोधी उत्पाद है। हाइपरकोलेस्ट्रोलेमिया और मोटापा रोकने तथा दिमाग की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की इलाज करने के लिए वर्जिन नारियल तेल के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। यूएस में दिल के दौरे से पीड़ित मरीजों को वर्जिन नारियल तेल से निष्कर्षित यौगिक का टीका लगाया जाता है। नीरा शर्करा बाज़ार में उपलब्ध सर्वोत्तम मिठासवर्धक उत्पाद है। हम नीरा से शरीर के लिए हितकारी सूक्ष्मजीवाणु विकसित कर सकते हैं। नारियल पानी पुनर्जलीकरण क्षमता युक्त और मूत्रवर्धक है। इसप्रकार नारियल के अनगिनत सकारात्मक गुण हैं।

नारियल भूमि में बसे व्यक्ति होने के नाते मुझे इस बात की शर्मिन्दगी महसूस होती है कि नारियल की खूबियों के बारे में मैंने अध्ययन आस्ट्रेलिया जैसे गैर नारियल उत्पादक देश से शुरू किया था। अब सवाल यह उठता है कि गैर नारियल उत्पादक देशों में नारियल उत्पाद कैसे उपलब्ध कराया जाए। इस परिस्थिति में कुदरती परिरक्षण की काफी अहमियत है। चीन जैसे देश कुदरती परिरक्षण तकनीकों के मामले में काफी आगे निकल चुके हैं। हमें इस क्षेत्र में प्रयास करने की ज़रूरत है।

आस्ट्रेलिया की सरकार ने स्वास्थ्य क्षेत्र को दो भागों में विभाजित किया है। स्वास्थ्य मंत्रालय और रोग निवारण मंत्रालय। उन्होंने रोगों की इलाज के बदले स्वास्थ्य प्रबंधन को अधिक महत्वपूर्ण माना है।

**प्रश्नः डाब पानी में अधिक मात्रा में शर्करा निहित है। क्या यह वैज्ञानिक रूप से साबित तथ्य है कि डाब पानी मधुमेह के मरीज़ों के लिए उपयुक्त नहीं है?**

इस उक्ति का पहला हिस्सा सही है। डाब पानी में अधिक मात्रा में शर्करा निहित है। किंतु दूसरा हिस्सा गलत है। डाब पानी में निहित खनिज पदार्थ कोशिका के इंसुलिन रिसेप्टरों को खोलता है। इसप्रकार कोशिकाओं द्वारा ग्लूकोस का अवशोषण आसान हो जाता है। इंसुलिन रिसेप्टरों के बिना शरीर में शर्करा का अवशोषण संभव नहीं है। जिस प्रकार नारियल तेल बिना संदूषित किए आचार को लंबी अवधि तक परिरक्षित रखता है उसी प्रकार यह बाहरी घटकों के हमलों से हमारे शरीर को सुरक्षित रखता है।

हमारे स्वास्थ्य संरक्षण में जागरूकता पैदा करना काफी अहम है। आम आदमी को बेवजह मानसिक दबावों में उलझने से उत्पन्न विपरीत असर के बारे में अच्छी तरह समझाना चाहिए जो हमारे शरीर के संपूर्ण तंत्र को बिगाड़कर कई प्रकार की रोग स्थितियों में हमें पहुँचाता है-डॉ.श्रीकुमार ने दोहराया।

## भावभीनी श्रद्धांजली

डॉ.श्यामलाल, सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड का 1 अप्रैल, 2016 को निधन हुआ। उन्होंने 31 दिसंबर 1987 को बोर्ड में अपनी सेवा आरंभ की थी। 30 मई 2008 को वे सहायक निदेशक के पद पर नियुक्त हुए। नाविबो परिवार उनके असामयिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दें।

कई दशकों से चले वाद-विवादों और बहसों के बाद नारियल की खपत के बारे में जो गलत अवधारणा थी, नारियल उससे धीरे धीरे बाहर निकल रहा है। वैज्ञानिक अध्ययन और नैदानिक अनुसंधानों ने इसके लाभकारी विशेषताओं, स्वास्थ्य और पौष्टिक मूल्यों पर प्रकाश डाला है। नारियल तेल के बारे में बताए जा रहे लाभकारी गुण जैसे मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल या लॉरिक अम्ल के बारे में डॉ.श्रीकुमार ने कोई ज़िक्र नहीं किया। किंतु कैंसर मरीज़ों की इलाज में नारियल उत्पादों के विषहरण प्रभाव का दावा वे ज़ोर से करते हैं। उम्मीद करें कि वैज्ञानिक जगत ने जैसा खुलासा किया है कल के सूपर फुड के रूप में नारियल हमेशा चर्चा में रहें।

# मीठे नारियल चंक्स
# नारियल गरी से नया स्वादिष्ठ पकवान

**आनि ईप्पन, अनीटा जोय**
*नाविबो प्रौद्योगिकी संस्थान, आलुवा*

नारियल पेड़ आहार का सतत एवं स्थायी स्रोत है। नारियल की ताज़ा गरी कैलरी, विटामिन एवं खनिजों से समृद्ध संपूर्ण आहार है। ताज़ा गरी हमारे शरीर के पाचन और विसर्जन कार्य नियमित करती है। यह सशक्त रोगाणुनाशक भी है।

**सारणी 1**
**ताज़ा नारियल गरी का पौष्टिक मूल्य**

| **पैरामीटर** | **मूल्य** (%) |
|---|---|
| नमी | 45 |
| शक्कर | 6.5 |
| प्रोटीन | 4 |
| वसा | 37 |
| कुल खनिज | 0.8 |
| आहारीय रेशा | 9 |
| विटामिन | नाममात्र |

*स्रोत: नारियल गाइड*

नारियल की ताज़ा गरी घरों एवं खाद्य उद्योगों में विविध व्यंजनों की एक अनिवार्य सामग्री है। ताज़ा नारियल गरी में लगभग 50 प्रतिशत नमी निहित है। ताज़गी बरकरार रखने के लिए इसको फ्रिज या फ्रीज़र में रखना चाहिए। नारियल गरी में निहित तेल के कारण इसको त्वचे पर झुर्रियाँ आने से रोकने का चमत्कारी गुण है । पर्याप्त प्रसंस्करण से ताज़ा गरी को लंबे समय तक परिरक्षित रखा जा सकता है।

विभिन्न ऑस्मोटिक माध्यमों के ज़रिए गरी को निर्जलीकृत किया जा सकता है। शक्कर से निर्जलीकृत नारियल चंक्स वैसे ही खा सकते हैं तथा स्नैक के तौर पर इसका उपयोग किया जा सकता है।

ट्रे ड्रायर या वाक्युम ड्रायर के द्वारा कृत्रिम रूप से सुखाए गए फल एवं सब्जियाँ पौष्टिक तो हैं परंतु इस प्रक्रिया से उनकी असली रुचि और रंग खो जाते हैं। फलों एवं सब्जियों का फ्रीज़ ड्रायिंग अच्छी गुणवत्ता और लंबी भंडारण अवधि सुनिश्चित करता है पर यह तरीका बहुत महंगा है। इसलिए नारियल टुकड़ों को शक्कर के घोल में डुबोकर फिर गरम हवा से सुखाकर ओसमोटिक निर्जलीकरण किया जाता है। मीठे नारियल चंक्स तैयार करने केलिए इस प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता है। नारियल चंक्स बच्चे और बूढ़े के लिए खाने के लिए उत्तम स्नैक है।

## मीठे नारियल चंक्स के उत्पादन की प्रक्रिया

इस प्रक्रिया में दस महीने या उससे ऊपर के ताज़ा हरे नारियलों का उपयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया में छिलके, खोपड़ी और गरी का छिलका निकालना,

**सारणी 2**
**नारियल गरी से मीठे नारियल चंक्स मिलने का अनुपात**
**गरी के वज़न के अनुसार**

| गरी | टेस्टा | सफेद गरी | ओस्मोटिक निर्जलीकरण के बाद टुकड़े | नारियल चंक्स |
|---|---|---|---|---|
| 852 | 102 ग्रा. (11.9 %) | 750 ग्राम (88 %) | 683 ग्राम (80.1%) | 650 ग्राम (76.2 %) |

**सारणी 3 लागत प्राक्कलन**

| | |
|---|---|
| **पूँजी व्यय** | |
| होट एयर अवन ड्रायर (50 से 100 नारियल)की लागत | 2.5 लाख रुपए |
| औज़ार उपकरण/ बर्तन की लागत | 60,000 रुपए |
| **100 नारियल के प्रसंस्करण करने केलिए** | |
| नारियल की लागत प्रति नारियल 15 रुपए की दर पर | 1500 रुपए |
| सामग्रियों की लागत | 1100 रुपए |
| आवश्यक श्रमिक | 3 |
| ईंधन की लागत | 300 रुपए |
| पैकेजिंग सामग्री की लागत (200 ग्राम के 100 पैकट) | 250 रुपए |
| 100 नारियल (25 कि.ग्रा गरी) से प्राप्त नारियल चंक्स | 18.75 कि ग्रा |

पहले ताज़ा पानी में और फिर गरम पानी में धोना आदि शामिल हैं। नारियल गरी को फिर एक इंच लंबाई के अनियमित टुकड़ों में काटा जाता है। इन टुकड़ों को फिर पोटेशियम मेटासल्फाइट मिलाए गए उबले पानी में ब्लैंच किया जाता है। गरी को ठोस बनाने के लिए पतले कैलशियम हाइड्रोक्साइड घोल में और आलम घोल में उसका पूर्वोपचार किया जाता है। फिर टुकड़ों को सुखाया जाता है और बहते पानी के नीचे धोया जाता है।

$50^0$ ब्रिक्स के शक्कर सिरप में नारियल टुकड़ों को डुबोकर रखा जाता है। अगले दिन सिट्रिक एसिड मिलाकर घोल को 10 मिनट तक फिर उबाला जाता है। इस प्रक्रिया को लगातार पाँच दिनों के लिए विभिन्न ब्रिक्स स्तर पर शक्कर घोल $80^0$ ब्रिक्स होने तक दोहराया जाता है । फिर वयर मेश से छानकर शक्कर घोल को निकाला जाता है। ओस्मोटिक प्रणाली से निर्जलीकृत इन नारियल टुकड़ों को गरम हवा ड्रायर के ज़रिए कम तापमान में ($50^0$ सेंटी ग्रेड में) गरम किया जाता है। उसके ऊपर शक्कर का एक हल्का परत लगाया जाता है। वैनिला, रोसवाटर आदि फ्लेवर इस उत्पाद के लिए उत्तम है। खोपड़ी निकाले गए नारियल से मीठे नारियल चंक्स मिल जाने का अनुपात सारणी 2 में दिया गया है।

**सारणी 4**
**नारियल चंक्स का पौष्टिक मूल्य**

| पैरामीटर | मूल्य (%) |
|---|---|
| नमी | 4.2 |
| कार्बोहाइड्रेट | 64.14 |
| प्रोटीन | 2.8 |
| वसा | 24.5 |
| कुल खनिज | 0.38 |
| आहारीय रेशा | 15.85 |
| कच्चा रेशा | 2.87 |

*स्रोत: नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था*

## मीठे नारियल चंक्स का पैकेजिंग

मीठा नारियल चंक्स सामान्य रूप से वायु से पानी सोख लेता है। आपेक्षिक आर्द्रता स्तर 70-75 प्रतिशत से अधिक होने पर नारियल चंक्स नमी सोख लेता है। 70 प्रतिशत से ऊपर आपेक्षिक आर्द्रता स्तर आम बात है और इससे नारियल चंक्स की भौतिक, रासायनिक तथा जैविक गुणवत्ता मानकों पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए नमी को रोकने की उच्च क्षमतायुक्त पैकिंग सामग्रियों का उपयोग करना आवश्यक है। तीन परत वाला लैमिनेशन उपयुक्त होगा। मीठे नारियल चंक्स वैसे ही खा सकते हैं। इसको कैंडी की तरह चूसा जा सकता है तथा यह पारंपरिक भारतीय मिष्टान्न आग्रा पेठे से मिलता जुलता है।

## तकनीकी जानकारी

नारियल चंक्स बनाने की तकनीकी जानकारी नारियल विकास बोर्ड प्रौद्योगिकी संस्था, कीनपुरम, दक्षिण वाय़क्कुलम डाक, आलुवा-680 105 में उपलब्ध है।

# नारियल की भूमि से बोतल बंद डाब पानी सिप ओ नट

**सीडीबी न्यूज़ ब्यूरो, कोची-11**

डाब पानी मानवजाति को कुदरत का वरदान है। वह स्फूर्तिदायक पेय विटामिनों, खनिजों, अमिनो अम्लों, आदि से समृद्ध है। डाब पानी में निहित साइटोकिनिन उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने में सहायक है और इसको कैंसर रोधी और धमनी में खून का थक्का जमने से रोकने के गुण होते हैं। इस प्रकार अनगिनत गुणों से भरपूर डाब पानी को बोतल में बंद करके 'सिप ओ नट' के ब्रैंड नाम पर बाज़ार में ला रहे हैं केरल के पालक्काट में स्थित एग्रिकोल्स नैचुरल फुड्स प्रा.लिमिटेड।

केरल राज्य की सबसे प्रथम डाब प्रसंस्करण इकाई है एग्रिकोल्स। इसका औपचारिक रूप से उद्घाटन 14 मार्च 2016 को संपन्न हुआ। उत्पाद का ब्रैंड नाम है सिप ओ नट। कंपनी के प्लांट का पालक्काट जिले में वण्णमटा के पास मूलाक्कटा में एक एकड़ ज़मीन पर 4000 वर्गफीट के मकान में कार्यारंभ हुआ है। प्लांट में 15000 डाब का प्रसंस्करण करके बोतलबंद करने की क्षमता है। पूरी तरह मशीनीकृत प्लांट में दस कामगार काम कर रहे हैं। ये सब प्लांट के आसपास रहनेवाली महिलायें हैं। प्रारंभ में प्लांट सिर्फ दिन में ही कार्यरत रहता है।

पालक्काट जिले के नारियल बागों से डाब एकत्रित करके सीधे प्लांट में पहुँचाकर 24 घंटे के अंदर प्रसंस्करण करने की व्यवस्था की गई है। कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री टी सतीश और निदेशक श्री विजयराघवन ने बताया कि आसपास के इलाकों के नारियल किसानों से डाब एकत्रित करने के संबंध में करार कर चुका है। कंपनी छः से आठ महीने तक पके डाब एकत्रित करके उन डाबों से पानी निकालकर प्रसंस्करण करके बोतलबंद कर रही है। किसानों से एकत्रित डाब का भाव वर्तमान बाज़ार दरों के अनुसार निश्चित किया जाता है। पालक्काट नारियल उत्पादक कंपनी के प्राधिकारियों से भी एग्रिकोल ने डाब के एकत्रीकरण के बारे में बातचीत की है। नारियल पेड़ से डाब बिना किसी क्षति पहुँचाए गुच्छे सहित नीचे उतारकर कंपनी में पहुँचाने का दायित्व किसान पर निर्भर है।

डाब पानी के प्रसंस्करण के लिए एग्रिकोल्स नैच्युरल्स कंपनी मैसूर स्थित रक्षा खाद्य अनुसंधान संस्था (डीएफआरएल) की प्रौद्योगिकी अपना

रही है। डीएफआरएल ने चार लाख रुपए पर यह प्रौद्योगिकी कंपनी को अंतरित की है। डीएफआरएल ने नारियल विकास बोर्ड की वित्तीय सहायता से इस प्रौद्योगिकी का विकास किया था, इसलिए नारियल विकास बोर्ड के ज़रिए प्रौद्योगिकी का अंतरण किया गया। नारियल विकास बोर्ड की सहायता की पहली किस्त भी कंपनी को दी जा चुकी है। इसके अलावा, लघु कृषक कृषि-व्यापार संघ (एसएफएसी) के वेंच्युर कैपिटल समर्थन भी कंपनी को प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त आईएसओ 22000, एचएसीसीपी जैसे गुणवत्ता स्तरों के आधार पर कंपनी में काम हो रहा है।

इस प्रसंस्करण इकाई में कामगारों को करने के लिए एक ही काम है - डाब को अच्छी तरह साफ करके पहले मशीन पर रखना। बाकी सारे काम मशीन ही करेंगे। डाब को बिना फोडके सिरिंज के जरिए भीतर का पानी निकालकर उसका पास्तुरीकरण किया जाता है। उसके बाद 200 मि.ली. के पोली प्रोपलीन बोतलों में बंद करके बारह बोतलों के कार्टनों में पैक किया जाता है। यह पूरी व्यवस्था यंत्र चालित है और कंप्यूटर नियंत्रित है। इस इकाई की पूरी यंत्र सामग्रियों की कीमत 85 लाख रुपए है और इसकी रूपरेखा तैयार करके निर्माण किया है कोयम्बत्तूर स्थित एक्सपैक मशीन्स ने। पास्तुरीकरण के पहले उत्पाद की

गुणवत्ता की जाँच करके स्वाद (शर्करा की मात्रा) एकसमान बनायी जाती है। क्योंकि नारियल की किस्म, उगनेवाले इलाके, जलवायु, आयु इन सबके आधार पर डाब पानी के स्वाद में हल्का-सा अंतर होगा। इसको छोड़कर, और किसी प्रकार के रासायनिक या परिरक्षक उत्पाद में नहीं मिलाया जाता है। कंपनी के प्राधिकारियों ने दावा किया है कि सामान्य तापक्रम में यह उत्पाद नौ महीने तक खराब नहीं हो जाता है।

डाब पानी लेने के बाद जो डाब बच जाते हैं उन्हें वैसे ही सुखाकर पास्तुरीकरण इकाई के लिए आवश्यक ईंधन बनाया जाता है। इसलिए किसी भी प्रकार की पर्यावरण समस्यायें उत्पन्न नहीं होती हैं। कंपनी के लिए आवश्यक साफ पानी की पूर्ति कंपनी परिसर के कुएँ से होती है।

कंपनी में जो डाब पानी का उत्पादन होता है उसका 40 प्रतिशत निर्यात करने का उद्देश्य है। साउदी अरब, यूएई आदि देशों से व्यापार संबंधी पूछताछ प्राप्त हो रही हैं। इसके अतिरिक्त, देशी विपणन के लिए दिल्ली, मुंबई, पुणे आदि शहरों की एजेंसियों से कंपनी ने करार बना लिया है।

कंपनी का पूँजी निवेश 2.3 करोड़ रुपए है और कंपनी के 12 शेयरधारियाँ और तीन निदेशक हैं। शेयरधारियों में तृश्शूर जिले और आसपास के इलाकों के चार्टेड अकाउंटेंड, इंजीनियर, वकील आदि सारे क्षेत्रों में कार्यरत लोग हैं। निदेशकों में से श्री सतीश और श्री विजयराघवन एक ही परिवार के सदस्य हैं। श्री सतीश को विदेश में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में 18 वर्षों का अनुभव प्राप्त है। श्री विजयराघवन भारतीय स्टेट बैंक के भूतपूर्व सहायक महा प्रबंधक है। अधिक जानकारी के लिए:- श्री टी सतीश, मोबः 9846233638

# नीरा उतारने में कुशल नारियल किसानों की विजयगाथा

*षाजु अप्पच्चन*

**केरल के कण्णूर जिले में कार्यरत तेजस्विनी प्रोडच्यूसर कंपनी लिमिटेड के 31 नारियल किसान कौशल विकास कार्यक्रमों के जरिए रिकार्ड आय कमा रहे हैं। किसान अपने नारियल पेड़ों से अपने आप नीरा उतार रहे हैं और कंपनी को नीरा दे रहे हैं। ये किसान एकसाथ 7,91,700 रुपए प्रति महीने रिकार्ड आय कमाते हैं।**

केरल के लोगों के बीच अभी हाल ही तक प्रचलित एक विश्वास था कि रबड़ का आधा एकड़ बाग है तो जीवन खुशहाल रहेगा। लेकिन वह समय बीत गया, अब किस्सा नीरा का हो गया है। लोग कहने लगे हैं कि अगर आप के पास 10 नारियल पेड़ है तो नीरा निकालकर खुशहाल जीवन बिता सकते हैं। किन्तु रबड़ हो या नारियल, किसान कामगारों की सहायता से काम कर रहे हैं। नारियल खेती के विषय में पौधा संरक्षण कार्यों में, नीरा उतारने में, तुड़ाई में जैसे सभी काम के लिए किसान कामगारों पर निर्भर करते हैं।

लेकिन अब किस्सा अलग है। तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी के किसान नई गाथा रचा रहे हैं। जब तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी के सदस्य नारियल उत्पादक फेडरेशनों को नीरा के उत्पादन करने का लाइसेंस प्राप्त हुआ था तब किसान दुविधा में थे कि नीरा उतारने के लिए अपेक्षित नीरा तकनीशियनों को उपलब्ध होगा या नहीं। इसलिए एहतियाती तौर पर कई किसानों ने प्रशिक्षण पाकर नीरा उतारने की तकनीकी अपना ली।

तेजस्विनी कंपनी के उदयगिरी, चेरुपुष़ा और आलाक्कोट नारियल उत्पादक फेडरेशन के सदस्य किसान अपने नारियल पेड़ों से नीरा उतार रहे हैं। ये युवा किसान जो 41 वर्षों की कम आयुवाले हैं, प्रतिदिन 2 से 10 नारियल पेड़ों से नीरा उतार रहे हैं और 8320 रुपए से 63,700 रुपए तक मासिक आय कमा रहे हैं।

इन किसानों में सबसे अधिक आय कमा रहे हैं उदयगिरी फेडरेशन के षाजु अप्पच्चन। 41 वर्षीय षाजु को जनवरी महीने तेजस्विनी कंपनी से किसान और नीरा तकनीशियन के हिस्से के रूप में 63700 रुपए मिले। उन्होंने पिछले वर्ष नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण पूरा किया और वे प्रतिदिन 10 नारियल पेड़ों से

नीरा उतार रहे हैं। उनके शब्दों में, "खेती से मुझे जो हानि हुई उसकी पूर्ति मैं नीरा उतारने से प्राप्त कमाई से कर रहा हूँ। निष्ठापूर्वक कठिन परिश्रम के लिए तैयार है तो, नीरा अवश्य तुम्हारी रक्षा करेगी।"

कमाई में अगले स्थान पर आता है चेरुपुष्पा फेडरेशन के मनोज मेक्कलात। मनोज आठ नारियल पेड़ों से नीरा उतारकर 54,860 रुपए की मासिक आय कमाते हैं। उनके तीन एकड़ नारियल बाग में 150 नारियल पेड़ हैं। "अपने बाग में छिपा खजाना पहचानने में देरी हुई। अब मेरे नारियल पेड़ों से जो कमाई प्राप्त हो रही है सपने में भी मैं ने इतना नहीं सोचा था।" मनोज ने बताया।

तीसरे स्थान पर उदयगिरी फेडरेशन के स्टेनी सेबास्टियन है। उनके पाँच एकड़ नारियल बाग में 160 नारियल पेड़ हैं। 6 नारियल पेड़ों से नीरा उतारने से 34320 रुपए की मासिक आय कमा रहे हैं स्टेनी।

उदयगिरी फेडरेशन के सदस्य सिबी को अपने बीस नारियल पेड़ों में से छः पेड़ों से नीरा उतारकर 32500 रुपए की आय प्राप्त हुई। और उसी फेडरेशन के जस्टिन की अपने छः पेड़ों से 30940 रुपए की मासिक आय मिली। रोबिच्चन और राजेट दोनों भाई हैं और उदयगिरी फेडरेशन के सदस्य हैं। रोबिच्चन को अपने छः नारियल पेड़ों से 30680 रुपए और राजेट को पाँच पेड़ों से 25480 रुपए प्राप्त हुआ। उसी फेडरेशन के सदस्य बिजू अपने छः नारियल पेड़ों से नीरा उतारने से मासिक तौर पर 26000 रुपए कमा रहे हैं।

सुजित फिलिपि, प्रिन्स और मोहनन उदयगिरी फेडरेशन के नारियल किसान हैं जिन्होंने अपने पाँच पेड़ों से नीरा उतारने से क्रमशः 25480 रुपए, 24700 रुपए

## नीरा उतारनेवाले नारियल किसानों की सूची

| क्र.सं. | नारियल किसान का नाम | फेडरेशन का नाम | नीरा कितने पेड़ों से उतारी गई | किसानों की मासिक आय (रुपए में) | प्रति पेड़ किसानों की औसतन मासिक आय (रुपए में) |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | षाजु | उदयगिरी | 10 | 63,700 | 6370 |
| 2 | मनोज | चेरुपुष्पा | 8 | 54,860 | 6858 |
| 3 | शशिधरन | चेरुपुष्पा | 6 | 48,360 | 8060 |
| 4 | सिबी | चेरुपुष्पा | 8 | 46,540 | 5818 |
| 5 | जोस | चेरुपुष्पा | 6 | 35,880 | 5980 |
| 6 | स्टेनी | उदयगिरी | 6 | 34,320 | 5720 |
| 7 | सिबी पी सी | उदयगिरी | 6 | 32,500 | 5417 |
| 8 | सैम्सन | चेरुपुष्पा | 5 | 32,240 | 6448 |
| 9 | जस्टिन | उदयगिरी | 6 | 30,940 | 5157 |
| 10 | रोबिच्चन | उदयगिरी | 6 | 30,680 | 5113 |
| 11 | बिजु तय्यिल | उदयगिरी | 6 | 26,000 | 4333 |
| 12 | राजेट | उदयगिरी | 5 | 25,480 | 5096 |
| 13 | सुजित | उदयगिरी | 5 | 25,480 | 5096 |
| 14 | प्रिन्स | उदयगिरी | 5 | 24,700 | 4940 |
| 15 | मोहनन | उदयगिरी | 5 | 21,320 | 4264 |
| 16 | राजेश | उदयगिरी | 4 | 20,540 | 5135 |
| 17 | मैथ्यू | उदयगिरी | 5 | 20,280 | 4056 |
| 18 | जस्टिन | उदयगिरी | 4 | 19,240 | 4810 |
| 19 | जिनु जोसफ | उदयगिरी | 4 | 18,720 | 4680 |
| 20 | जोबिन | आलक्कोट | 4 | 18,200 | 4550 |
| 21 | सिरिल सी आर | उदयगिरी | 4 | 18,200 | 4550 |
| 22 | तोमस | आलक्कोट | 4 | 17,940 | 4485 |
| 23 | बेन्नी | उदयगिरी | 4 | 17,940 | 4485 |
| 24 | अभिलाष | चेरुपुष्पा | 3 | 17,940 | 5980 |
| 25 | पौलोस | आलक्कोट | 4 | 17,680 | 4420 |
| 26 | सजी पी वी | आलक्कोट | 4 | 16,900 | 4225 |
| 27 | बिनीश | उदयगिरी | 4 | 16,900 | 4225 |
| 28 | बिजु के ए | आलक्कोट | 3 | 12,480 | 4160 |
| 29 | बिजु सक्करिया | आलक्कोट | 2 | 9,100 | 4550 |
| 30 | बिजु जोसफ | आलक्कोट | 2 | 8,320 | 4160 |
| 31 | सोमी चाक्को | आलक्कोट | 2 | 8,320 | 4160 |
| | **कुल** | | **150** | **791700** | |

और 21320 रुपए जनवरी महीने कमाया। उसी फेडरेशन के राजेश, जेस्टिन, जिनू और सिरिल ने अपने चार पेड़ों से नीरा उतारकर क्रमशः 20540 रुपए, 19240 रुपए, 18720 रुपए और 18200 रुपए की मासिक आय कमायी। पी टी मैथ्यू ने अपने पाँच पेड़ों से 20,280 रुपए कमाया।

आलाक्कोट फेडरेशन के सदस्य जोबिन कुरुविला और कुन्नत तोमस ने अपने चार पेड़ों से 18200 रुपए और 17940 रुपए कमाया। पौलोस, बिनीश कुमार और साजी ने अपने चार पेड़ों से नीरा उतारकर क्रमशः 17680 रुपए, 16900 रुपए और 16900 रुपए कमाया। बैजु दूसरा किसान है जिन्होंने अपने तीन पेड़ों से 12,480 रुपए कमाया। उसी फेडरेशन के बिजू और सोमी ने दो पेड़ों से 8320 रुपए के हिसाब से मासिक आय कमायी।

तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी के अध्यक्ष श्री सण्णी जोर्ज ने सूचित किया कि किसान लोग अपने आप नीरा उतारना शुरू करने से नीरा के पीएच गुणवत्ता में सुधार आया है। किसान बेहतर पीएच स्तर बनाए रखने में अत्यंत सावधानी बरतते हैं क्योंकि तभी उन्हें अच्छा दाम मिलेगा। कंपनी की उम्मीद है कि भविष्य में सारे सदस्य किसान अपने आप नीरा उतारेंगे। केरल में यह पहली बार किसानों ने अपने आप नीरा उतारने लगे हैं। यह नमूना सारे कृषक संगठन अपना सकते हैं।

इन किसानों के परिवार और पडोसी तक आसानी से नीरा उतारने के लिए अधिकाधिक बौने पेड़ लगाने की इच्छा करते हैं। ऐसे बौने पेड़ों से पाँचवें वर्ष से लेकर नीरा उतार सकते हैं। ये किसान अपने ज़मीन के आधे हिस्से में बौने पेड़ लगाने के बारे में सोच रहे हैं।


# बोर्ड की पत्रिकाओं की विज्ञापन दर

नारियल विकास बोर्ड के प्रकाशन हैं इंडियन कोकोनट जर्नल (अंग्रेज़ी) इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम), भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी), भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़), इंडिया तेन्नै इदष़ (तमिल), भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु) तथा भारतीय नारल पत्रिका (मराठी)।

इन पत्रिकाओं में वैज्ञानिक नारियल कृषि तथा नारियल उद्योग से संबंधित लेख प्रकाशित करते आ रहे हैं। इन पत्रिकाओं के अधिकांश ग्राहक किसान, अनुसंधानकर्ता, उद्योगपति, व्यापारी, पुस्तकालय आदि हैं।

| विज्ञापन के आकार | इंडियन कोकनट जर्नल (अंग्रेज़ी पत्रिका) | इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम पत्रिका) | इंडिया तेन्नै इदष़ (तमिल त्रैमासिक) | भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़ त्रैमासिक) | भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी त्रैमासिक) | भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु अर्धवार्षिक) | भारतीय नारल पत्रिका (मराठी अर्धवार्षिक) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | Nil | Nil | 5000 | 5000 | Nil | 5000 | 5000 |
| पूरा पृष्ठ (रंगीन) | 20000 | 20000 | 10000 | 10000 | 5000 | 10000 | 10000 |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | Nil | Nil | 3000 | 3000 | Nil | 3000 | 3000 |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | Nil | Nil | 1500 | 1500 | Nil | 1500 | 1500 |
| बाहरी पृष्ठ का भीतरी भाग (रंगीन) | 25000 | 25000 | 10000 | 10000 | 8000 | 10000 | 10000 |
| बाहरी पृष्ठ (रंगीन) | 30000 | 30000 | 15000 | 15000 | 10000 | 15000 | 15000 |

* प्रत्येक पत्रिका में एक बार विज्ञापन देने की दर।

पत्रिका के किन्हीं दो अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 10 प्रतिशत की तथा तीन या अधिक अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 12 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। मान्य विज्ञापन एजेंसियों को 15 प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

# नीरा तकनीशियन के रूप में रोज़गार के अवसर- मासिक आय लगभग 50,000 रुपए

नारियल क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम नीरा और नीरा उत्पादों का इंतज़ार लंबे अरसे से हो रहा था और अब ये हकीकत बन गए हैं। देशी और विदेशी बाज़ारों में स्वास्थ्यदायक पौष्टिक पेय के रूप में इस उत्पाद की मांग बढ़ती जा रही है। केरल के 440 नारियल उत्पादक फेडरेशनों को, हरेक फेडरेशन के लिए 5000 ताड़ों से, नीरा उतारने की अनुमति दी गई है। इस हिसाब से हम नीरा उतारने के लिए कुल 22,00,000 ताड़ों का उपयोग कर सकते हैं। एक नीरा तकनीशियन कम से कम 10 ताड़ों से नीरा उतार सकता है और इसके अनुसार केरल में ही 2,20,000 तकनीशियनों को रोज़गार के लिए अवसर उपलब्ध है।

नीरा उत्पादन में कुशल नीरा तकनीशियनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना सबसे महत्वपूर्ण है। प्रति दिन कम से कम 10 ताड़ों से नीरा उतारने वाले नीरा तकनीशियन प्रति महीने 20,000 रुपए तक वेतन कमा सकता है। कई नीरा तकनीशियन इससे भी अधिक पेड़ों से नीरा उतारकर प्रति महीने 50,000 रुपए से भी अधिक कमा रहे हैं।

नारियल विकास बोर्ड की नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था परंपरागत ताड़ी टैपरों के लिए नीरा मास्टर तकनीशियन प्रशिक्षण आयोजित कर रही है ताकि

दो हफ्ते का तीव्र प्रशिक्षण देकर इन्हें नीरा मास्टर तकनीशियन के रूप में काबिल बनाया जा सके। नीरा तकनीशियन बनने में इच्छुक व्यक्ति नारियल उत्पादक कंपनियों और नारियल उत्पादक फेडरेशनों के द्वारा आयोजित छह हफ्ते का नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

प्रशिक्षण मोड्यूल में तकनीकी, प्रबंधकीय और व्यावहारिक सत्र शामिल हैं। यह बाग स्तर पर होने वाला काम होने के कारण व्यावहारिक प्रशिक्षण को ज्यादा अहमियत दी गई है। इन सत्रों के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को नीरा उतारने की कला में माहिर बनाने के लिए पेड़ पर चढ़ने, पुष्पक्रम को सही ताकत से और सही आवृत्ति में पीटने, पुष्पक्रम का नोक काटने और कीटाणुनाशक लगाने, पुष्पक्रम को बांधने और आसवित जल से नीरा इकट्ठा करने वाले कैनों को साफ करने में प्रशिक्षण दिया जाता है और अन्य गतिविधियाँ जैसे योगा, प्रतियोगिताएं, शैक्षणिक खेलकूद आदि चलाई जाती हैं। ये कार्यकलाप उनको मानसिक और शारीरिक तौर पर मज़बूत बना देते हैं। इस प्रशिक्षण से व्यक्ति को जीने का असली कौशल हासिल होता है जिससे वह अपना जीवन स्तर सुधार सकता है। सातवें और आठवें हफ्ते के प्रशिक्षण के दौरान हरेक नीरा तकनीशियन ऑन जॉब (काम करने का) प्रशिक्षण के लिए भी जाता है।

अब तक, नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था ने 469 मास्टर नीरा तकनीशियनों को और नारियल उत्पादक कंपनी/ नारियल उत्पादक फेडरेशनों ने 2294 नीरा तकनीशियनों को प्रशिक्षित किया है। केरल में इस काम में इच्छुक लोगों की कमी के कारण कई नारियल उत्पादक कंपनियाँ असम, बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और झारखंड के लोगों को प्रशिक्षण दिला रही हैं।

केरल सरकार द्वारा गरीबी कम करने के लिए महिलाओं को लक्षित करके सामुदायिक आधार पर शुरू की गई पहल कुटुंबश्री, स्वयं सहायता समूहों का गठन करके महिलाओं के सशक्तिकरण पर ध्यान केन्द्रित कर रही है। इन्होंने राजगिरी कालेज ऑफ सोशियल साइंसेस, कोची के ज़रिए 500 महिलाओं को नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण प्रदान करने की परियोजना बनाई है। 25 प्रशिक्षणार्थियों वाले पहले बैच ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा किया है। यह तीन महीने का प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत

सरकार के दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना का भाग स्वरूप आयोजित किया जाता है। प्रशिक्षण निःशुल्क प्रदान किया जाता है और प्रशिक्षणार्थियों को यूनिफोर्म एवं अध्ययन सामग्रियाँ मुफ्त में देने के साथ साथ वृत्तिका भी प्रदान की जाती है। सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को नारियल उत्पादक फेडरेशनों में काम पर लगाया जाता है।

नीरा तकनीशियन के रूप में नई ग्रीन कॉलर नौकरी ग्रामीण क्षेत्र के बेरोज़गार लोगों को, विशेषतया युवा जनता के लिए उम्मीद की किरणें दिखा रही है जिसके ज़रिए वे अपने जीवन स्तर में महत्वपूर्ण सुधार ला सकते हैं।


## Statement of ownership and other particulars about the BHARATIYA NARIYAL PATRIKA

**FORM IV**
**(See Rule 8)**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | Place of Publication | : | Kochi - 11 |
| 2. | Periodicity of Publication | : | Quarterly |
| 3. | Printer's Name | : | Rajeev P.George |
| | Nationality | : | Indian |
| | Address | : | Chief Coconut Development Officer<br>Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala. |
| 4. | Publisher's Name | : | Rajeev P.George |
| | Nationality | : | Indian |
| | Address | : | Chief Coconut Development Officer<br>Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala |
| 5. | Editor's Name | : | Beena S. |
| | Nationality | : | Indian |
| | Address | : | Assistant Director (OL)<br>Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala |
| 6. | Names and address of individuals who own the newpaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital | : | The periodical is owned by the Coconut Development Board which is a body corporate set up by the Government of India under the Coconut Development Board Act, 1979. |

I, Rajeev P.George, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Date : 15-3-2016

(Rajeev P.George)
Publisher

# नारियल बागों में मासिक कार्य

## अप्रैल से जून तक

### अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह

**अप्रैल**

पहले ही बनाए गए गड्ढ़ों के आधे भाग तक लकड़ी की राख, रेत और ऊपरी मिट्टी के मिश्रण से भरें। उसके मध्य भाग में बनाए छिद्र में पौध लगाएं। गड्ढ़े के चारों ओर बंद बनायें। गैंडा भृंग के प्रकोप को रोकने के लिए सभी फलदायी ताड़ों के शिखरों को साफ करें और सबसे ऊपर के 2-3 पर्ण कक्षों को रेत और 2 से 3 नैफ्थालीन गोलियों को भरें।

**मई**

नर्सरियों में पानी देना जारी रखें। यदि शुष्क मौसम चल रहा है तो ताड़ों को सिंचित करें। जलनिकासी सुचारू बनाने के लिए बंधों और नालों की मरम्मत करें। बीजफलों को इकट्ठा करें। पौद तैयार करने के लिए नर्सरियों की स्थापना करें। नई रोपाई और प्रतिरोपाई हेतु दोनों तरफ 7.5 मीटर की दूरी पर बलुई और बलुई दुमट मिट्टी में 100 घन सें.मी. का और मटियारी मिट्टी में 60 घन सें.मी. का गड्ढ़ा खोदें। एकल बाड़ा प्रणाली में 6मी. x 9मी. का और द्विबाड़ा प्रणाली में 6मी. x 6मी. x 9मी. का अंतरण दें। उत्तर दक्षिण दिशा में कतारों की तैयारी करें। जल जमाव वाले क्षेत्रों में मटियारी और रेतीली मिट्टी बारी बारी से डालकर टीला तैयार करके प्रतिरोपण किया जाए। ताड़ों की कतारों के बीच में 50 सें.मी. चौड़ाई और 60 सें.मी. गहराई की रेखीय खाई तैयार करें। छिलकों को खाइयों में उनका अवतल भाग ऊपर की तरफ करके एक के ऊपर एक करके रखकर मिट्टी से ढक दें। जहाँ हर साल

कलिका विगलन पाया जाता है ऐसे क्षेत्रों के सभी ताड़ों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का रोगनिरोधी छिड़काव करें। बीच की खाली जगहों पर सब्जियों और अंतराफसलों की खेती करें।

**जून**

ताड़ के चारों ओर 2 मीटर की दूरी पर थाला बनाएं। प्रति ताड़ 25 से 50 किलो ग्राम गोबर या कंपोस्ट और 10-20 किलो ग्राम राख डाल दें और थालों को मिट्टी से ढक दें। नर्सरी से खरपतवार निकाल दें।

### आंध्र प्रदेश

**अप्रैल**

नर्सरी क्यारियां तैयार करें। यदि दीमक आक्रमण है तो बलुई मृदा में नर्सरी तैयार करें या नर्सरी क्यारियों में नदी की रेत की मोटी परत डालें या नर्सरी क्यारियों में 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरीफोस से 20 से 25 दिन के अंतराल में दो बार उपचार करें। क्यारियों में बीजफल बोएं। यदि नारियल छिलका उपलब्ध हैं तो ताड़ों की कतारों के बीच 3 मीटर की दूरी पर बनाई गई खाई में या तने से 2 मीटर की दूरी पर ताड़ों के चारों ओर बनाई गई वृत्ताकार की खाइयों में गाड़ दें। छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर करते हुए परतों में छिलका गाड़ दें। छिलका गाड़ने से नमी बरकरार रहती है और पोषकतत्व खासतौर से पोटैश की आपूर्ति होती है। छिलका गाड़ने का अनुकूल प्रभाव 5 से 7 साल तक मिलता रहेगा। वयस्क ताड़ों के थालों में उर्वरकों की पहली मात्रा यानी 400 ग्राम यूरिया, 700 ग्राम सिंगल सूपरफोस्फेट और 750 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश आदि दें। प्रति ताड़ दो टोकरा भर हरी खाद का प्रयोग करें और इसे मृदा से ढक दें तथा थालों की सिंचाई करें। यदि पशु खाद उपलब्ध हो तो उपर्युक्त खादों के साथ 25 कि.ग्रा. पशु खाद का प्रयोग करें। उपलब्धतानुसार एक चौथाई कार्टलोड टंकी गाद का प्रयोग करें। मुख्य खेतों में एक वर्ष की

आयुवाले बीजपौधों की रोपाई करें। यदि कृष्णशीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो रोग ग्रस्त पत्तों को काटकर जलाएं ताकि रोग कीटों का फैलाव रोका जा सके। रोगग्रस्त ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवोस या 0.05 प्रतिशत मैलाथियन का छिड़काव करें।

रोगकीटों की अवस्थानुसार वयस्क ताड़ों पर उस अवस्था के लिए सक्षम विशेष परजीवियों को छोड़ दें। रोगकीटों की बहु-अवस्था स्थिति में सभी परजीव्याभों को एक साथ छोड़ देना आवश्यक है। जब प्रारंभिक पीड़कनाशी से उपचार किया जाए तो छिड़काव करने के तीन हफ्ते बाद परजीव्याभों को छोड़ दिया जाए।

यदि उस क्षेत्र में दीमक की परेशानी हो तो नर्सरी रेतीली मृदा में तैयार करें या क्यारियों पर नदी की रेत की मोटी परत डाल दें या 20 से 25 दिनों के अंतराल में दो बार क्यारियों को 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से शराबोर करें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

**मई**

बागों में नियमित रूप से सिंचाई करें। अगर आवश्यक है तो सिंचाई नालों को साफ करें। नारियल थालों में नारियल छिलका, कयर गूदा आदि से पलेवा करके मृदा की नमी संरक्षित रखने की कोशिश करें। चुने गए मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करें। बागों की जुताई करें और मृदा उर्वरता बढ़ाने के लिए हरी खाद के बीजों की छिटका बुवाई करें। मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए बागों में तालाबों की गाद डाल दें। फलों का झड़ना रोकने के लिए झुके हुए गुच्छों को बाँध दें। यदि कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो इससे पीड़ित ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवोस या 0.05 प्रतिशत मैलाथियॉन से छिड़काव करें और छिड़काव के तीन हफ्ते बाद डिंभक या प्यूपा अवस्था के परजीवियों को छोड़ दें। यदि बरूथी का प्रकोप पाया गया है तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें।

**जून**

यदि मई में उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया है तो उर्वरकों का अभी प्रयोग करें। मुख्य खेत में पौदों का रोपण करें। गैंडा भृंग के रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे अंदर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम मरोट्टि चूर्ण/नीम खली के साथ उसी मात्रा में रेत मिलाकर भरें या नैफ्थलीन गोली (प्रति ताड़ 12 ग्राम) रखें और उसे मिट्टी से ढक दें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

## असम

**अप्रैल**

मुख्य खेत में पौदों का रोपण जारी रखें। नवरोपित पौदों के गड्ढ़ों में जमा बरसाती पानी नियमित रूप से बाहर बहा दें। पेड़ों के शिखर की सफ़ाई करें और फलगुच्छों का झुकाव रोकने हेतु उन्हें बाँध लें या सहारा दें। रोगों से बचाने हेतु रोगनिरोधी उपाय अपनायें। अगर दीमक का प्रकोप पाया जाता है तो 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से 20 से 25 दिनों के अंतर से दो बार नर्सरी क्यारियों एवं नवरोपित पौदों के थालों की मृदा को अच्छी तरह शराबोर करें। पत्ता सड़न रोग की रोकथाम हेतु सड़े हुए हिस्सों को काटकर निकालने के बाद तर्कु पत्ते के मूलभाग के चारों ओर प्रति ताड़ 300 मि.ली.पानी में 2 मि.ली. की दर पर कॉनटैफ 5 ईसी या 300 मि.ली.पानी में 3 ग्राम मैंकोज़ेब डाल दें।

**मई**

मुख्य खेतों में गुणवत्तापूर्ण पौदों की प्रतिरोपाई करें। यदि चाहिए तो सिंचाई जारी रखें। उर्वरकों की पहली मात्रा यानि 500 ग्राम यूरिया, 1000 ग्राम सिंगल सूपर फोसफेट (एसएसपी), 1000 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश (एम ओ पी) और 25 ग्राम बोरैक्स इस अवधि के दौरान दें। यदि फलों का झड़ना और फलों का टूटना पाया जाए तो पोटैश की मात्रा बढ़ाएं। एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का रोगनिरोधी छिड़काव करें। यदि गैंडा भृंग

के प्रकोप से बचने के लिए मार्च में कोई उपचार नहीं किया गया है तो पर्णकक्षों में 25 ग्राम सेविडोल (8 जी) और 250 ग्राम महीन रेत के मिश्रण से भर दें।

**जून**

प्रतिरोपित पौधों के गड्ढ़ों में बारिश का पानी जमने न दें। ताड़ के शिखरों को साफ करें। यदि तना स्रवण रोग पाया गया है तो (1) रोगग्रस्त ऊतकों को काट निकालकर घाव पर 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं। जब यह सूख जाएगा तब गरम कोलतार लगाएं। (2) साल में चार बार प्रति ताड़ 100 मि.ली. पानी में 5 मि.ली.कैलिक्सिन घोलकर जड़ों द्वारा पिलाएं। (3) मानसून के बाद जैव खादों के साथ प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्राम नीम खली डालें (4) बारिश के समय उचित जलनिकासी व्यवस्था करें और गर्मी के महीनों में ताड़ों की सिंचाई करें। यदि कली सड़न पाया जाता है तो, रोगग्रस्त ऊतकों को निकालकर साफ करें और रोगग्रस्त भागों पर बोर्डो पेस्ट लगाएं। उपचारित भाग पर एक कवर डालें ताकि बारिश के पानी में यह पेस्ट बह न जाए। निकटस्थ पौधों पर भी एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें। जब मौसम ठीक रहता है तो पौधा संरक्षण उपाय अपनाएं। नर्सरी से खरपतवार निकाल दें।

## बिहार/मध्य प्रदेश/छत्तीसगढ़

**अप्रैल**

सिंचाई की आवृत्ति बढ़ाएं। दीमक के प्रकोप/ फफूँद रोगों की तलाश करें और नियंत्रणोपाय अपनाएं। मखरली मिट्टी में 1.2 मी. x 1.2 मी. x 1.2 मी. का तथा बलुई मिट्टी में 1 मी. x 1 मी. x 1मी. आकार का गड्ढ़ा खोदकर बीजपौधा लगाना शुरू करें।

**मई**

यदि आवश्यक हो तो सिंचाई के नालों को साफ करें और गर्मियों के महीनों में बागों में लगातार सिंचाई करते रहें। थाला सिंचाई करें तो मृदा की नमी धारण क्षमता के अनुसार 4-5 दिन में 200 लीटर पानी पर्याप्त है। 3 साल तक के छोटे ताड़ों को 3 दिन में कम से कम एक बार सिंचित करना चाहिए। छोटी पौदों को ठीक से छाया प्रदान करें। यदि पानी की दुर्लभता हो तो पानी बचाने के लिए ड्रप्स सिंचाई प्रणाली अपनाएं। खेत की जुताई और निराई करें। थालों से खरपतवार निकाल दें। नारियल के चारों ओर थाला खोदें और नारियल पत्ते, कयर गूदा आदि से पलेवा करें। नारियल शिखरों को साफ करें और पौधा संरक्षण रासायनिकों का प्रयोग करें। यदि कलिका विगलन पाया जाए तो रोगग्रस्त ऊतकों को काटकर निकाल दें और बोर्डो मिश्रण की लेई लगाएं।

**जून**

उचित जल निकासी की व्यवस्था करें। गड्ढ़ों में अधिक समय तक बारिश का पानी जमने न दें। पहले से ही तैयार किए और आधे भरे गड्ढ़ों में अच्छी गुणवत्ता की पौदों से प्रतिरोपाई करें। दीमकों के प्रकोप से बचने के लिए प्रतिरोपित पौदों के थालों को 20 से 25 दिनों के अंतराल में दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से शराबोर करें। रोपण से पहले गड्ढ़ों में 2 कि.ग्राम अस्थिचूर्ण या सिंगल सूपरफोस्फेट डालें। ताड़ के चारों और 2 मीटर की दूरी पर 15-20 सें.मी.गहरे थाले बनाएं और खाद एवं उर्वरक डालकर मिट्टी से ढक दें। इस महीने के दौरान उर्वरकों का प्रयोग करने से पहले प्रति ताड़ 30-50 कि.ग्राम अहाता खाद/कंपोस्ट थाले में डाल दें। सिंचित और अच्छी तरह रखरखाव वाले बागों में उर्वरक जैसे 275 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सूपर फोसफेट और 500 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डाल दें। बारानी खेती वाले बागों में उर्वरकों की पहली मात्रा (अनुशंसित मात्रा का एक तिहाई भाग) यानि प्रति वयस्क ताड़ 250 ग्राम यूरिया, 350 ग्राम सिंगल सूपरफोस्फेट और 400 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डाल दें और मिट्टी से ढक दें। पिछले वर्ष रोपित पौदों के मर जाने पर जो खाली जगह पड़ती है वहाँ पोलीबैग पौदों से रोपण करें। वैसे ही सभी दुर्बल और खराब पौदों को हटाकर अच्छी पौदों से पुनर्रोपण करें। कली सड़न की जाँच करें। यदि कली सड़न पायी जाती है तो रोगग्रस्त भागों को निकालकर वहाँ बोर्डो पेस्ट लगाएं। निकटस्थ ताड़ों/पौदों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें।

## कर्नाटक

**अप्रैल**

नहरें साफ़ करें और बंदों की मरम्मत करें। बारिश शुरू नहीं हुई है तो सिंचाई जारी रखें। मानसून शुरू होने के पहले बीजफल बोयें और अगर अपेक्षित है तो सिंचाई करें।

फफूँद रोगों की रोकथाम हेतु एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण या किसी अन्य ताम्र फफूँदनाशियों से रोगनिरोधी छिड़काव करें। पहले ही तैयार किए गड्ढ़ों के आधे भाग तक लकड़ी की राख, गोबर और ऊपरी मिट्टी से भरें और गड्ढ़ों में नया रोपण करें। अगर सूखे का दौर जारी रहता है तो पौदों की सिंचाई करें। प्रतिवर्ष प्रति ताड़ की दर पर उर्वरकों की पहली मात्रा, 50 कि.ग्रा. जैव खाद(अहाता खाद) और 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग करें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

**मई**

सिंचाई और चयनित मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करना जारी रखें। बीजफलों को बोने के लिए नर्सरी क्यारियाँ तैयार करना शुरू करें। नर्सरी ऐसी मृदा में होनी चाहिए जो अच्छी जल निकास वाली हल्की संरचना की हो और सिंचाई की भी सुविधा हो। ताड़ों की पौष्टिक स्थिति सुधारने के लिए पर्याप्त मात्रा में जैव खाद और रासायनिक उर्वरकों का संतुलित प्रयोग अनुशंसित है। जैव खाद (अहाता खाद) 50 कि.ग्रा. और नीम खली 5 कि.ग्रा. प्रति ताड़ प्रति वर्ष की दर पर डाल दें। यदि तापमान अधिक है तो पत्ता भक्षक इल्लियों के प्रकोप पर भी ध्यान दें और यदि पहले नहीं किया गया तो उचित उपाय अपनाएं ।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

**जून**

ताड़ के चारों ओर 2 मीटर व्यासार्ध में वृत्ताकार में थाला बनाएं। यदि गैंडा भृंग और लाल ताड़ घुन का प्रकोप पाया जाता है तो उचित नियंत्रण उपाय अपनाएं। बागों से खरपतवार निकाल दें। यदि पिछले महीने नहीं किया है तो 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें। इस महीने पौद की रोपाई की जा सकती है।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

## केरल / लक्षद्वीप

**अप्रैल**

पत्ता भक्षक इल्लियों की तलाश करें और इससे प्रकोपित पत्तों को काटकर जला दें। रोगग्रस्त ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोर्वोस या 0.05 प्रतिशत मैलाथियान से छिड़काव करें। पुराने ताड़ों पर कीडों की अवस्था के अनुसार परजीव्याभों को छोड़ दें। जब विविध अवस्थाओं के कीट हैं तो सभी अवस्थाओं के परजीव्याभों को एकसाथ छोड़ दें।

गैंडा भृंग एवं लाल ताड़ घुन के लिए पेड़ के शिखरों की जाँच करते रहें। गैंडा भृंग को अंकुश से बाहर निकाल कर मार डालें। लाल ताड़ घुन ग्रस्त पेड़ों को एक प्रतिशत गाढ़ा कार्बरिल कीप द्वारा दें। कली सड़न रोग की जाँच करें। अगर रोग-प्रकोप पाया जाता है तो रोगग्रस्त ऊतकों को काटकर निकाल दें तथा बोर्डो की लेई से उपचार करें और रोगनिरोधी उपाय के रूप में आसपास के पेड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

पेड़ की चारों ओर नीचे भाग से 2 मी. की दूरी पर थाला खोलें और अगर हरी खाद फसल मुख्य खेत में नहीं उगायी गयी है तो थाले में बोयें। मृदा में नमी संरक्षण के लिए छिलके गाड़ दें। पर्याप्त मात्रा में जैव खादों का तथा संतुलित मात्रा में अकार्बनिक उर्वरकों का प्रयोग करके ताड़ों की पौष्टिकता बढ़ाई जा सकती है। प्रति वर्ष प्रति पेड़ जैव खाद 50 कि.ग्रा. और नीम की खली 5 कि.ग्रा. दें।

**मई**

यदि सिंचाई की सुविधा हो तो नारियल पौदों की रोपाई करें। इससे मानसून शुरू होने से पहले ही जड़ें जम जाएंगी और बारिश का पूरा लाभ प्राप्त होगा। मानसून के जल जमाव को बरदाश्त करने में यह सहायक होगा। महीने के दौरान बीजफलों को एकत्रित करना जारी रखें। बलुई मिट्टी में स्थित ताड़ों को प्रति पेड़ आधा टन नदी की गाद या तालाब की गाद डाल दें। नारियल की नई रोपाई/अधोरोपाई के लिए गड्ढ़े खोद लें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

**जून**

ताड़ के चारों ओर थाला बनाएं और यदि मई में नहीं किया है तो उसमें प्रति ताड़ 25 कि.ग्राम की दर पर हरी खाद या हरे पत्ते या गोबर, कंपोस्ट आदि जैसी जैव खाद प्रति वयस्क ताड़ 50 कि.ग्राम की दर पर डालें और भागिक रूप से थालों को ढक दें। पौद लगाए गड्ढ़ों को साफ करें। ताड़ के शिखरों पर गैंडा भृंग, लाल ताड़ घुन आदि की तलाश करें और कलिका विगलन रोग की भी जांच करें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

## महाराष्ट्र/गोवा/गुजरात

**अप्रैल**

ज़मीन की एक या दो बार जुताई करें और खरपतवार निकालें। जंगली सनई, ढैंचा, सेसबनिया या कोलिंजी जैसी किसी एक हरी खाद फसल का बीज प्रति हेक्टर 28 से 34 कि. ग्रा. की दर पर बोयें। उर्वरक यदि पहले नहीं डाला गया है तो अब डालें।

**मई**

निम्नवर्ती क्षेत्रों में जहाँ नारियल बंदों पर रोपित हैं, बंदों के बीच के नाले साफ करें और नालों से निकाली गई ऊपरी मृदा बंदों के पार्श्व में डाल कर उन्हें मज़बूत कर दें। बीजफलों को एकत्र करना जारी रखें और एकत्रित बीजफलों को छाया में रखें। पौदों की रोपाई हेतु गड्ढ़ा खोदें।

**जून**

ताड़ों के बीच के गड्ढ़ों में भीतरी भाग ऊपर की तरफ करके छिलका गाड़ दें। फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें।

## ओडिशा

**अप्रैल**

पेड़ों की चारों ओर थाले बनाएं। दक्षिण पश्चिम मानसून शुरू होते ही हरी खाद और गोबर डालें। पहले हरी खाद डालें और बाद में गोबर डालकर मिट्टी से ढक दें। उर्वरकों की पहली मात्रा यानि प्रति पेड़ 250 ग्रा. यूरिया, 500 ग्रा. सिंगल सूपर फॉसफेट एवं 500 ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटैश डालें। उर्वरकों की उपर्युक्त मात्रा के एक चौथाई, आधा एवं तीन चौथाई भाग क्रमशः एक वर्ष, दो वर्ष एवं तीन

*पत्ता भक्षी इल्ली से प्रकोपित नारियल बाग*

वर्ष की आयुवाले पेड़ों को दें। मखरली मिट्टी में 1.2 मी. x 1.2 मी. x 1.2 मी. का तथा बलुई दोमट मिट्टी में 1मी. x 1मी. x 1मी.आकार का गड्ढ़ा खोदकर मुख्य खेतों में बीजपौधे लगाना शुरू करें। मुख्य खेत में पौदों की रोपाई शुरू करें।

**मई**

सिंचाई जारी रखें। खरपतवार निकाल दें और थालों में सूखे नारियल पत्ते और कयर गूदे से पलेवा करें। थालों में छिलका गाड़ने का कार्य भी किया जाए। यदि रोग-कीटों का प्रकोप पाया जाए तो यांत्रिक, रासायनिक और जैविक प्रणालियों को मिलाकर एकीकृत कीट प्रबंधन प्रणाली अपनाएं। पत्ता भक्षक इल्लियों के प्रकोप से बचाने के लिए बुरी तरह से रोगग्रस्त पत्तों को काटकर जला दें और निचले पत्तों के निम्न प्रतल पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवास का छिड़काव करें। ब्रैकोनिड जैसे परजीव्याभों को पेड़ों पर छोड़ दें। गैंडा भृंग के आक्रमण पर काबू पाने के लिए भृंग अंकुश से भृंगों को निकालकर मार दें। प्रति पेड़ 25 ग्राम सेविडोल (8जी) के साथ 250 ग्राम महीन रेत मिश्रित करके सबसे भीतर के 2-3 पर्ण कक्षों में भर दें। खाद के गड्ढ़ों को 0.01 प्रतिशत गाढ़ता में कार्बारिल (50 नम पाउडर) से उपचार करें। एरियोफिड बरुथी के प्रकोप से बचाने के लिए एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम (7.5 मि.ली.) 7.5 मि.ली. पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

**जून**

गैंडा भृंग के प्रकोप से बचने के लिए रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम चूर्णित मरोट्टि/नीम खली में तुल्य मात्रा में रेत मिलाकर भर दें या नैफ्थलीन गोली (12 ग्राम/ताड़) रख दें और उसे मिट्टी से ढक दें। गैंड़ा भृंगों को हुक से निकाल दें। सब्जियों और अन्य फसलों को खाद दें। फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें।

## तमिलनाडु/पुदुच्चेरी

**अप्रैल**

बागों की सिंचाई जारी रखें। ड्रप्स सिंचाई वाले बागों में प्रति दिन प्रति ताड़ 80 लीटर पानी या थालों की सिंचाई वाले बागों में पश्चिमी क्षेत्रों में 6 दिनों में एक बार और पूर्वी क्षेत्रों में 5 दिनों में एक बार प्रति ताड़ 500 लीटर पानी दें। कृष्ण शीर्ष इल्ली की तलाश करें। यदि कीट प्रकोप पाया जाए तो रोग ग्रस्त पत्तों और पत्तों के भागों को काटकर जलाएं। यदि कृष्णशीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो रोगग्रस्त ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवोस या मैलाथियॉन का छिड़काव करें और छिड़काव करने के 3 हफ्ते बाद लार्वा या प्यूपा परजीव्याभों को छोड़ दें। यदि धूसर/घातक पर्ण चित्ती रोग पाया जाए तो कोपर ऑक्सीक्लोराइड 0.25 प्रतिशत/कार्बेन्डाज़िम 0.1 प्रतिशत की दर पर छिड़काव दोहराया जाए या 100 मि.ली.पानी में 2 ग्राम कार्बेन्डाज़िम जड़ों के द्वारा पिलाया जाए। जड़ों द्वारा दवा पिलाने और फसल की अगली कटाई के बीच 45 दिनों का अंतराल होना चाहिए। नर्सरी में बीजफल की बुवाई शुरू करें। ताड़ों के थालों में सनई और ढैंचा जैसी हरी खाद फसल की बुवाई शुरू करें।

**मई**

ऐसे क्षेत्रों में सिंचाई जारी रखें जहाँ पर ग्रीष्मकालीन बारिश नहीं मिलती हो। मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए और मृदा की संरचना और बेहतर करने के लिए बलुई मिट्टी वाले बागों में तालाब की गाद डाल दें। बीजफलों को एकत्रित करते रहें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

**जून**

ताड़ों के चारों तरफ थाला बनाएं। बागों से खरपतवार निकाल दें। कलिका विगलन और अन्य फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें। यदि पिछले महीने नहीं डाला है तो उर्वरकों की पहली मात्रा यानि प्रति ताड़ 300 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सूपर फोस्फेट और 500 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डालें। ताड़ के शिखरों पर गैंडा भृंग की तलाश करके उसे बीटल हुक से निकाल दें और मार दें। गैंडा भृंग के प्रकोप से

बचने के लिए रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम चूर्णित मरोट्टि/नीम खली में तुल्य मात्रा में रेत मिलाकर भर दें या नैफ्थलीन गोली (12 ग्राम/ताड़) रख दें और उसे मिट्टी से ढक दें। इस महीने में मुख्य खेत में बीजपौधों की रोपाई की जा सकती है। तंजावुर मुर्झा रोग से प्रकोपित ताड़ों की तलाश करें और उचित प्रबंधन प्रणालियाँ अपनाएं।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

## त्रिपुरा

### अप्रैल

बागों से खरपतवार निकालें एवं पानी बाहर बह जाने की सुविधाएं बढ़ाएं। इस महीने पौदों का प्रतिरोपण किया जाना चाहिए। अगर बाग में कली सड़न रोग व्यापक रूप से पाया जाता है तो 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। गैंडा भृंग एवं लाल ताड़ घुन के प्रकोप से पेड़ों को बचाने हेतु पेड़ के भीतरी तीन-चार पत्तों के कक्षों में 25 ग्रा. सेविडॉल 8 जी 250 ग्रा. महीन रेत मिलाकर भरें। मृदा में उचित वातन हेतु बीच की जगहों की जुताई करें।

बीजफल बोने के लिए नर्सरी क्यारियाँ बनाएं। जहाँ पानी बहा देने की सुविधा नहीं होती है ऐसी भूमि में उठी क्यारियाँ बनाई जाएं। बीजफल कतारों पर बोए जाएं। दीमक के प्रकोप से बीजफलों को बचाने के लिए 20 से 25 दिनों के अंतर से दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से क्यारियों का उपचार करें।

### मई

बागों में निराई करें और जलनिकास के नालों की सफाई करें। खरपतवार निकालकर बागान की सफाई करें। जल निकासी की सुविधाएँ सुधारें। इस महीने के दौरान पौदों की प्रतिरोपाई शुरू की जाए। बीजफलों की बुवाई के लिए नर्सरी क्यारियाँ तैयार करें। जल-जमाव वाले क्षेत्रों में ऊँची क्यारियों का निर्माण करें। दीमकों के प्रकोप से फलों को बचाने के लिए 20-25 दिनों के अंतराल में दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से क्यारियों का उपचार करें। यदि कलिका विगलन रोग का प्रकोप है तो 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें, ताड़ों को गैंडा भृंग और लाल ताड़ घुन से बचाने के लिए 25 ग्राम सेविडोल 8 जी 250 ग्राम महीन रेत के साथ मिलाकर सबसे ऊपर के 3-4 पर्णकक्षों को भर दें। मृदा में अनुकूल वातन के लिए बीच की जगहों की जुताई करें।

### जून

ताड़ के चारों ओर के थालों से खरपतवार निकाल दें। यदि मई में कोई हरी खाद फसल उगाई गई है तो जुताई करके वह मिट्टी में मिलाएं। गैंडा भृंग के प्रकोप से बचने के लिए रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम चूर्णित मरोट्टि/नीम खली में तुल्य मात्रा में रेत मिलाकर भर दें या नैफ्थलीन गोली (12 ग्राम/ताड़) रख दें और उसे मिट्टी से ढक दें। वर्षाकाल का फायदा उठाते हुए एकत्रित किए गए बीजफल बिना देरी के क्यारियों में बोएं।

## पश्चिम बंगाल

### अप्रैल

मेंड़ बनाएं और नाले साफ़ करें। अगर मानसून शुरू नहीं हुआ है तो सिंचाई जारी रखें। मानसून शुरू होने के पहले बीजफल बोएं और अगर आवश्यक हो तो उनकी सिंचाई करें। अगर रोपाई के लिए गड्ढ़े नहीं खोदे गए हैं तो अब खोदें।

पेड़ के शिखरों पर गैंडा भृंग की तलाश करें और भृंग अंकुश से भृंगों को निकालकर मार दें। पेड़ के सबसे ऊपर के 3-4 पत्तों के कक्षों में 25 ग्राम सेविड़ोल 8जी, 250 ग्राम महीन रेत मिश्रण भरें। अदरक, हल्दी तथा अन्य मौसमी सब्जियों का अंतरासस्यन करें।

### मई

सिंचाई जारी रखें। नई रोपाई के लिए स्थानों का चयन करें और गड्ढ़ा खोदें। ताड़ों के शिखरों पर गैंडा भृंग की तलाश करें और भृंग अंकुश से भृंगों को निकालकर मारें। 25 ग्राम सेविडोल 8 जी 250 ग्राम महीन रेत के साथ मिलाकर सबसे ऊपर के 3-4 पर्णकक्षों को भर दें। अदरक, हल्दी और अन्य मौसमी सब्जियों की खेती शुरू करें।

### जून

प्रति ताड़ 25 कि.ग्राम की दर पर हरी खाद डालें। बागों से खरपतवार निकाल दें। मुख्य खेत में बीजपौधों का रोपण शुरू करें। फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें।

# नारियल उत्पाद दिल्ली वालों के दिलों पर कब्ज़ा करते हुए

*कृषि उन्नति मेले में बोर्ड का थीम पवलियन*

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्था कैंपस, पूसा में 19-21 मार्च 2016 तक तीन दिवसीय कृषि उन्नति मेला संपन्न हुआ। भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस राष्ट्रीय कृषि मेले का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में माननीय प्रधान मंत्रीजी ने देश की अर्थ व्यवस्था की वृद्धि और प्रगति के लिए ग्रामीण अर्थ व्यवस्था की भूमिका पर ज़ोर देते हुए कहा कि देश की अर्थ व्यवस्था कृषि क्षेत्र की उन्नति पर निर्भर है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुना बनाने में प्रयत्नरत है।

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह ने राष्ट्रीय कृषि मेले के मुख्य आकर्षणों पर प्रकाश डाला। माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री डॉ.संजीव कुमार बालियान और श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया भी इस शुभ अवसर पर उपस्थित थे।

भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने इस महा मेले का आयोजन किया था। देश भर में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् संस्थाओं, विविध सरकारी विभागों, गैर सरकारी संगठनों, निजी क्षेत्र और अन्य लाभभोगियों ने मेले में भाग लेकर किसान अनुकूल प्रौद्योगिकियों, नूतन खोजों और उत्पादों को प्रदर्शित किया। देश के 50,000 से भी अधिक किसानों ने मेले का दौरा किया और इससे लाभान्वित हुए।

नारियल विकास बोर्ड ने 'पोषण, स्वास्थ्य और खुशहाली के लिए नारियल' विषय पर मेले में भाग लिया था। कृषि उन्नति मेले में नारियल को खाद्य और पोषण सुरक्षा प्रदान करने वाली फसल के रूप में प्रस्तुत करने में बोर्ड पूरी तरह कामयाब हुए। नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं और उद्यमियों को अपने उत्पादों का प्रदर्शन और बिक्री करने के लिए 11 स्टॉल अलग से स्थापित किए गए। तकरीबन 25 नारियल

*माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया बोर्ड के स्टाल में*

उत्पादक कंपनियाँ और नारियल के संभावी उद्यमियों ने मेले में पूरे जोश और उत्साह के साथ भाग लेकर अपने व्यवसाय को और मज़बूत किया। मेक इन इंडिया का मुख्य विषय पवलियन कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने तैयार किया। मुख्य पवलियन में अन्य कृषि एवं बागवानी फसलों के बीच नारियल और नारियल उत्पादों ने खास ध्यान आकर्षित किया। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने थीम पवलियन का दौरा किया।

कृषि उन्नति मेला ने दिल्लीवालों को नारियल के खास और नूतन उत्पाद आज़ामाने का मौका दिया। फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस, नीरा कुकीज़ और नीरा इस कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण थे। देश के विविध भागों से आए कई युवकों ने नारियल उद्योग में कदम रखने की दिलचस्पी दिखाई। नारियल ज्यूस, नीरा और पैकटबंद डाब पानी के बारे में काफी पूछताछें प्राप्त हुईं। नारियल तेल के बारे में जानने के लिए भी लोगों ने इच्छा प्रकट की। बाल पर लगाने के लिए ही नहीं बल्कि खाना बनाने में उपयोग करने के लिए भी बहुत सारे लोगों ने आग्रह किया। नीरा कुकीज़ ने भी स्टाल में जमी भीड़ के दिलों को आकर्षित किया। कुकीज़ खाने के बाद लोगों ने जो राय प्रकट की थी वह काफी जोशवर्धक था। वे नीरा के बिक्री केंद्रों और इसकी उपलब्धता के बारे में काफी पूछताछें कीं।

*सचिव (कृषि) श्री एस. के. पट्नाइक भाप्रसे और संयुक्त सचिव (एमआईडीएच) डॉ. शकील पी. अहमद भाप्रसे बोर्ड के स्टाल में*

तेजस्विनी नारियल उत्पादक कंपनी, कण्णूर,केरल, पोल्लाची नारियल उत्पादक कंपनी, तमिलनाडु, कोषिक्कोट नारियल उत्पादक कंपनी, केरल, पालक्काट नारियल उत्पादक कंपनी, केरल, कल्पतरु नारियल उत्पादक कंपनी, कर्नाटक, अग्रिकोल्स नेचुरल फुड, पालक्काट, केरल, कुमार एंटरप्राइसेस, वलसाड, गुजरात, वामा ऑयल प्राइवट लिमिटेड, फलाडा अग्रो रिसर्च फाउंडेशन्स प्राइवट लिमिटेड, सूर्य शोभा योगिक फुड प्राइवट लिमिटेड, राबिया नारियल उत्पाद आदि कई कंपनियों ने नाविबो के साथ मेले में भाग लिया। नारियल के विनिर्माताओं के स्टाल में उन्होंने अपने उत्पादों का बिक्री सह प्रदर्शन लगाया जिनके लिए काफी सकारात्मक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई और बिक्री के लिए ले आए सारे उत्पाद दूसरे दिन ही खत्म हुए। नारियल उत्पादों की मांग यही दर्शाता है कि देश में नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों की काफी जबर्दस्त संभावनाएं हैं।

*बोर्ड के स्टाल में आए अन्य गणमान्य व्यक्ति*

नारियल उत्पाद विनिर्माताओं, उद्यमियों और कृषक उत्पादक संगठनों को अपनी विपणन योजनाएं इसप्रकार बनानी चाहिए कि देश भर में नारियल के उत्पाद उपलब्ध हो जाए। शहरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में नारियल उत्पादों के लिए खास बाज़ार उपलब्ध है जिसका पूरा का पूरा लाभ उठाना चाहिए। भारत में पोषण, स्वास्थ्य और कल्याण के स्रोत के रूप में नारियल उत्पादों की मांग कितनी बड़ी है इसकी गवाही नाविबो के स्टाल में आए दर्शक गण दे रहे थे।

नाविबो के स्टाल में बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे ने गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। नाविबो के स्टाल में माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री डॉ.संजीव कुमार बालियान और श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया ने दौरा किया। श्री एस.के.पट्नाइक भाप्रसे, सचिव (कृषि), डॉ.शकील पी. अहमद, संयुक्त सचिव (एमआईडीएच), डॉ.एस.के.मल्होत्रा, बागवानी आयुक्त और विविध विभागों के कई वरिष्ठ अधिकारियों ने देश भर में नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों को लोकप्रिय बनाने के लिए बोर्ड द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

# द विज़न जम्मू एवं कश्मीर 2016 प्रदर्शनी

नारियल विकास बोर्ड ने आर.आर.रिसोर्ट्स, ताल्बतिला, जम्मु में 22 से 24 जनवरी 2016 तक संपन्न दूसरी विज़न जम्मू एवं कश्मीर 2016 में भाग लिया। 22 जनवरी 2016 को त्रिदिवसीय मेले का उद्घाटन श्री शमशेर सिंह मन्हास, माननीय सांसद (राज्य सभा) ने किया। माननीय सांसद ने नाविबो स्टाल का दौरा किया और पैकटबंद डाब पानी और अन्य मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों का स्वाद आज़माया। उन्होंने नाविबो गतिविधियों और नारियल उत्पादों तथा जम्मू एवं कश्मीर में इसकी उपलब्धता पर बात की।

बोर्ड के स्टाल में विविध मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों और नारियल उत्पादों के स्वास्थ्य लाभ, नाविबो की गतिविधियाँ एवं उपलब्धियों को दर्शानेवाले पोस्टर

*श्री सुखनंदन कुमार चौधरी, विधायक बोर्ड के स्टाल में*

*नाविबो स्टाल का दृश्य*

*स्कूल के छात्र-छात्राएं नाविबो स्टाल में*

व चार्ट प्रदर्शित किए गए। नारियल के प्रति जागरूकता जागृत करने के लिए नारियल पर स्कूल विद्यार्थियों और स्कूल ग्रूप के बीच प्रश्न पूछे गए और विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

दूसरे दिन श्री सुखनंदन कुमार चौधरी, विधायक ने नाविबो स्टाल का दौरा किया और मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों के विपणन और उसके लाभों के बारे में पूछा। तीसरे दिन आम जनता और विभिन्न क्षेत्रों के स्कूलों से आए अनेक विद्यार्थियों ने मेले का दौरा किया। नाविबो को सर्वाधिक नारियल उत्पाद वितरित करने के लिए पुरस्कार प्राप्त हुआ। जम्मू कश्मीर के माननीय सूचना, शिक्षा और संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती प्रिया सेठी ने प्रदर्शनी का दौरा किया। उन्होंने नाविबो स्टाल का दौरा किया और इन उत्पादों की निर्यात संभावनाओं के बारे में पूछा।

समापन समारोह में माननीय मंत्री जी ने सहभागियों को स्मृति चिह्न वितरित किए।

# बोर्ड ने आहार 2016 में भाग लिया

नारियल विकास बोर्ड ने आईटीपीओ द्वारा आयोजित 31 वाँ आहार-अंतर्राष्ट्रीय फुड एंड होस्पिटैलिटी फेयर में भाग लिया। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से आयोजित इस मेले में व्यापार क्षेत्र के शीर्षस्थ निकायों का सक्रिय समर्थन भी रहा। माननीय केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री श्रीमती हरसिमरत कौर बादल ने 15 मार्च 2016 को प्रगति मैदान में मेले का उद्घाटन किया।

नाविबो ने नारियल से बने विविध खाद्य एवं पेय और स्वास्थ्यवर्धक उत्पादों के साथ मेले में भाग लिया। स्टाल में आए आगंतुकों को डाब पानी, वर्जिन नारियल तेल, डेसिक्केटड नारियल पाउडर, नारियल चिप्स, फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस, नीरा और नीरा शहद जैसे नारियल उत्पादों के पौष्टिक मूल्य और स्वास्थ्य लाभों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। बोर्ड के स्टाल में सर्वश्री योगिक फुड्स, सर्वश्री प्योर ट्रॉपिक, सर्वश्री केराटेक, सर्वश्री तिरुकोची नारियल उत्पादक कंपनी और सर्वश्री एनजीओ प्रोडक्ट्स ने अपना प्रदर्शनी सह बिक्री केन्द्र खोले। नारियल के विभिन्न उत्पादों के लिए कई पूछताछें प्राप्त हुईं। व्यवसाय से जुड़े आगंतुकों ने इन उत्पादों की अंतर्राष्ट्रीय मांग और निर्यात संभावनाओं के बारे में जानकारियाँ हासिल कीं।

*बोर्ड के स्टाल में दर्शकगण*

आम जनता और व्यापारीगण नारियल के विविध उत्पादों की बहुविध उपयोगों के बारे में जानकर हैरान रहे। अधिकांश लोग दिल्ली के खुदरे बाज़ार में उपलब्ध पैकटबंद डाब पानी के बारे में ही जानते थे और वे नारियल चिप्स, वर्जिन नारियल तेल और नारियल के अन्य मूल्यवर्धित उत्पाद कहाँ उपलब्ध होंगे यह जानने के लिए उत्सुक थे। बोर्ड के प्रकाशनों के साथ साथ आगंतुकों को डेसिक्केटड नारियल, सिरका, दूध एवं दूध पाउडर आदि भी वितरित किए गए।

# किसान मेला

नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव ने रामकृष्ण मिशन, नारायणपुर द्वारा आयोजित एक दिवसीय प्रदर्शनी सह किसान मेले में भाग लिया। मुख्यातिथि श्री दिनेश कश्यप, सांसद, बस्तर निर्वाचन क्षेत्र, छत्तीसगढ़ ने प्रदर्शिनी का उद्घाटन किया और स्वामी व्याप्तानंद, अध्यक्ष, रामकृष्ण मिशन आश्रम, नारायणपुर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

किसान मेले में राज्य और केंद्र सरकार के कई विभागों ने नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में कार्यान्वित अपने कार्यक्रम और योजनाओं के साथ मेले में भाग लिया।

*बोर्ड के स्टाल का दृश्य*

मुख्यातिथि श्री दिनेश कश्यप, सांसद, बस्तर निर्वाचन क्षेत्र, छत्तीसगढ़ ने जिले में रोपण और सब्जी फसलें लगाने का आशय व्यक्त किया और उम्मीद जताई कि जिले के विभिन्न विभागों के प्राधिकारियों द्वारा इसके लिए आवश्यक निधि उपलब्ध कराएंगे। प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव के अधिकारियों ने वादा किया कि राज्य में कार्यान्वित योजनाओं के अधीन सभी संभव सहायता उपलब्ध कराएंगे।

श्री दिनेश कश्यप, सांसद ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया और नारियल से बने उत्पादों की सराहना की।

स्वामी व्याप्तानंद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि किसानों को नारियल, आम, लीची, पपीता, नींबू जैसे फसलों की लाभदायक खेती करने के लिए सक्रिय रूप से आगे बढ़ना चाहिए जिसके लिए संबंधित विभाग में सरकार की सब्सिडी पहले से ही उपलब्ध है।

# नारियल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, पित्तापल्ली, ओड़िशा ने नयागढ़ के बागवानी विभाग के सहयोग से 7 जनवरी 2016 को नयागढ़ जिले में नारियल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। श्री ई अरावष़ी, उप निदेशक, नाविबो, पित्तापल्ली ने सभा का स्वागत किया। नयागढ़ के डीडीएच श्री महेंद्रनाथ सारंगी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री जोगेन्द्र मोहापत्रा, एडीएच, नयागढ़, श्री सुभाषचंद्र पाँडा, सहायक बागवानी अधिकारी, श्री अमिताभ पांडा, विषय विशेषज्ञ (बागवानी), कृषि विज्ञान केंद्र तथा श्रीमती स्वाति स्वागतिका साहू, सहायक बागवानी अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

*प्रशिक्षण कार्यक्रम*

तकनीकी सत्र में डॉ. एस सी साहू, प्रोफसर एवं प्रभारी वैज्ञानिक, ताड़ों पर अखिल भारतीय फसल अनुसंधान परियोजना, ओड़िशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुबनेश्वर ने नारियल के विषय में मातृवृक्ष और बीजपौध के चयन, नर्सरी प्रबंधन, रोपण की वैज्ञानिक रीतियाँ, अंतर खेती क्रियाएं, एकीकृत पोषण प्रबंधन, एकीकृत कीट प्रबंधन तथा एकीकृत रोग प्रबंधन आदि पर व्याख्यान दिया।

श्री ई. अरावष़ी, उप निदेशक, नाविबो, राज्य केंद्र, पित्तापल्ली ने बोर्ड की विभिन्न योजनाएँ जैसेकि क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम, निदर्शन प्लोटों की स्थापना, जैव खाद इकाइयाँ, फ्रेंड्स ऑफ कोकोनट ट्री, नर्सरियों के लिए सहायता तथा नारियल प्रौद्यगिकी मिशन का संक्षिप्त विवरण दिया। इसके बाद किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ)-सीपीएस, सीपीएफ तथा सीपीसी पर परिचर्चा संपन्न हुई। कु.नीतु थोमस, तकनीकी अधिकारी, नाविबो ने नारियल में मूल्य वर्धन पर और वर्जिन नारियल तेल, चिप्स, शक्कर, डेसिक्केटड नारियल, नारियल दूध, कयर आधारित उत्पाद, छिलका आधारित उत्पाद आदि नारियल के विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पादों पर बात की। ज्यादातर किसान नारियल का उपयोग मात्र धार्मिक अनुष्ठानों के लिए कर रहे हैं, इसलिए नारियल के मूल्य वर्धन पर उन्होंने बड़ी दिलचस्पी दिखाई।

परिचर्चा सत्र में श्री ई अरावष़ी, उप निदेशक, नाविबो, राज्य केंद्र पित्तापल्ली ने सीपीएस के गठन, नारियल खेती आदि पर किसानों की शंकाएँ दूर कीं। कार्यक्रम ने किसानों को नारियल के वैज्ञानिक खेती पहलुओं, नारियल के मूल्यवर्धन और नाविबो की योजनाओं के बारे में जानकारियाँ हासिल करने का मौका प्रदान किया।

## सेवानिवृत्ति

श्री पी.काशिलिंगम 28 वर्ष बोर्ड की सेवा करने के बाद 31 मार्च, 2016 को नारियल विकास बोर्ड से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने जून 1988 में बोर्ड में सेवा प्रारंभ की थी।

# तिरुकोची नीरा प्रसंस्करण संयंत्र का उद्घाटन संपन्न

केरल सरकार के माननीय सिविल आपूर्ति मंत्री श्री अनूप जेकब ने 23 जनवरी 2016 को केरल के पांपाक्कुटा के ओणक्कूर में तिरुकोची नारियल उत्पादक कंपनी के नीरा प्रसंस्करण संयंत्र का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि नीरा प्रसंस्करण संयंत्र जैसी नवीन परियोजनाएँ नारियल किसानों के लिए बड़ी राहत प्रदान करती हैं। उन्होंने आगे जोड़ा कि नीरा स्वास्थ्यदायक लघु पेय है और भविष्य में इससे और अधिक रोज़गार के अवसर पैदा होंगे।

*श्री अनूप जेकब, सिविल आपूर्ति मंत्री, केरल सरकार तिरुकोची नारियल उत्पादक कंपनी के नीरा प्रसंस्करण संयंत्र का उद्घाटन करते हुए*

बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी के जोस भाप्रसे ने अपने विषयप्रवेश भाषण में कहा कि नारियल क्षेत्र के उद्धार का एकमात्र उपाय किसान उत्पादक संगठनों का सशक्तिकरण है। प्रत्येक नारियल उत्पादक कंपनी के कार्यनिष्पादन के अनुसार नारियल विकास बोर्ड ने पाँच कंपनियों को A+ ग्रेड प्रदान किया है और तिरुकोची कंपनी उनमें से एक है। माननीय विधायक श्री जोसफ वाष़क्कन ने कार्यालय समुच्चय का उद्घाटन किया तथा श्री माईकिल वेता शिरोमणि भाप्रसे, प्रबंध निदेशक, मार्केटफेड ने कंपनी के खोपरा ड्रायर का उद्घाटन किया। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती आशा सनल ने नारियल ज्यूस का लोकार्पण किया और श्री जोय पी उम्मन भाप्रसे, अध्यक्ष, केएफसी ने कंपनी के नीरा शहद का लोकार्पण किया। तिरुकोची कंपनी के अध्यक्ष श्री जोसफ बाबु ने बैठक की अध्यक्षता की।

तिरुकोची नीरा प्रसंस्करण संयंत्र का प्रारंभिक खर्च 3.35 करोड़ रुपए है और प्रतिदिन 8000 लीटर नीरा का प्रसंस्करण यहाँ किया जा सकता है। 200 मिली लीटर प्रति बोतल के हिसाब से 20,000 बोतल नीरा का उत्पादन यहाँ किया जा सकता है। कंपनी नीरा प्रसंस्करण के लिए नारियल विकास बोर्ड एवं स्कूल ऑफ कम्यूनिकेशन्स एंड मैनेजमेन्ट स्टडीस, कोची की प्रौद्योगिकी का उपयोग करती है। कंपनी नीरा शहद एवं नारियल ज्यूस जैसे मूल्य वर्धित उत्पाद भी बनाती है।

# पोल्लाची नारियल उत्पादक कंपनी ने ओर्गानिक नारियल तेल का लोकार्पण किया

पोल्लाची नारियल उत्पादक कंपनी ने 23 नवंबर 2015 को अपने ब्रैंड नाम में एक, आधा और पाव लीटर के PET बोतलों में शुद्ध ओर्गानिक नारियल तेल का लोकार्पण किया। कंपनी अपने सदस्यों से 2000 नारियल एकत्रित करके तुड़ाई के 30 दिनों बाद नारियलों का छिलका निकाल कर सूखे छिलके को एक रुपए की दर पर बेच रही है। कंपनी को 190.5 किलोग्राम शुद्ध नारियल तेल और 98.60 किलोग्राम नारियल तेल खली प्राप्त होती है।

ओर्गानिक नारियल के लिए कंपनी किसानों को बाज़ार दर से 13 प्रतिशत अधिक भुगतान करती है और एमआरपी से 10 प्रतिशत कम भाव में नारियल तेल की बिक्री करती है। फिलहाल उत्पाद की बिक्री पोल्लाची नारियल उत्पादक कंपनी के खुदरा बिक्री केंद्र से कर रही है और पोल्लाची और अन्नामल्लै क्षेत्रों के प्रमुख बिक्री केंद्रों के द्वारा बिक्री करने की योजना बना रही है। वितरक नेटवर्क के ज़रिए तमिलनाडु के सारे ओर्गानिक खुदरे बिक्री केंद्रों में विपणन की गुँजाइश पर विचार किया जा रहा है।

# असम अंतर्राष्ट्रीय अग्री-होर्टी शो 2016

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने 6 से 9 जनवरी 2016 को इंडियन चेंबर ऑफ कोमेर्स, असम कृषि विश्वविद्यालय तथा असम बागवानी समिति के सहयोग से असम सरकार के कृषि विभाग द्वारा कॉलेज ऑफ वेटेरिनरी साइन्स प्ले ग्राउंड, खानपारा में आयोजित तीसरा असम अंतर्राष्ट्रीय अग्री- होर्टी शो 2016 में भाग लिया। कृषि/ बागवानी विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, खाद्य प्रसंस्करण विभाग, निजी उद्यान विशेषज्ञ, पुष्पोत्पादक और स्वयं सहायता समूहों ने प्रदर्शनी में भाग लिया। कैनडा, बंग्लादेश, नेपाल, चाइना, दक्षिण अफ्रीका तथा म्यानमर आदि देशों ने भी मेले में भाग लिया।

*असम अंतर्राष्ट्रीय अग्री होर्टी शो 2016 में नाविबो स्टाल*

असम के माननीय मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई ने मेले का उद्घाटन किया। असम के माननीय कृषि मंत्री श्री रोकिबुल हुसैन, माननीय संसदीय कार्य सचिव श्री हेमंत तालूकदार, मुख्य सचिव वी. के. पिपेरसीनिया भाप्रसे, अपर मुख्य सचिव श्री वी. बी. प्यारेलाल भाप्रसे तथा असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहट के कुलपति डॉ के. एम. बुजर बरुआ इस अवसर पर उपस्थित थे।

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने विभिन्न किस्मों के परिपक्व नारियल, नारियल आधारित खाद्य उत्पाद तथा दस्तकारियाँ प्रदर्शित किए। नारियल पर लीफलेट एवं पुस्तिकाएँ किसानों को वितरित किए गए। नाविबो ने संगोष्ठी में भी भाग लिया और बोर्ड की योजनाओं के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय ने भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों में नारियल विकास के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में बताया। नारियल आधारित सुविधाजनक खाद्य सामग्रियों के प्रशिक्षणार्थियों ने नारियल आधारित अचार, स्क्वैश, नारियल पेठा, नारियल केंड़ी आदि बोर्ड के स्टाल में प्रदर्शित किए। असम के विभिन्न जिलों एवं उत्तर पूर्व के अन्य राज्यों से लगभग दो लाख लोग शो देखने के लिए आए।

# नारियल पोइंट में नीरा उत्पादों की बिक्री

उदुमलपेट, गुडीमंगलम तथा मडत्तुकुलम के नारियल किसानों ने हाल में एक कृषक समूह बनाए हैं जो जिले में नारियल के विविध मूल्यवर्धित उत्पादों की बिक्री हेतु एक कोकोनट पोइंट खोलने की कोशिश में लगे हैं।

कोकनट पोइंट के लिए उदुमलपेट में जगह मिल गई है। उदुमलपेट नारियल उत्पादक कंपनी के प्रसिडेंट श्री एस सेल्वाराज ने कहा कि कोकनट पोइंट स्थापित करने के लिए प्रारंभिक खर्च का आधा हिस्सा किसान कंसोर्शियम उठाएगा और बाकी रकम नारियल विकास बोर्ड से वित्तीय सहायता के रूप में प्राप्त हुई है।

कोकनट पोइंट में 'स्नेहालया' आम ब्रैंड नाम में साबुन, तेल और नारियल नीरा से बने नीरा शक्कर, शहद, बिस्कुट, गुड़ की बिक्री की जाएगी। हमारा लक्ष्य इस बिक्री केंद्र के द्वारा स्थानीय बाज़ार में जगह बनाना है। कंपनी नारियल के लिए अभी मध्यपूर्व देशों की मांग की पूर्ति कर रही है। अभी तक कंपनी ने 56 टन कच्चे नारियल का निर्यात किया है और उम्मीद की है कि और अधिक आर्डर प्राप्त होंगे।

# नारियल किसानों और लाभभोगियों की बैठक संपन्न

तमिलनाडु सरकार के तकनीकी शिक्षा निदेशालय, चेन्नई के सम्मेलन कक्ष में 8 फरवरी, 2016 को नारियल किसानों और लाभभोगियों की बैठक संपन्न हुई। पोल्लाची के माननीय सांसद श्री सी महेन्द्रन, दिल्ली में तमिलनाडु सरकार के विशेष प्रतिनिधि श्री एस. टी. के. जक्कय्यन, डॉ.शकील पी. अहमद भाप्रसे, संयुक्त सचिव (एमआईडीएच), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, श्रीमती अनुराधा वेमुरी, अपर आयुक्त (एमआईडीएच), भारत सरकार, श्री टी. के. जोस भाप्रसे, अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, डॉ. एस विजयकुमार भाप्रसे, कृषि उत्पादन आयुक्त सह सचिव, तमिलनाडु सरकार, डॉ.एम राजेन्द्रन भाप्रसे, कृषि आयुक्त, तमिलनाडु सरकार, किसान उत्पादक कंपनियों के चेयरमेन और निदेशक मंडल तथा राज्य के कई प्रगतिशील किसानों ने बैठक में भाग लिया।

*नारियल किसानों और लाभभोगियों की बैठक का दृश्य*

अपने आमुख भाषण में, डॉ. शकील पी. अहमद भाप्रसे, संयुक्त सचिव ने गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों की मांग को पूरा करने के लिए गुणवत्तायुक्त नारियल पौधों के उत्पादन की आवश्यकता पर बात की। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड की तरह नाविबो भी नर्सरी प्रत्यायन कर सकते हैं। बीजपौधों का त्वरित उत्पादन समय की माँग है अत: नारियल में ऊतक संवर्धन भी आवश्यक है। उन्होंने सूचित किया कि प्रतिष्ठित कृषि विश्वविद्यालय जैसेकि तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय अनुसंधान एवं विकास कार्य कर सकते हैं और इसके लिए वित्तीय सहायता कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय दे सकते हैं। बोर्ड एवं मंत्रालय इसके लिए एकसाथ कार्य कर सकते हैं।

श्री सी. महेंद्रन, माननीय सांसद, पोल्लाची तथा श्री एस. टी. के. जक्कय्यन, दिल्ली में तमिलनाडु सरकार के विशेष प्रतिनिधि ने अपने संबोधन में तमिलनाडु में पुनर्रोपण एवं पुनरुज्जीवन कार्यक्रम के कार्यान्वयन की आवश्यकता, राज्य को निदर्शन प्लोटों की स्थापना के लिए अतिरिक्त निधि का आबंटन, खोपरे के लिए न्यूनतम समर्थन भाव बढ़ाने और हर महीने तमिल में नारियल पत्रिका निकालने और बोर्ड का क्षेत्रीय कार्यालय कोयंबत्तूर को अंतरित करने पर ज़ोर दिया।

श्री टी के जोस भाप्रसे, अध्यक्ष, नाविबो ने नारियल के भाव में भारी घट-बढ़ तथा मूल्य वर्धन के लिए अपर्याप्त प्रसंस्करण, गुणवत्तायुक्त नारियल बीजपौधों का अपर्याप्त उत्पादन, कुछ क्षेत्रों में बारबार सूखा पड़ना, कुछ क्षेत्रों में तंजावूर मुर्झा रोग का प्रकोप, पारंपरिक क्षेत्रों में पुराने पेड़ों की अधिकता, तुड़ाई, पौधा संरक्षण, शिखर की सफाई आदि के लिए कुशल श्रमिकों की कमी, नारियल उत्पादकों की असंगठित स्थिति और बिचौलियों का हस्तक्षेप आदि समस्याओं के बारे में बात की जो नारियल क्षेत्र को सामना करना पड़ रहा है।

कार्यक्रम के भाग स्वरूप प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें तमिलनाडु के पोल्लाची सीपीसी, उदुमलपेट सीपीसी, मडत्तुक्कुलम सीपीसी, दिंडिगल सीपीसी, ईस्ट कोस्ट सीपीसी, तेनी सीपीसी, केरल से तिरुकोची सीपीसी, नारियल विकास बोर्ड और उद्यमियों ने भाग लिया। प्रदर्शनी में परिशुद्ध नारियल तेल, वर्जिन नारियल तेल, पैकटबंद डाब पानी, फल रस मिश्रित डाब पानी, फ्लेवर्ड नारियल दूध, नीरा और नीरा आधारित उत्पाद, नारियल चिप्स, चंक्स, कुकीज़, नारियल गुड़, मसालेदार गुड़, नारियल तेल से बने नहाने का साबुन आदि प्रदर्शित किए गए थे।

# एसवीयूएम 2016

नारियल विकास बोर्ड ने आस्था चौकडी, राजकोट, गुजरात में 11 से 15 फरवरी 2016 तक सौराष्ट्र वेपार उद्योगमंडल द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला एसवीयूएम 2016 में भाग लिया। मेले का उद्घाटन माननीय परिवहन, जल आपूर्ति, श्रम तथा रोज़गार मंत्री श्री विजयभाई रूपिनि ने किया। इस अवसर पर सुडान के व्यापार मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री एल्साडिग मोहमद अलि हस्ब एलरसूल, सुडान के अंबासिडर महामहिम डॉ हसन, राजकोट नगरपाल श्री जयमिनभाई उपाध्याय, गैंबिया, मोरोक्को और टोगो के अंबासिडेर, राजकोट के जिलाधीश तथा राज्य और केंद्र सरकार के पदाधिकारी तथा विदेशी प्रतिनिधिगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय बी 2 बी भी आयोजित किया गया जिसमें बोर्ड के पदाधिकारियों ने एथियोपिया, टोगो, श्रीलंका, मोरोक्को गैंबिया आदि देशों के प्रतिनिधियों से विचार विमर्श किया। इच्छुक लोगों को नारियल उत्पाद विनिर्माताओं के ब्यौरे भी दे दिए गए।

*केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया बोर्ड के स्टाल में नीरा का स्वाद आज़माते हुए*

बोर्ड ने विभिन्न नारियल आधारित मूल्य वर्धित उत्पाद जैसेकि पैकटबंद डाब पानी, नारियल दूध पाउडर तथा नारियल दूध, नारियल चिप्स, डेसिक्केटड नारियल, वर्जिन नारियल तेल आदि प्रदर्शित किए। नाविबो के अलावा, कयर बोर्ड, एमएसएमई, गुजरात सरकार के पर्यटन कृषि उद्योग कोर्पेरेशन, पवर एवं रिन्यूअबिल एनर्जी विभाग आदि ने प्रदर्शनी में भाग लिया। बोर्ड के स्टाल में सर्वश्री सोमनाथ एवं जलराम एंटरप्राइसस, राजकोट ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए।

# अग्रि बिज़नस शो

नारियल विकास बोर्ड ने 26 से 28 फरवरी 2016 तक सियाल एक्सिबिशन सेंटर, कोची में छठे अग्री बिज़नस शो में भाग लिया। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री टी के जोस भाप्रसे, अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड ने श्री माईकिल वेता शिरोमणि भाप्रसे, प्रबंध निदेशक, मार्केटफेड, केरल सरकार तथा सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र से उद्योग के अन्य लाभभोगियों की समुपस्थिति में किया।

*नाविबो के स्टाल का दृश्य*

इस वर्ष का विषय खेत से रसोई तक था जो खाद्य उद्योग की संपूर्ण प्रक्रिया दर्शाता है। इसमें उद्योग के सभी स्तर-खेत जहाँ मूल उत्पाद बनता है, मध्य स्तर जहाँ उत्पादों को इकट्ठा किया जाता है तथा एक किस्म को दूसरे से अलग किया जाता है और अंतिम स्तर जिसमें पैकेजिंग और उपभोक्ता तक उत्पाद पहुँचाना शामिल है। इस प्रदर्शनी में एक छत के नीचे खाद्य, पेय और पैकेजिंग उद्योग की सबसे नवीनतम तथा आधुनिक प्रौद्योगिकीय प्रणालियाँ प्रदर्शित की गईं।

बोर्ड के स्टाल में विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों की बिक्री सह प्रदर्शन की व्यवस्था की गई थी। तिरुकोची नारियल उत्पादक कंपनी ने नीरा और नीरा आधारित उत्पादों का प्रदर्शन किया।

# तमिलनाडु में नारियल उद्यमियों की बैठक संपन्न

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई ने 3 फरवरी, 2016 को आरवीएस पद्मावति कॉलेज ऑफ होर्टिकल्चर, सेंपट्टी, दिंडिगल में नारियल उद्यमियों की बैठक आयोजित की। दिंडिगल, मदुराई, तेनि तथा तिरुप्पुर से लगभग 300 संभाव्य उद्यमियों ने इस बैठक में भाग लिया। मलेशिया और इंडोनेशिया से चार बिज़नस मेन सह खरीदारों ने भी बैठक में भाग लिया।

श्री लुम्हार ओबेद, निदेशक, नाविबो ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। तमिलनाडु सरकार के कृषि निदेशक डॉ. एम. राजेंद्रन भाप्रसे ने अपने आमुख भाषण में कहा कि नारियल उत्पादन एवं उत्पादकता में तमिलनाडु का प्रथम स्थान है और नारियल खेती के अधीन क्षेत्र में तमिलनाडु तीसरे स्थान पर है। उन्होंने जैव प्रणाली द्वारा नारियल की खेती करने पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि नारियल के अधीन क्षेत्र बढ़ाने के बजाय उत्पादकता बढ़ाना कृषक जनता के लिए अधिक फायदेमंद होगा। उन्होंने तमिलनाडु सरकार की सहायता से तिरुप्पुर जिले के धली में नाविबो द्वारा स्थापित प्रबीउ फार्म का भी उल्लेख किया।

डॉ.के.रामस्वामी, कुलपति, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबत्तूर ने अपने उद्घाटन भाषण में तमिलनाडु के दो नारियल अनुसंधान केंद्रों की तुरंत स्थापना की आवश्यकता पर ज़ोर दी। उन्होंने आगे नारियल बागों को पर्याप्त अनुरक्षण और वैज्ञानिक नारियल खेती अपनाने के लिए विश्वविद्यालय से किसानों को अनुसंधान मार्गदर्शन देने की ज़रूरत पर ज़ोर दी।

श्री टी. के. जोस भाप्रसे, अध्यक्ष, नाविबो ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि इंडोनेशिया, फिलिप्पाइन्स तथा श्रीलंका के अलावा भारत नारियल का सबसे बड़ा उत्पादक है। आधुनिक विज्ञान ने सिद्द किया है कि अन्य वनस्पति तेलों की तुलना में नारियल तेल स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। यह कोलस्ट्रोल कम करता है और युएसए में यह शिशु आहार का मुख्य संघटक है। उन्होंने आगे सूचित किया कि अमेरिका वाले पहले नारियल के बारे में गलत धारणाएँ रखते थे औरे अब वे नारियल के स्वास्थ्यपरक गुणों के बारे में जान चुके हैं। इसलिए वे नारियल उत्पादों का अधिकाधिक आयात कर रहे हैं। उनके अनुसार तमिलनाडु में कई उन्नत कृषि कालेज और प्रौद्योगिकियाँ उपलब्ध हैं किंतु मात्र आठ जिलों में ही नारियल प्रसंस्करण इकाइयाँ मौजूद हैं। राज्य में और अधिक प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने की गुंजाइश है। उन्होंने नारियल के उत्पादन और प्रसंस्करण के लिए सर्वोत्तम प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने के लिए उद्यमियों को इस क्षेत्र में आमंत्रित किया।

तकनीकी सत्र में सुश्री जगदीश प्रिया, नाविबो प्रौद्योगिकी संस्था, वाष़क्कुलम ने मूल्यवर्धन के लिए विभिन्न प्रौद्योगिकियों पर बात की। उन्होंने नाविबो के पास उपलब्ध आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ प्रस्तुत कीं और विभिन्न फ्लेवर के नारियल ज्यूस, नारियल चंक्स, नारियल कुक्कीज़, नारियल चिप्स, वर्जिन नारियल तेल आदि नारियल उत्पादों पर चर्चा की। उन्होंने सीएफटीआरआई, डीएफआरएल, सीआईटी, सीपीसी आदि के सहयोग से नाविबो द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों के बारे में अवगत कराया। डॉ. राधैश्री, असोसियेट प्रोफेसर, पीएसजी कॉलेज ऑफ आर्ट्स एन्ड साइंन्स, कोयंबत्तूर ने नारियल पानी, नारियल फ्लेक्स, नारियल शक्कर, नारियल एमिनोस, नारियल दूध, नारियल योगर्ट, नरियल पानी सिरका तथा नारियल जैम तैयार करने के तरीकों पर प्रकाश डाला। डॉ.आर मुरुगेशन, निदेशक, डीएबीडी, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय ने नारियल के मूल्य

*बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी. के. जोस भाप्रसे नारियल उत्पादों के स्टाल में*

वर्धित उत्पाद और देशा विदेश के बाज़ारों में उनके मूल्य के बारे में बताया। श्रीमती टी. बालासुधाहरि, उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, चेन्नई ने नारियल प्रौद्योगिकी मिशन पर और नारियल में मूल्य वर्धन एवं प्रसंस्करण पर बात की। श्री के. एस. सेबास्टियन, सहायक निदेशक (विपणन), नारियल विकास बोर्ड, कोची ने मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों के बाज़ार मूल्य पर बात की। वित्तीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने विभिन्न वित्तीय योजनाओं पर बात की। विदेशी प्रतिनिधियों को उद्यमियों के साथ परिचर्चा करने केलिए भी एक सत्र चलाया गया।

कार्यक्रम के भाग स्वरूप एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई जिसमें तमिलनाडु की पोल्लाची सीपीसी, उदुमलपेट सीपीसी, मडत्तुक्कुलम सीपीसी तथा विनायका सीपीसी, केरल की पालक्काट सीपीसी, संभाव्य उद्यमियों, सीआरएस, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, अलियार मशीनरी सप्लायर्स तथा सीआईटी, नाविबो ने अपने उत्पाद एवं सेवाओं का प्रदर्शन किया। परिशुद्ध नारियल तेल, वर्जिन नारियल तेल, पैकटबंद डाब पानी, विभिन्न फल मिलाया गया डाब पानी, फ्लेवेर्ड नारियल दूध, नीरा और नीरा आधारित उत्पाद, नारियल चिप्स,चंक्स,कुक्कीज़, नारियल गुड़, मसाला गुड़, नारियल आधारित नहाने का साबुन भी मशीनरी के साथ प्रदर्शित किए गए।

# खुशहाली के लिए बागवानी विविधता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

ओड़िशा कृषि विश्वविद्यालय एवं प्रौद्योगिकी (ओयूएटी) की ओड़िशा बागवानी समिति ने 10 से 12 फरवरी 2016 तक एम एस स्वामिनाथन हॉल, ओयूएटी में खुशहाली के लिए बागवानी विविधता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। नारियल विकास बोर्ड के राज्य केन्द्र, ओडिशा ने राष्ट्रीय संगोष्ठी में और इस सिलसिले में आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव (डीएआरई) एवं महा निदेशक (आईसीएआर) ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। ओड़िशा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ एम. कार, डॉ एन. के. कृष्णकुमार, उप महा निदेशक (बागवानी), भा.कृ.अ.प, डॉ ए.के.सिंह, प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, नई दिल्ली तथा श्री एस. के. काले, मुख्य महा प्रबंधक, नबार्ड, भुबनेश्वर इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रदर्शनी में विभिन्न संस्थाओं की गतिविधियाँ, उत्पाद, जीवंत नमूने, विभिन्न कृषि एवं बागवानी

*नाविबो के स्टाल का दृश्य*

फसल, जैव उर्वरक, जैव संरोपक, जैव खेती तथा अन्य संगत प्रणालियाँ आदि प्रदर्शित किए गए।

बोर्ड ने नारियल ताड़ारोहण यंत्र, विभिन्न नारियल किस्मों के फल, वर्जिन नारियल तेल, वर्जिन नारियल तेल कैप्सूल, डेसिक्केटड नारियल, नारियल दूध, नारियल जैम, स्क्वेश, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर जैसे नारियल के विविध मूल्यवर्धित उत्पाद, दस्तकारियाँ, नारियल के विभिन्न पहलुओं, नारियल के उत्पाद, नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठन, बोर्ड की योजनाओं, गतिविधियों पर सूचनात्मक पोस्टर तथा बोर्ड के प्रकाशन प्रदर्शित किए।

श्री ई. अरावष़ी, उप निदेशक, नाविबो ने नाविबो योजनाओं, नारियल खेती, नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठन, प्रशिक्षण कार्यक्रम, नारियल का मूल्य वर्धन आदि के संबंध में किसानों की शंकाएँ दूर कीं। कार्यक्रम में हज़ारों से अधिक किसानों ने भाग लिया।

# नारियल प्रौद्योगिकी मिशन की 47 वीं परियोजना अनुमोदन समिति में 91.65 करोड़ रुपए की परियोजनाएँ मंजूर

नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी के जोस भाप्रसे की अध्यक्षता में 4 फरवरी 2016 को संपन्न परियोजना अनुमोदन समिति की 47 वीं बैठक में 13.09 करोड़ रुपए की सब्सिडी सहित कुल 91.65 करोड़ रुपए की 58 परियोजनाएँ मंजूर की गईं।

*परियोजना अनुमोदन समिति की बैठक का दृश्य*

उप संघटक प्रसंस्करण एवं उत्पाद विविधीकरण के अधीन प्रति दिन 23,000 लीटर नीरा प्रसंस्करण के लिए तीन परियोजनाएँ, प्रति दिन 5000 नारियल प्रसंस्करण के लिए फ्लेवेर्ड नारियल ज्यूस के लिए एक परियोजना, डेसिक्केटड नारियल पाउडर के लिए प्रतिदिन 3,80,000 फलों के प्रसंस्करण के लिए 13 परियोजनाएं, प्रति दिन 1,24,000 नारियल के प्रसंस्करण के लिए 6 वर्जिन नारियल तेल इकाइयाँ, प्रति दिन 5,000 लीटर की प्रसंस्करण क्षमता वाली नारियल पानी परिरक्षण और पैकेजिंग इकाई, प्रति दिन 3,08,000 फलों के प्रसंस्करण के लिए 5 नारियल तेल विनिर्माण इकाइयाँ, प्रतिदिन 17 मेट्रिक टन सक्रियित कार्बन उत्पादन करने की क्षमता वाली तीन सक्रियित कार्बन इकाइयाँ, प्रतिदिन 2,24,000 नारियल प्रसंस्करण करने की क्षमता युक्त 23 खोपरा ड्रायर तथा प्रति वर्ष 14 लाख नारियल प्रसंस्करण करने की क्षमता वाली दो गोल खोपरा विनिर्माण इकाइयाँ मंजूर की गईं।

केरल में प्रति दिन कुल 23,000 लीटर नीरा उत्पादन की क्षमता वाली तीन नीरा प्रसंस्करण इकाइयाँ, प्रतिदिन 40,000 फलों के प्रसंस्करण की क्षमतायुक्त दो वर्जिन नारियल तेल इकाइयाँ, प्रति दिन 5000 नारियल प्रसंस्करण करने की क्षमता वाली एक फ्लेवर्ड नारियल ज्यूस इकाई, प्रति दिन 5000 लीटर क्षमता वाली एक नारियल पानी प्रसंस्करण और पैकेजिंग इकाई, प्रति दिन 10,000 नारियल प्रसंस्करण करने की क्षमतायुक्त एक डेसिक्केटड नारियल पाउडर विनिर्माण इकाई, प्रति दिन 3,08,000 नारियल की प्रसंस्करण क्षमता वाली 5 नारियल तेल विनिर्माण इकाई और प्रतिदिन 2,24,000 नारियल प्रसंस्करण करने की क्षमतायुक्त 23 खोपरा ड्रायर इकाइयाँ मंजूर की गईं।

कर्नाटक में 2,50,000 नारियल प्रसंस्करण करने की क्षमतायुक्त 10 डेसिक्केटड नारियल पाउडर प्रसंस्करण इकाइयाँ, प्रतिदिन 9000 नारियल प्रसंस्करण करने की क्षमतायुक्त एक वर्जिन नारियल तेल प्रसंस्करण इकाई मंजूर की गईं।

तमिलनाडु में प्रतिदिन 1,20,000 फलों के प्रसंस्करण करने की क्षमतायुक्त 2 डेसिक्केटड नारियल पाउडर प्रसंस्करण इकाइयाँ, प्रतिदिन 49,000 नारियल प्रसंस्करण करने की क्षमतायुक्त 2 वर्जिन नारियल तेल इकाइयाँ, 17 मेट्रिक टन सक्रियित कार्बन उत्पादन के लिए 3 सक्रियित कार्बन विनिर्माण इकाइयों के लिए मंजूरी दी गई।

आँध्र प्रदेश में प्रति दिन 26,000 नारियल की प्रसंस्करण क्षमतायुक्त एक वर्जिन नारियल तेल इकाई और प्रति वर्ष 14 लाख नारियल प्रसंस्करण की क्षमतायुक्त दो गोल खोपरा विनिर्माण इकाइयाँ मंजूर की गईं।

डॉ. वी. कृष्णकुमार, अध्यक्ष, प्रादेशिक केंद्र, सीपीसीआरआई, कायंकुलम, डॉ. पी विजयराज, वैज्ञानिक, सीएफटीआरआई, मैसूर, सुश्री उषा के, डीजीएम, नाबार्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम, डॉ. भीमराया, विपणन अधिकारी, डीएमआई, कोची, श्री वसंतकुमार पी, एजीएम, इंडियन ओवरसीस बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोची, श्री राजीव पी जॉर्ज, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो, कोची, श्री ज्ञानदेवन, उप निदेशक, नाविबो, कोची ने बैठक में भाग लिया। डॉ एम. अरविंदाक्षन, भूतपूर्व अध्यक्ष, नाविबो ने विशेषज्ञ सदस्य के रूप में बैठक में भाग लिया।

# नारियल उत्पादक कंपनी के पदधारियों के लिए प्रबंधन पर प्रशिक्षण आयोजित

नाविबो ने 16 से 19 मार्च 2016 तक राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्था (मैनेज), राजेन्द्र नगर, हैदराबाद में दो बैचों में आँध्र प्रदेश के नारियल उत्पादक कंपनियों के निदेशक मंडल के लिए प्रबंधन की समस्याओं पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। सभी छह नारियल उत्पादक कंपनियों के अध्यक्ष तथा निदेशक मंडल एवं बोर्ड के अधिकारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। श्रीमती वी.उषा राणी भाप्रसे, महा निदेशक, मैनेज ने 16 मार्च 2016 को प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

*श्रीमती वी. उषा राणी भाप्रसे उद्घाटन भाषण देती हुई*

अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कृषक उत्पादक कंपनियों के पदाधिकारियों के लिए प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए बोर्ड की सराहना की। उन्होंने नारियल उत्पादक कंपनियों की दैनिक गतिविधियों में व्यावसायिक कुशलता, विश्वसनीयता और पारदर्शिता लाने की ज़रूरत पर बात की। विविध परियोजनाएं खासतौर पर नीरा योजना के कार्यान्वयन के समय किसान उत्पादक संगठनों की त्रिस्तरीय प्रणाली की सामूहिक क्रिया अत्यंत ज़रूरी है। ये किसान उत्पादक संगठन नारियल खेती से अंततः बेहतर आय प्राप्त करने में आंध्र प्रदेश के किसानों की मदद करेंगे। उन्होंने नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठनों का समर्थन करने के लिए मैनेज के पूरे सहयोग का वादा किया।

उद्घाटन सत्र के बाद एक तकनीकी सत्र संपन्न हुआ जिसमें श्री एस.पी.पवन कुमार, सीईओ, लेगलिन एइड, चेन्नै ने उत्पादक कंपनी के संस्थापन में शामिल विविध चरण, कंपनी अधिनियम में उत्पादक कंपनियों के संचालन के कानूनी प्रावधान और उत्पादक कंपनियों के वित्त, लेखा एवं लेखापरीक्षा के बारे में प्रस्तुति दी। श्री ए.गोपाल कृष्णा, कैक्टस कंसल्टिंग, सिकंदराबाद, श्री कोटेश्वरा राव, कंसल्टंट, एनआईआरडी, डॉ.सुरेन्द्र सूद एवं मैनेज के विशेषज्ञों ने किसान उत्पादक कंपनी के प्रबंधन के लिए ज़रूरी विविध पहलुओं पर बात की।

## श्री टी. के. जोस भाप्रसे तथा डॉ. शकील पी. अहमद भाप्रसे डॉ. एम. एस. स्वामिनाथन से मिले

श्री टी के जोस भाप्रसे, अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड तथा डॉ. शकील पी. अहमद भाप्रसे, संयुक्त सचिव (एमआईडीएच) 9 फरवरी 2016 को विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम. एस. स्वामिनाथन से उनके चेन्नई स्थित कार्यालय में मिले तथा बोर्ड की गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त रूप में बताया। डॉ. स्वामिनाथन ने नीरा की संभावनाओं पर तथा तमिलनाडु में आधुनिक प्रौद्योगिकियों के द्वारा नीरा उतारने और नीरा प्रसंस्करण की आवश्यकता पर बात की। उन्होंने एफओसीटी और नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण कार्यक्रम के विशेष संदर्भ में बोर्ड की गतिविधियों की सराहना की। श्रीमती टी. बालासुधाहरी, उप निदेशक नाविबो भी टीम के साथ थी।

# नारियल पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

नारियल विकास बोर्ड ने 10 जनवरी 2016 को गुजरात के गिरसोमनाथ जिले के वेरावल में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य इस क्षेत्र के नारियल किसानों के बीच नारियल विकास बोर्ड की गतिविधियों और योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा करना था। इसके साथ निदर्शन प्लोटों की स्थापना योजना के अंतर्गत कृषि आदान सामग्रियों का वितरण भी संपन्न हुआ।

*श्री जशाभाई भानाभाई बारड, माननीय कृषि और नगर विमानन राज्य मंत्री, गुजरात उद्घाटन भाषण देते हुए*

*सभा का दृश्य*

श्रीसोमनाथ हॉटेल, वेरावल के बैंक्वेट हॉल में 10 जनवरी 2016 को पूर्वाह्न 10 बजे बैठक संपन्न हुई। गुजरात सरकार के माननीय कृषि और नगरविमानन राज्य मंत्री श्री जशाभाई भानाभाई बारड कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे और श्री राजेश भाई चुडासमा, माननीय सांसद (लोकसभा), जूनागढ़ ने समारोह की अध्यक्षता की। इसके अलावा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी समारोह में उपस्थित थे। कार्यक्रम में सैकड़ों किसानों ने भाग लिया।

डॉ.जी.आर सिंह, निदेशक, नाविबो, उत्तरी क्षेत्र, नई दिल्ली ने सभा का स्वागत किया और गुजरात में नाविबो की योजनाओं और गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। मुख्य अतिथि ने दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में मंत्रीजी ने राज्य के नारियल क्षेत्र के विकास के लिए बोर्ड के अधिकारियों द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। आगे गुजरात सरकार ने बोर्ड के प्रयासों के लिए पूरा समर्थन देने का वादा किया। उन्होंने नाविबो के सहयोग से काम करने और नाविबो की गतिविधियों के बारे में अनजान किसानों की मदद करने के लिए नारियल उत्पादक समिति, नवपारा की सराहना की।

श्री राजेश भाई चुडासमा, सांसद, लोकसभा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में गुजरात में नाविबो की गतिविधियों का उल्लेख करते हुए गुजरात के नारियल किसानों की आजीविका बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों के लिए नाविबो अधिकारियों की सराहना की। उन्होंने गुजरात में प्रबीउ फार्म स्थापित करने के लिए 40 हेक्टर भूमि आबंटित करने के लिए अपने पूरे सहयोग का वादा किया।

विचार-विमर्श के बाद मंत्रीजी ने निदर्शन प्लोटों की स्थापना कार्यक्रम (समुदाय आधारित प्रणाली) के तहत नारियल उत्पादक समिति, नवपारा द्वारा उपलब्ध करायी गई कृषि आदान सामग्रियों का वितरण किया। आगे मंत्रीजी ने लाभार्थियों को जैव खाद इकाई के सब्सिडी चेक भी वितरित किए। माननीय मंत्री और सांसद द्वारा संबंधित प्राधिकारियों को नारियल उत्पादक समिति पंजीकरण प्रमाणपत्र वितरित किए। श्री नरेंदरभाई परमार, सीपीएस अध्यक्ष, नवापारा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन कार्यक्रम समाप्त हुआ।

उद्घाटन सत्र के बाद किसानों के लिए तकनीकी सत्र भी आयोजित किया गया जिसमें जानेमाने प्रौद्योगिकी विशेषज्ञों ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए और किसानों के साथ परिचर्चाएं कीं। तकनीकी सत्र में डॉ.जी.आर सिंह, निदेशक, नाविबो, नई दिल्ली; श्री गाटिया डोडी, उप निदेशक (बागवानी), गिर सोमनाथ; श्री आर.एस.सेंगर, सहायक निदेशक, नाविबो, कोंडागांव; श्री पी.के मोरी, बागवानी अधिकारी, वेरावल; श्री अरुण पॉल, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, नई दिल्ली और श्री शरद एस आगलावे, क्षेत्र अधिकारी, नाविबो, ठाणे ने भाग लिया। बैठक अपराह्न 4.30 बजे समाप्त हुई। बैठक के प्रति भागीदारों के फीडबैक बहुत ही प्रभावी रहा और अधिकारियों से अनुरोध किया गया कि नारियल किसानों के लिए आगे भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करते रहें।

# एफओसीटी प्रशिक्षण आयोजित

## वेरावल, गुजरात

सीपीएस, नवपारा द्वारा 11 से 16 जनवरी 2016 तक गुजरात के दाभोर में एफओसीटी प्रशिक्षण आयोजित किया गया। नाविबो और बागवानी विभाग के अधिकारियों की उपस्थिति में नारियल उत्पादक समिति, नवपारा के अध्यक्ष श्री नरेंदरभाई परमार ने 11 जनवरी 2016 को कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में श्री अरुण पॉल, तकनीकी अधिकारी, नाविबो और श्री शरद एस आगलावे, क्षेत्र अधिकारी, नाविबो ने प्रशिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य के बारे में परिचय दिया। श्री पी.एम. मोरी, बागवानी अधिकारी, वेरावेल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के लाभ के बारे में बताया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 23 सहभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण के दौरान बोर्ड के पदधारियों तथा बागवानी/कृषि क्षेत्र से जुड़े अधिकारियों ने नारियल खेती के विविध पहलुओं पर तथा प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक तथा शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिए उपयुक्त कक्षाएं चलाईं।

*नारियल पेड़ पर मशीन के सहारे चढ़ने का प्रशिक्षण पा रहे प्रशिक्षणार्थी*

पाँचवें दिवस में 25 फीट तक ताड़ारोहण पर अभ्यास सत्र चलाया गया। सामाजिक सुरक्षा, बीमा, पेंशन और भविष्य निधि के बारे में भी कक्षाएं चलाई गईं। प्रशिक्षणार्थियों और मुख्य प्रशिक्षकों ने वेरावेल और सोमनाथ क्षेत्रों के आदर्श नारियल बागों का दौरा किया।

प्रशिक्षण के अंतिम दिवस में आयोजित ताड़ारोहण प्रतियोगिता में प्रशिक्षणार्थियों ने बडे उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। श्री नरेंदरभाई परमार, अध्यक्ष, सीपीएस, नवपारा एवं स्थानीय वार्ड सदस्य और श्री अरुण पॉल, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, नई दिल्ली ने समापन समारोह में भाग लिए। समारोह में एफओसीटी प्रशिक्षण प्रमाणपत्र, पुरस्कार और ताड़ारोहण यंत्र वितरित किए गए। अंत में प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण के बारे में अपनी अपनी राय प्रकट की।

## कोडिनार, गुजरात

सीपीएस, नवपारा द्वारा 8 से 13 मार्च 2016 तक गुजरात के कोडिनार में एफओसीटी प्रशिक्षण आयोजित किया गया। नाविबो और बागवानी विभाग के अधिकारियों की उपस्थिति में नारियल उत्पादक समिति, नवपारा के अध्यक्ष श्री नरेंदरभाई परमार ने 8 मार्च 2016 को कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में श्री एम.पी.अग्रवाल, बागवानी अधिकारी, राज्य बागवानी नर्सरी, कोडिनार ने प्रशिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य के बारे में परिचय दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 23 सहभागियों ने भाग लिया।

*सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरे किए प्रशिक्षणार्थी*

प्रशिक्षण के दौरान बोर्ड के पदधारियों तथा बागवानी/कृषि क्षेत्र से जुड़े अधिकारियों ने नारियल खेती के विविध पहलुओं पर तथा प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक तथा शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिए उपयुक्त कक्षाएं चलाईं। सामाजिक सुरक्षा, बीमा, पेंशन और भविष्य निधि के बारे में भी कक्षाएं चलाई गईं।

प्रशिक्षण के अंतिम दिवस में आयोजित ताड़ारोहण प्रतियोगिता में प्रशिक्षणार्थियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। श्री एम.पी अग्रवाल, बागवानी अधिकारी, श्री नरेंदरभाई परमार, सीपीएस नवपारा के अध्यक्ष, स्थानीय वार्ड सदस्य और श्री अरुण पॉल, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, नई दिल्ली ने समापन समारोह में भाग लिया। समारोह में एफओसीटी प्रशिक्षण प्रमाणपत्र, पुरस्कार और ताड़ारोहण यंत्र वितरित किए गए। अंत में प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण के बारे में अपनी अपनी राय प्रकट की। प्रशिक्षणार्थियों और सीपीएस नवपारा के अध्यक्ष ने निकटस्थ क्षेत्रों के आदर्श नारियल बागों का दौरा किया।

## बीजापुर, छत्तीसगढ़

नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म कोंडागाँव ने बागवानी नर्सरी, गौरबेडा, भैरमगढ़, बीजापुर में 08.02.2016 से 13.02.2016 तक छह दिवसीय एफओसीटी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। श्री आर.के तरम, बागवानी नर्सरी के गार्डन अधीक्षक, गौरबेडा, भैरमगढ़, जिला बीजापुर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 20 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया और सभी प्रशिक्षार्थी बीजापुर जिले के थे।

*प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन सत्र*

नियमित कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों ने बागवानी, मात्स्यिकी, कृषि, नारियल खेती प्रौद्योगिकी पर कक्षाएं चलाईं। इंदिरागाँधी कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने औषधीय और सुगंध पौधों पर विशेष बल देते हुए वानिकी पर सैद्धांतिक कक्षा चलाई। उसके बाद समन्वयकर्ताओं ने अभ्यास कक्षाएँ चलाईं।

बीजापुर जिले के जनपद पंचायत के उपाध्यक्ष श्री सहदेव नेगी समापन समारोह के मुख्यातिथि रहे। श्री बलदेव उर्षा, सदस्य, जनपद पंचायत, जिला बीजापुर कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे और श्री गोविंद साम्राट, सरपंच, मंगलनार ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम के मुख्यातिथि ने सहभागियों से बातचीत की और नारियल विकास बोर्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की। मुख्यातिथि ने खेती समुदाय को गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधे वितरित करने का प्रबंध करने के लिए बोर्ड से अनुरोध किया ताकि नारियल खेती लोकप्रिय बन जाएं। मुख्यातिथि ने प्रशिक्षार्थियों को ताड़ारोहण यंत्र और प्रमाणपत्र वितरित किए। श्री आर.एस सेंगर, सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव जिला ने सहभागियों से अनुरोध किया कि पंचायत में जहाँ कहीं नारियल पेड़ उपलब्ध हैं ताड़ारोहण का अभ्यास करें और नारियल की तुडाई में दूसरों की मदद करें। श्री एम.के नाथ, क्षेत्र अधिकारी, प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव की कृतज्ञता ज्ञापन के साथ समारोह समाप्त हुआ।

# बाज़ार समीक्षा

## दिसंबर 2015

**मुख्यांश**

□ दिसंबर 2015 के दौरान देश के सभी प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।

□ दिसंबर 2015 के दौरान नारियल तेल तथा खोपरे के अंतर्राष्ट्रीय भाव में पिछले महीने की तुलना में बढ़ाव का रुख रहा।

देश के प्रमुख बाज़ारों में दिसंबर 2015 के दौरान नारियल, खोपरा तथा नारियल तेल के भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा।

### नारियल तेल

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 10,600 रुपए पर खुला और 7 तारीख को घटकर 10,500 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर 900 रुपए के कुल घाटे पर 9,700 रुपए पर बंद हुआ। रिपोर्टाधीन महीने के दौरान आलप्पुष़ा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 9,900 रुपए पर खुला और बढ़कर 2 तारीख को 10,000 रुपए हुआ और फिर 8 तारीख तक स्थिर रहा। 9 तारीख को भाव घटकर 9,900 रुपए हुआ और उसके बाद मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 800 रुपए के घाटे पर 9,100 रुपए पर बंद हुआ। कोषि़क्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव जो प्रति क्विंटल 10,900 रुपए पर खुला था घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 1,100 रुपए के घाटे पर 9,800 रुपए पर बंद हुआ। कोची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10,131 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 9,850 रुपए और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 10,512 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र और पिछले वर्ष इसी महीने के औसतन भाव से 24 से 26 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 8540 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र और पिछले वर्ष इसी महीने से 30 प्रतिशत कम था।

### पेषण खोपरा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 6,950 रुपए पर खुलने के बाद घटकर 7 को 6,850 रुपए हुआ और कुछ दिनों के लिए स्थिर रहा। 12 तारीख को भाव घटकर 6,750 रुपए हुआ और उसके बाद घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 650 रुपए के कुल घाटे पर 6,300 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुष़ा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 6,950 रुपए पर खुला और सुधरकर 2 तारीख को 7,100 रुपए हुआ और कुछ दिन उसी भाव पर स्थिर रहा। 7 को भाव घटकर 7,050 रुपए हुआ और उसके बाद घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 500 रुपए के कुल घाटे पर 6,450 रुपए पर बंद हुआ। कोषि़क्कोट बाज़ार में आफिस पास खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 7,200 रुपए पर खुला और स्थायी घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 850 रुपए के कुल घाटे पर 6,350 रुपए पर बंद हुआ। मासिक औसतन भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 6,585 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में 6,879 रुपए तथा कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 6,829 रुपए रहा जो पिछले महीने से 3 से 5 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने से 26 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 6,421 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 26 प्रतिशत कम था। आन्ध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 6,069 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 20 प्रतिशत कम था।

### खाद्य खोपरा

कोषि़क्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13,635 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से नाममात्र कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 30 प्रतिशत कम था।

### गोल खोपरा

कोषि़क्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 12,048 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 32 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के तिप्तुर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 11,785 रुपए था। यह पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र

कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 18 प्रतिशत कम था। अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10,753 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र अधिक तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 23 प्रतिशत कम था।

### सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 9,277 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 15 प्रतिशत कम था।

### नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 11,135 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 22 प्रतिशत कम था। अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 9,994 रुपए रिकार्ड किया गया था जो पिछले महीने और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत कम था।

बैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार 15,115 रुपए था जो महीने की अपेक्षा 8 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक था। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 18,000 रुपए था जो पिछले महीने के बराबर और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 12 प्रतिशत अधिक था।

### डाब

मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10,000 रुपए था जो पिछले महीने के बराबर और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत कम था।

### अंतर्राष्ट्रीय भाव

फिलिप्पींस में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय मासिक औसतन भाव (सीआई एफ रोटरडैम) प्रति मेट्रिक टन 1,150 यूएस $ था जो पिछले महीने की तुलना में 8 प्रतिशत अधिक और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 739 यूएस $ था जो पिछले महीने की तुलना में 4 प्रतिशत अधिक और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा 9 प्रतिशत कम था।

फिलिप्पींस में दिसंबर 2015 में नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1,098 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1,103 यूएस $ था। दिसंबर 2015 के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमशः 552 यूएस $, 832 यूएस $ और 768 यूएस $ था।

## जनवरी 2016

**मुख्यांश**

- जनवरी 2016 के दौरान सभी प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा ।
- जनवरी 2016 के दौरान नारियल तेल और खोपरे के अंतर्राष्ट्रीय भाव में पिछले महीने की तुलना में बढ़ाव का रुख रहा।

देश के प्रमुख बाज़ारों में जनवरी 2016 के दौरान नारियल, खोपरा तथा नारियल तेल के भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा।

### नारियल तेल

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 9,600 रुपए पर खुला और 4 जनवरी को घटकर 9,500 रुपए तथा 6 को 8,800 रुपए हुआ । 7 तारीख को भाव बढ़कर 9,400 रुपए हुआ तथा 21 तक उसी भाव पर स्थिर रहा। उसके बाद घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 600 रुपए के कुल घाटे पर 9000 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुषा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 9,100 रुपए पर खुला और घटकर 4 तारीख को 9,000 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल कुल 700 रुपए के घाटे के साथ 8,400 रुपए पर बंद हुआ। कोषिक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 9,800 रुपए पर खुला और 4 तारीख को घटकर 9700 रुपए हुआ। उसके बाद घटाव का रुख दर्शाकर 800 रुपए के कुल घाटे पर 9000 रुपए पर बंद हुआ। कोची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9,296 रुपए, आलप्पुषा

बाज़ार में प्रति क्विंटल 8,779 रुपए तथा कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 9,372 रुपए था जो पिछले महीने से 8 से 11 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने से 34 से 37 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव 7,833 रुपए था जो पिछले महीने से 8 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने से 41 प्रतिशत कम था।

## पेषण खोपरा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 6,200 रुपए पर खुलने के बाद भाव घटकर 4 को 6,150 रुपए और 5 को 6,100 रुपए हुआ और 21 तक उसी भाव पर स्थिर रहा। उसके बाद 22 को भाव घटकर 6,000 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 400 रुपए के कुल घाटे पर 5,800 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुष़ा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 6,450 रुपए पर खुला और घटकर 4 तारीख को 6,350 रुपए हुआ और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 400 रुपए के कुल घाटे पर 6,050 रुपए पर बंद हुआ। कोषि़क्कोट बाज़ार में आफिस पास खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 6,350 रुपए पर खुलकर 2 को घटकर 6,300 रुपए हुआ और फिर घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 400 रुपए के कुल घाटे पर 5,950 रुपए पर बंद हुआ। मासिक औसतन भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 6,040 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में 6,244 रुपए तथा कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 6,158 रुपए रहा जो पिछले महीने से 8 से 10 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने से 34 से 38 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 5,774 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 10 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 39 प्रतिशत था। आन्ध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 5,688 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 37 प्रतिशत कम था।

## खाद्य खोपरा

कोषि़क्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10,832 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 21 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 37 प्रतिशत कम था।

## गोल खोपरा

कोषि़क्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9,630 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 20 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 39 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के तिप्तुर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10,015 रुपए था। यह पिछले महीने की अपेक्षा 15 प्रतिशत कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 31 प्रतिशत कम था। अरसिकेरे बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10,024 रुपए था जो पिछले महीने से 7 प्रतिशत कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 21 प्रतिशत कम था।

## सूखा नारियल

कोषि़क्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 8,602 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 25 प्रतिशत कम था।

## नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10,688 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 31 प्रतिशत कम था।

अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 9,770 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था।

बैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 13,420 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 11 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 16 प्रतिशत कम था। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन

भाव प्रति हज़ार फल 17,480 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत कम था।

### डाब

मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10,240 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक था।

**मुख्यांश**

- फरवरी 2016 के दौरान सभी प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपरा और नारियल तेल के भाव में अनियत रुख रहा ।
- फरवरी 2016 के दौरान नारियल तेल और खोपरा के अंतर्राष्ट्रीय भाव में पिछले महीने की अपेक्षा बढ़ाव का रुख रहा।

देश के प्रमुख बाज़ारों में फरवरी 2016 के दौरान नारियल, खोपरा तथा नारियल तेल के भाव में अनियत रुख रहा।

### नारियल तेल

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 9,000 रुपए पर खुला और 4 को घटकर 8,950 रुपए हुआ। भाव 11 को बढ़कर 9,100 रुपए होने के बाद 22 तक उसी भाव पर स्थिर रहा और तत्पश्चात बढ़ाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 200 रुपए के कुल लाभ पर 9,200 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुष़ा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 8,400 रुपए पर खुला और बढ़कर 15 तारीख को 8,600 रुपए हुआ और मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल कुल 300 रुपए के लाभ के साथ 8,700 रुपए पर बंद हुआ। कोषि़क्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 9,000 रुपए पर खुला और 3 तारीख को घटकर 8,900 रुपए तथा 8 को फिर से घटकर 8,800 रुपए हुआ और 20 तारीख तक स्थिर रहा। 23 तारीख को बढ़ाव का रुख दर्शाकर 8,900 रुपए हुआ और 100 रुपए के कुल लाभ पर 9,100 रुपए पर बंद हुआ। कोची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9,093 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 8,500 रुपए तथा कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 8,896 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र और पिछले वर्ष इसी महीने से 36 से 40 प्रतिशत कम था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव 7,607 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र और पिछले वर्ष इसी महीने से 42 प्रतिशत कम था।

### पेषण खोपरा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 5,800 रुपए रहा जो 10 फरवरी को घटकर 5,850 रुपए हुआ और उसके बाद बढ़कर 11 को 5,950 रुपए हुआ जो 21 तक स्थिर रहा। 21 को भाव बढ़कर 6,000 रुपए हुआ और प्रति क्विंटल 200 रुपए के कुल लाभ पर उसी भाव पर बंद हुआ। आलप्पुष़ा बाज़ार में राशि खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 6,050 रुपए पर खुला और 12 तारीख को बढ़कर 6,100 रुपए हुआ। उसके बाद मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 100 रुपए के कुल लाभ पर 6,150 रुपए पर बंद हुआ। कोषि़क्कोट बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 5,950 रुपए पर खुलकर 15 को बढ़कर 5,800 रुपए हुआ और

### अंतर्राष्ट्रीय भाव

फिलिप्पींस में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय मासिक औसतन भाव (सीआई एफ रोटरडैम ) प्रति मेट्रिक टन 1,155 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत कम था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 763 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था।

फिलिप्पींस में जनवरी 2016 में नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1,108 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1,106 यूएस $ था। जनवरी 2016 के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल (आरबीडी) और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमश: 539 यूएस $, 910 यूएस $ और 733 यूएस $ था।

## फरवरी 2016

मिश्रित रुख दर्शाकर 5,950 रुपए पर बंद हुआ। मासिक औसतन भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 5,926 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 6,069 रुपए तथा कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 5,894 रुपए रहा जो पिछले महीने से नाममात्र कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने से 37 से 40 प्रतिशत कम था।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 5,304 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 8 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 43 प्रतिशत कम था।

## खाद्य खोपरा

कोषि़क्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10,394 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से नाममात्र तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 32 प्रतिशत कम था।

## गोल खोपरा

कोषि़क्कोट बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9,296 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 32 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के तिप्तुर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9,707 रुपए था। यह पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 28 प्रतिशत कम था। अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9,767रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 21 प्रतिशत कम था।

## सूखा नारियल

कोषि़क्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 8,200 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत और पिछले साल इसी महीने की अपेक्षा 29 प्रतिशत कम था।

## नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10,000 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 37 प्रतिशत कम था।

कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 9,426 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 31 प्रतिशत कम था।

बैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 12,700 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 20 प्रतिशत कम था। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 14,720 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 16 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 18 प्रतिशत कम था।

## डाब

मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10,520 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 8 प्रतिशत कम था।

## अंतर्राष्ट्रीय भाव

फिलिप्पींस में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय मासिक औसतन भाव (सीआई एफ रोटरडैम) प्रति मेट्रिक टन 1,208 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा 10 प्रतिशत अधिक था। खोपरे का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 795 यूएस $ था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत अधिक और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र कम था।

फिलिप्पींस में फरवरी 2016 में नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1,158 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1,178 यूएस $ था। फरवरी 2016 के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल (आरबीडी) और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमश: 569 यूएस $, 863 यूएस $ और 756 यूएस $ था।

# बाज़ार भाव

## दिसंबर 2016

| तारीख | नारियल तेल | | | | पेषण खोपरा | | | | | खाद्य खोपरा | गोल खोपरा | | | सूखा नारियल | नारियल | आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (रु. / क्वि.) | | | | | | | | | | | | | (रु./1000 फल) | | | | | |
| | कोची | आलप्पुषा | कोषि क्कोट | कंगयम | कोची (एफएक्यू) | आलप्पुषा (राशि खोपरा) | कोषि क्कोट | कंगयम | अंबाजिपेटा | कोषि क्कोट | कोषि क्कोट | तिप्तूर | बैंगलूर | अरसिकेरे | कोषि क्कोट | नेडुमंगाड | अरसिकेरे | बैंगलूर | मैंगलूर (ग्रेड-1) |
| 06.12.15 | 10600 | 9980 | 10880 | 8953 | 6950 | 7070 | 7190 | 6830 | 6500 | 14160 | 12600 | 12050 | 14000 | 10945 | 9620 | 11500 | 11080 | 16500 | 18000 |
| 13.12.15 | 10467 | 9933 | 10800 | 8800 | 6833 | 7025 | 7067 | 6683 | 6367 | 13417 | 11783 | 11667 | 14000 | 10261 | 9400 | 11167 | 10667 | 16500 | 18000 |
| 20.12.15 | 10050 | 9583 | 10633 | 8478 | 6508 | 6842 | 6875 | 6383 | 5967 | 13517 | 11933 | 12000 | 14000 | 10498 | 9267 | 11000 | 10242 | 15000 | 18000 |
| 27.12.15 | 9720 | 10000 | 10160 | 8146 | 6261 | 6750 | 6510 | 6000 | 5700 | 13620 | 12040 | 11844 | 14000 | 11158 | 9020 | 11000 | 9400 | 13500 | 18000 |
| 31.12.15 | 9675 | 9775 | 9875 | 8217 | 6275 | 6638 | 6350 | 6038 | 5700 | 13500 | 11938 | 11303 | 14000 | 11128 | 9000 | 11000 | 8000 | 13500 | 18000 |
| **औसत** | 10131 | 9850 | 10512 | 8540 | 6585 | 6879 | 6829 | 6412 | 6069 | 13635 | 12048 | 11785 | 14000 | 10753 | 9277 | 11135 | 9994 | 15115 | 18000 |

## जनवरी 2016

| तारीख | नारियल तेल | | | | पेषण खोपरा | | | | | खाद्य खोपरा | गोल खोपरा | | | सूखा नारियल | नारियल | आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (रु. / क्वि.) | | | | | | | | | | | | | (रु./1000 फल) | | | | | |
| | कोची | आलप्पुषा | कोषि क्कोट | कंगयम | कोची (एफएक्यू) | आलप्पुषा (राशि खोपरा) | कोषि क्कोट | कंगयम | अंबाजिपेटा | कोषि क्कोट | कोषि क्कोट | तिप्तूर | बैंगलूर | अरसिकेरे | कोषि क्कोट | नेडुमंगाड | अरसिकेरे | बैंगलूर | मैंगलूर (ग्रेड-1) |
| 03.01.16 | 9600 | 9100 | 9750 | 8067 | 6200 | 6450 | 6325 | 5950 | 5800 | 13050 | 11500 | 11100 | 14000 | 11300 | 9000 | 11000 | 13000 | 13500 | 18000 |
| 10.01.16 | 9317 | 8917 | 9450 | 7789 | 6108 | 6308 | 6192 | 5783 | 5800 | 11750 | 10450 | 10233 | 14000 | 10400 | 8950 | 10917 | 8667 | 13500 | 18000 |
| 17.01.16 | 9400 | 8800 | 9400 | 7967 | 6100 | 6250 | 6208 | 5800 | 5933 | 11067 | 9850 | 10433 | 14000 | 10267 | 8733 | 11000 | 9900 | 13500 | 18000 |
| 24.01.16 | 9350 | 8767 | 9383 | 7967 | 6067 | 6217 | 6158 | 5875 | 5533 | 9983 | 8908 | 9600 | 14000 | 9750 | 8333 | 10500 | 10200 | 13500 | 17000 |
| 31.01.16 | 9020 | 8400 | 9080 | 7473 | 5820 | 6075 | 5990 | 5540 | 5400 | 9580 | 8500 | 9313 | 14000 | 9100 | 8190 | 10000 | 9130 | 13100 | 16600 |
| **औसत** | 9296 | 8779 | 9372 | 7833 | 6040 | 6244 | 6158 | 5774 | 5688 | 10832 | 9630 | 10015 | 14000 | 10024 | 8602 | 10688 | 9770 | 13420 | 17480 |

## फरवरी 2016

| तारीख | नारियल तेल | | | | पेषण खोपरा | | | | | खाद्य खोपरा | गोल खोपरा | | | सूखा नारियल | नारियल | आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | (रु. / क्वि.) | | | | | | | | | | | | | (रु./1000 फल) | | | | | |
| | कोची | आलप्पुषा | कोषि क्कोट | कंगयम | कोची (एफएक्यू) | आलप्पुषा (राशि खोपरा) | कोषि क्कोट | कंगयम | अंबाजिपेटा | कोषि क्कोट | कोषि क्कोट | तिप्तूर | बैंगलूर | अरसिकेरे | कोषि क्कोट | नेडुमंगाड | अरसिकेरे | बैंगलूर | मैंगलूर |
| 07.02.16 | 8975 | 8400 | 8933 | 7311 | 5800 | 6050 | 5917 | 5267 | - | 10483 | 9308 | 9735 | 11000 | 9967 | 8333 | 10000 | 9375 | 13000 | 15000 |
| 14.02.16 | 9033 | 8433 | 8800 | 7522 | 5883 | 6067 | 5850 | 5500 | - | 10733 | 9633 | 9658 | 11000 | 9800 | 8450 | 10000 | 9667 | 13000 | 14000 |
| 21.02.16 | 9100 | 8567 | 8800 | 7645 | 5950 | 6083 | 5800 | 5500 | - | 10330 | 9290 | 9650 | 12333 | 9600 | 8300 | 10000 | 9317 | 13000 | 14833 |
| 28.02.16 | 9250 | 8600 | 9000 | 7967 | 6067 | 6075 | 5983 | 5000 | - | 10083 | 9033 | 9817 | 13000 | 9713 | 7800 | 10000 | 9750 | 12000 | 15000 |
| **औसत** | 9093 | 8500 | 8896 | 7607 | 5926 | 6069 | 5894 | 5304 | - | 10394 | 9296 | 9707 | 11880 | 9767 | 8200 | 10000 | 9426 | 12700 | 14720 |

***स्रोत***

**कोची : कोचिन तेल व्यापारी संघ व वाणिज्य मंडल, कोची-2**
**कोषिक्कोट : 'मातृभूमि'**
**आलप्पुषा : 'मलयाला मनोरमा'**
**अरसिकेरे : ए पी एम सी, अरसिकेरे**
**कोषिक्कोट बाज़ार में 'ऑफीस पास' खोपरे का और आलप्पुषा बाज़ार में 'राशि' खोपरे का बताया गया भाव**
**सौ.न. : सौदा नहीं**

# नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

## मुख्यालय

**श्री टी.के. जोस भाप्रसे**
अध्यक्ष : 0484 2375216
**श्री राजीव पी. जोर्ज**
मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999
**डॉ. ए. के. नन्दी**
सचिव : 2377737

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
पो.बो.सं. 1021, केरा भवन
कोची - 682 011, केरल, भारत

कार्यालय पीएबीएक्सः 2376265, 2376553, 2377266, 2377267
ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेइल : kochi.cdb@gov.in
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

## क्षेत्रीय कार्यालय

### कर्नाटक
**डॉ.टी.आई.मैथ्युकुट्टी**
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु, बन्नेरघट्टा रोड
बंगलुरु - 560076. दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेइल : coconut_dev@dataone.in
cdbroblr@gmail.com

### असम
**श्री लुम्हार ओबेद**
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड
उत्तर पूर्वी राज्य कार्यालय/प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छठा तल), बेलटोला रोड,
लास्ट गेट, दिसपुर, गुवाहटी - 781 006
दू.भा. : (0361) 2220632, फैक्स : 0361-2229794
ई-मेइल : cdbassam@gmail.com

### तमिलनाडु
**श्रीमती टी. बालासुधाहरि**
उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
प्लॉट सं 14/20, 25 वीं गली
तिल्लै गंगा नगर, नंगानल्लूर, चेन्नई-600 061
दूर भाष 044- 22673685
फैक्स 044- 22673684
ई-मेइल : cdbroc@gmail.com

### अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
उप निदेशक
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेइल : cdban@rediffmail.com

## राज्य केन्द्र

### बिहार
**श्री राजीव भूषण प्रसाद**
उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
राज्य केन्द्र, 160-न्यू पाटलीपुत्र कॉलोनी,
पटना - 800013, बिहार
टेलिफोन: 0612 2272742
ई मेलः cdbpatna@gmail.com

### महाराष्ट्र
**श्री ई अरावषी**
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
रोड नं - 16, ज़ेड़ लेइन, वाग्ले एस्टेट,
ठाणे, महाराष्ट्र - 400 604
दू.भा. : (022) 25834566
ई-मेइल : cdbthane@gmail.com

### तेलंगाना
**श्री जयनाथ आर.**
सहायक निदेशक, राज्य केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड
प्लॉट सं. 49, डॉ. सुब्बा राव कॉलॉनी
पिकेट, सिकंदराबाद - 500 026
टेलीफैक्स : (040) 27807303
ई-मेइल : cdbhyd@gmail.com

### ओड़िशा
**श्री एम. के. सिंह**
सहायक निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055
दू.भा. : 06755-211505
ई-मेइल : cdborissa@gmail.com

### पश्चिम बंगाल
**श्री खोकन देबनाथ**
उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड
बी.जे. - 108 - सेक्टर - 11
साल्ट लेक, कोलकात्ता - 700 091
दू.भा. : (033) 23599674
फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेइल : cdbkolkata@gmail.com

## बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, नई दिल्ली

**डॉ. जी.आर. सिंह**
निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,120,
हरगोबिन्द एनक्लेव,नई दिल्ली - 110 092,
दू.भा.: 011-22377805,
ई-मेइल : cdbmdic@sify.com; dbmdic@gmail.com

## क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्केट
(वॅर्ल्ड मार्केट) आनयरा पी.ओ.
तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006
ई-मेइल : cdbtvm@yahoo.co.in

## सी आई टी, आलुवा

प्रक्रमण इंजीनियर
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र, कीनपुरम,
दक्षिण वाष़क्कुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाषः0484 2679680,
ई-मेइल : citaluva@gmail.com, cdbtdc@gmail.com

## प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

### आंध्र प्रदेश
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688,
तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला),
आंध्र प्रदेश - 534 452, दू.भा. : (08812) 212359,
ई-मेइल : dspfmvgda@gmail.com

### असम
फार्म प्रबंधक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगैगांव,
असम - 783 384, टेलि. फैक्स : (03664) 210025
ई-मेइल : cdbdspabhayapuri@gmail.com

### बिहार
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक),
मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128. दू.भा. : (06476) 283015.
ई-मेइल : dspfms@gmail.com

### कर्नाटक
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक),
मंड्या जिला, कर्नाटक-571403 दू.भा.:(08232) 234059
ई-मेइल:dspfarmmandya@gmail.com

### केरल
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693
दू.भा. : (0485) 2554240,
ई-मेइल : cdbnrlm@gmail.com

### छत्तीसगढ़
फार्म प्रबंधक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला
दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443
ई-मेइल : cdbkgn1987@gmail.com

### ओड़िशा
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पित्तापल्ली,
कुमरबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055,
दू.भा. : (06755) 212505, (06755) 320287
ई-मेइल : cdborissa@gmail.com

### महाराष्ट्र
फार्म प्रबंधक
नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, पालघर,
दापोली गाँव, सतपति डाक, पालघर-401405,
महाराष्ट्र, दू.भा.: 02525 256090
ई-मेइल : dspfarmpalghar@gmail.com

### तमिलनाडु
फार्म प्रबंधक, प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड
धली, तिरुमूर्ति नगर डाक,
उदुमलपेट,तमिलनाडु-642112, दू.भा.:(0425) 2290289,
ई-मेइलः dspfarmdhali@gmail.com

### त्रिपुरा
फार्म प्रबंधक, प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड,
हिच्चाचेरा, सकबारी डाक,
जोलाइबारी(मार्ग), सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा
त्रिपुरा-799141
ईमेइल- dspfarmhichacharatripura@gmail.com

Regd/7-19817/89
भाग XXVI संख्या : 4

# भारतीय नारियल पत्रिका

जनवरी - मार्च 2016
मूल्य : 10 रु.

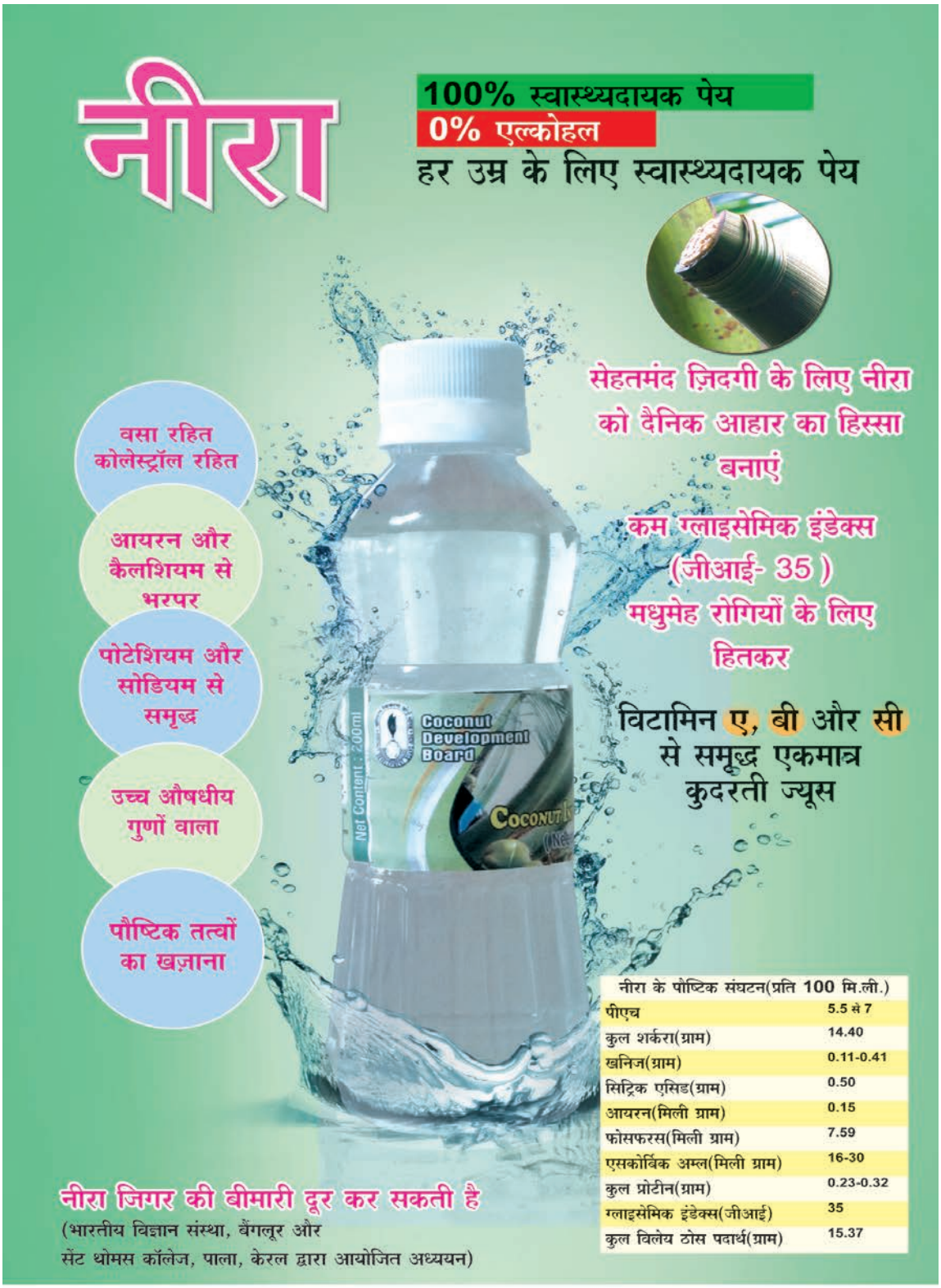


अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

**नारियल विकास बोर्ड** (कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय), भारत सरकार, केरा भवन, एसआरवीएचएस रोड, कोची-682011, भारत

ई मेल: kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com, वेब: www.coconutboard.nic.in दूरभाष: 0484-2376265, 2377266, 2377267